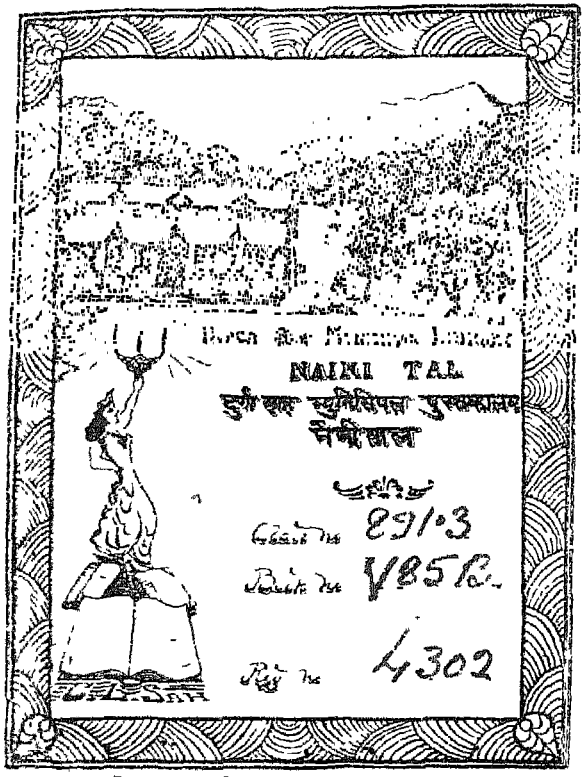

Durga Sah Municipal Library
NAINI TAL
दुर्गा साह म्युनिसिपल पुस्तकालय
नैनीताल
Class No 891.3
Book No V85R
Receipt No 4302

बकवास

शौक़त थानवी

बकवास

(चरित्र-प्रधान उपन्यास)

अनुवादक

वीरेन्द्र कश्यप

नवयुग प्रकाशन

दिल्ली

: प्रकाशक :
नवयुग प्रकाशन
२८१ चावड़ी बाज़ार
दिल्ली।

: प्रथम संस्करण :
अगस्त, उन्नीस सौ सत्तावन

मूल्य—चार रुपये पच्चीस नये पैसे

: मुद्रक :
हीरो प्रेस,
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली।

एक

****

विलायत में भारतीय विद्यार्थियों के लिये कुछ नहीं होता। अंधकार से प्रकाश में पहुँचने पर आँखें खिल जाती हैं। घुट्टी में मिली हुई आदतें छोड़ कर एक दम ऐसे विलायती बन जाते हैं, जैसे कि पीढ़ियों से यूरो-पियन चले आ रहे हैं। और जब दो-तीन वर्ष के बाद वापिस भारत को लौटते हैं, तो उनका प्रत्येक तेवर पुकार-पुकार यही कहता है कि वे घर पहुँच कर किसी निर्धन प्रदेश की सीमा में पहुँच गये हैं। वे यहाँ की एक-एक बात पर उलझते हैं; आर्थिक दशा पर विचार करते ही उनकी नाक और भौंहें सिकुड़ जाती हैं तथा संस्कृति पर शर्म आती है। चरित्र पर रोने को जी करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि स्वजनों को अपना समझते हुये उनकी आत्मा को वह धक्का पहुँचता है कि आत्महत्या करने की इच्छा उत्पन्न होती है। विलायत से वे बहुत सी वस्तुयें अपने संग लाते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के सूट, सूट पहनने वलों की नयी-नयी आदतें, मुँह टेढ़ा कर सिगरेट पीने का तरीका, बदल-बदल कर पाईप पीने की प्रणालियें, मुँह बना कर तर्क करने का आडम्बर, छोटे-बड़े तथा मध्यम वर्ग के व्यक्तियों जैसी पाबन्दियाँ; जैसे 'ब्रेकफ़ास्ट', 'टी' 'लंच' और 'डिनर' करने के शिष्ट नियम। संक्षेप में यह कि उनकी मनोवृत्ति में पूर्ण रूप से परिवर्तन हो जाता है। वह वहाँ से प्रत्येक प्रकार की वस्तु

ले आते है, परन्तु जो वस्तुएं विलायत से नही ला सकते, वह हैं उनके कुछ आत्मीय। यदि भारतीय विद्यार्थी विलायत से लौटने पर एक जोड़ा माता-पिता, कुछ सगे-सम्बन्धी अर्थात एक छोटा सा विलायती कुटुम्ब भी ला सकते तो भारत में आने पर उनका जीवन इतना कटु न बनता, जितना कि ऐसे परिवार के अभाव मे बन जाया करता है। उनकी इच्छा होती है कि पिता को 'डैडी' कहें। परन्तु इस बाप को वे डैडी क्यों कर कह सकते हैं, जो लम्बी सी दाढ़ी रखे हुये, कुर्ता-पायजामा पहने हुक्का पीता है; और वह भी चारपाई पर बैठ कर। ऊपर से निहायत बदतमीजी के साथ पान खाता है—ऐसे पिता को डैडी तो एक ओर; सच पूछो तो पिता तक कहने का मन नहीं होता। उनका हृदय चाहता है कि किसा को 'ममी' कहें, परन्तु जिस को 'ममी' कहना चाहिये; उसका नक्शा इस प्रकार दीखता है कि तख्त पर दुपट्टा ओढ़े बैठी है, सामने बडा सा पानदान रखा है। हाथ में सरोता लिये डली (सुपारी) काट रही है या बाप खाना खा रहा है और वह मक्खियाँ उड़ा रही है। ऐसी स्त्री को ममी कह कर यह घटना स्मरण हो उठती है कि इसी स्त्री के गर्भ में हम नौ माह तक रहे थे और इसी का स्तन-पान कर हम इतने बड़े हुये हैं—तब अपनी जात से घृणा होने लगती है। काश, इस स्त्री का वर्ण श्वेत व अरूणिम होता, वृद्धावस्था के कारण मुखाकृति पर झुर्रियाँ तो अवश्य होतीं, किन्तु ऐसी, जैसे कि गुलाबी रंग की साटन पर शिकनें पड़ गयी हों। सोने की कमानी का ऐनक लगाये, झलने वाली कुर्सी पर बैठी सलाईयों से स्वेटर बुनती होती। एक ओर डैडी अदब से बैठे अखबार सुना रहे होते, दूसरी ओर टॉम (कुत्ता) बैठा जीभ निकाल कर हाँफ रहा होता। ऐसी वृद्धा को 'ममी' कहना न्यायसंगत (अच्छा) भी लगता और ममी का उच्चारण कर आत्मा को एक प्रकार का हर्ष भी होता कि यही आदरणीया नारी हम को जन्म देने के लिये अस्पताल गयी थी और इसी के गर्भ से जन्म लेकर हम एक आकर्षक नर्स की गोद

में आये थे। परन्तु इस हिन्दुस्तानी काली-कलूटी बड़ी बी को देखकर ममी कहने की तबियत कैसे हो सकती है ! इन्हें देख कर यही विचार होता है कि हम इन्हीं का दुग्ध-पान कर काले बने हैं। निश्चय ही इनका दूध श्वेत नहीं होगा। ऐसी काली स्त्री का दूध भला स्याही से कम क्या होता होगा ! जब व्यक्ति बाप को बाप और माँ को माँ कहते हुये घबरायें, तो उसका दिल घर में कैसे लग सकता है। और जब घरवाले ही अपने मतलब के न हुये तो घर क्यों कर अपने लिये उपयोगी सिद्ध हो सकता है। न अपनी मर्जी का स्नानगृह, न अपने ढब का 'ड्राइंग रूम' न 'स्टडी रूम', न 'डायनिंग रूम' न 'स्लीपिंग रूम', कमरों की संख्या यदि अधिक भी है तो बद्तमीजी के साथ उनको कबाड़खाना बना दिया गया है। जहाँ सोते हैं, वहीं कपड़े भी पहन लेते हैं, भोजन भी कर लेते हैं, और बस चले तो गुसलखाने के लिये भी उसी कमरे का प्रयोग कर लें। एक सभ्य व्यक्ति के लिए इस प्रकार के घर नर्क से कम नहीं होते।

लगभग यही सारी उलझनें जमाल को परेशान कर रही थीं। विलायत से आये उसे एक माह हो चला था और उसको अब तक यही महसूस हो रहा था, जैसे कि अपने किसी ऐतिहासिक दौरे के सिलसिले में वह संसार के किसी असभ्य भाग में पहुँच गया है, जहाँ हर तरफ वहशी ही बहशी नज़र आते हैं। अपने लिये मकान के एक भाग को ठीक-ठाक कर उसने रहने योग्य बना लिया था। घर वालों को उसने कह-सुन कर अपना भोजन करने का निश्चित समय और अपने दूसरे प्रोग्राम का कुछ कुछ आदी बना दिया था। परन्तु इन सारी बातों के बावजूद जो संतोष उसे आक्सफोर्ड और बर्लिन में प्राप्त हुआ था, वह यहाँ उपलब्ध नहीं था—बल्कि यहाँ तो हर वक्त वह यह बातें देख-देख कर कुढ़ा करता था कि उसके घर वाले कितने अंधकार में हैं। उसकी माँ को 'ब्रिज' से कोई लगाव नहीं था, पिता टाई की गाँठ तक लगाना नहीं जानते थे। न कोई बात करने योग्य था, न किसी के संग भोजन करने की इच्छा

थी। मेज पर खाने का रिवाज तो था, परन्तु इस बद्तमीज़ी के साथ कि इससे वही दस्तरख्वान वाला अशिष्ट तरीका अच्छा था। चिराग़ में बत्ती पड़ी तो घर कब्रिस्तान बन गया। सुबह मुर्गे ने बांग दी और उसके घरवालों ने समझा कि वे भी मुर्गे हैं। न सोने में आदमियत न जागने में इंसानियत। जमाल ने इसी में सन्तोष महसूस किया कि सबसे अलग-थलग अपने बैरे और खानसामे के साथ वह रहे, क्लब के सदस्यों के साथ सम्बन्ध जोड़ कर रिश्तेदारी के अरमान पूरे करे और सीटी बजा-बजाकर अंग्रेज़ कवियों की रचनायें गुनगुनाये और इस प्रकार अपना समय बिताये। और तो और उसे सबसे अधिक कष्ट होता था नजमा को देख कर। उसकी चचेरी बहन, हिन्दुस्तान में जन्म लेने पर भी अत्यधिक सुन्दर, इतनी आकर्षक कि विलायत जाने के समय नजमा ही के कारण उसे ऐसा लगा, जैसे कि उसकी आत्मा उससे बिछुड़ रही है। और विलायत में भी नजमा का ख्याल उसे इस सीमा तक रहा कि वह विलायत से अपने लिये कोई पत्नी नहीं लाया। उसने विलायत में भी नजमा के विषय में यही सोचा कि यद्यपि नजमा भारतीय युवती है, किन्तु उसमें इतनी योग्यता है कि वह उसके रंग में रंगी जा सकती है। वह जब कभी किसी विलायती तीतरी को किसी चित्ताकर्षक वेश-भूषा में देखता, तो कल्पना में वही वेश-भूषा नजमा को पहना कर देख लिया करता था। किसी के बालों का कोई डिज़ाईन उसे मनमोहक लगा, और उसने आँखें बंद कर नजमा को उन्हीं बालों में देख लिया। 'बालरूम' में किसी रमणी के नृत्य की कोई विशेष भाव-भंगिमा उसे पसन्द आई और उसने उसी क्षण नजमा को अपने काल्पनिक चित्र में उसी तरह थिरका लिया। संक्षेप में यह कि केवल नजमा ही एक ऐसी जादूगरनी थी जिसके जादू का प्रभाव विलायत में भी जमाल पर रहा। परन्तु भारत में आ कर और नजमा को फिर भारतीय ही देख कर उसका हृदय खिन्न हो उठा।

नजमा के प्रेम में अब भी वही उष्णता थी, नजमा का सौन्दर्य अब पूर्ण रूप से विकसित हो चुका था, उसके नैनों में कुछ और मादकता छा गई थी, उसके केश और भी लम्बे हो गये थे, उसका रंग कुछ और निखर आया था, उसकी बोलने में माधुर्य की वृद्धि हो गई थी, शिक्षा भी पहले से अधिक प्राप्त कर चुकी थी। जब जमाल विलायत जा रहा था तो वह मैट्रिक की परीक्षा देने वाली थी और अब बी० ए० में फेल हो कर पढ़ना-लिखना छोड़ चुकी थी। ग्रेजुएट न सही, किन्तु अन्डर ग्रेजुएट होना ही क्या कम था! यह सब कुछ था, परन्तु इसके साथ ही साथ उसकी भारतीयता भी उन्नति कर चली थी। और जमाल को कुछ ऐसा मालूम होता था कि नजमा कदाचित ही उसके उपयुक्त हो सकेगी।

दो

***

नजमा में बहुत से अवगुण थे। और आपत्ति यह थी कि वह अपने इन सारे अवगुणों को गुण समझने लगी थी। उदाहरण के लिए, वह नमाज़ पढ़ती थी—बड़ी तन्मय हो कर, आवश्यकतम कार्यों को छोड़ कर, दिन में एक दो बार भी नहीं—पाँच बार नमाज़ पढ़ने वाली लड़की अच्छी-खासी वली-अल्लाह (ईश्वर भक्त) बन चुकी थी। अब आप ही बताइये, जो लड़की दिन में पाँच मरतबा नमाज़ पढ़ने के लिये वज़ू करे; उसकी मुखाकृति पर पाऊडर व गाज़ा, लिपस्टिक और क्रीम कैसे बने रह सकते हैं। जो नमाज़ की इस हद तक पाबन्द हो, वह एक सभ्य सोसायटी की 'बटरफ्लाई' तो नहीं, अलबत्ता, उपहास की पात्र बन सकती थी। जो समय शरीफ लेडीज़ के नृत्य का होता है, उस समय वह गँवार लड़की 'इशा' की नमाज़ पढ़ा करती थी। टेनिस खेलने के समय, इशा और मग़रिब की नमाज़ पढ़ा करती थी। ठीक लंच के समय ज़ेहर की नमाज़ पढ़ती थी और एक नमाज़ ही पर क्या; उसने ऐसे-ऐसे कितने ही कार्यों में अपनी आयु का "मूल्यवान भाग" नष्ट कर रखा था।

जमाल, विलायत में सोचा करता था कि नजमा ने उसकी अनुपस्थिति में नृत्य के सारे पाठ रट लिए होंगे, 'स्केटिंग' सीख ली होगी, बैडमिन्टन तो खैर, वह खेल ही लेती थी। टेनिस में भी अच्छा-खासा अभ्यास कर लिया होगा। किन्तु यहाँ आकर उसने बैडमिन्टन भी गायब देखा। शुरू-शुरू में तो वह समझा कि नजमा जान-बूझ कर उसे सता रही है। यह सब 'एंटिंग' है। जब खूब अच्छी तरह परेशान कर लेगी, तब

एक दम सुमधुर हँसी का झंकार के साथ टेनिस लान पर बिजली की तरह कौंध जायेगी। बाल रूम में वर्षा की तरह बरस पड़ेगी और प्यानो पर बैठ कर एक दिन इस मूक वातावरण को गीतों से सजीव बना देगी। धीरे-धीरे उसे विश्वास हो गया कि यह अभिनय नहीं, वरन् वास्तविकता है। उसका हृदय टूट कर रह गया। उसकी तमाम उम्मीदें दीपक की लौ की तरह थरथरायीं और बुझ गयीं। परन्तु इस अंधकार में भी प्रकाश की यह झलक नज़र आती कि अब भी नजमा को इन गुमराहियों से बचा कर सीधे रास्ते पर लाया जा सकता है। अतः नज़मा को वह बराबर सचेत करने तथा अंधकार से प्रकाश में आने का निमत्रण देता रहा।

आज भी जिस समय जमाल अपने पाईप का धुआँ उड़ाता हुआ अपने चचा मौलवी अब्दुल समद के यहाँ पहुँचा, उस समय मौलवी साहब तो खैर, आरामकुर्सी पर लेटे किसी पुस्तक के अध्ययन में निमग्न थे। प्रगट था कि यह पुस्तक शैक्सपीयर के नाटकों का संग्रह न थी; बल्कि होगी कोई 'अलजहादनी अलासलाम 'या 'तफरीह अलाज़कयानी अहवाल अलानाबिया' की कोटि की पुस्तक। मौलवी साहब के 'टेस्ट' से इससे अधिक उम्मीद नहीं की जा सकती थी। ऐसे चचा से जमाल जैसा ताज़ा विलायती भतीजा भला क्यों प्रभावित होता! विलायत जाने से पूर्व तो खैर, उसकी चचा के सामने पान तक खाने की हिम्मत नहीं पड़ती थी, परन्तु अब वह पाईप का धुँआ उड़ाता उनके सामने से गुजरा। इशारे से उसने चचा को सलाम किया ताकि 'आदाबअर्ज़' या 'अस्सलाम वाले कुम' कहने का कष्ट न उठाना पड़े। चचा ने ऐनक से ढकी कनखियों में से अपने भतीजे को देखा और शिष्टाचारवश 'खुश रहो' कह कर पुनः पुस्तक पढ़ने में व्यस्त हो गये। यह दृश्य भी देखने योग्य था, किन्तु घर में प्रवेश करते ही जमाल ने नजमा को नमाज़ पढ़ते हुये देखा तो उसके मन को आघात पहुँचा। इस पर भी वह प्रगट रूप में मुस्करा दिया। चचा

ने तत्क्षण ही जमाल के लिये कुर्सी मँगवायी और भतीजे साहब कुर्सी पर आ विराजे और पाईप से धुँए के छल्ले बनाते-बनाते मुस्कराते रहे। आखिर चची ने पूछा—"क्या बात है आज? चुपके-चुपके हँस रहे हो!"

जमाल ने मुँह टेढ़ा कर ऐनक की कमानी को नाक पर जमाते हुये कहा—"हँस इस बात पर रहा हूँ चचा कि आखिर यह क्या बकवास है। नजमा के इरादे से झलकता है कि यह नमाज पढ़ते-पढ़ते मस्जिद बन जाना चाहती है। फिर भी इससे फायदा...?"

चची ने अपने गालों पर क्रमशः हाथ लगाते हुये कहा—"तोबा कर, बेटा! नमाज-रोजे का मजाक नहीं उड़ाया करते! और जो जी चाहे करो। परन्तु यह न भूलो कि तुम मुसलमान हो!"

जमाल ने चची की अज्ञानता पर कहकहा लगाते हुये कहा—"तो गोया, नमाज पढ़ने से मस्तिष्क इतना कमजोर हो जाता है कि व्यक्ति अपना मुसलमान होना भी भूल जाये। लेकिन सवाल तो यह है कि व्यक्ति के लिये मुसलमान बनना ज्यादा जरूरी है या इन्सान बनना!"

इस बीच नजमा निवृत्त हो चुकी थी। उसने अपना दुपट्टा ठीक करते हुये कहा—"मुझ से पूछिये भाई-जान! इन्सान बनना भी ज्यादा जरूरी है और मुसलमान बनना भी। यह अवश्य है कि जब तक मुसलमान ना बना जाये, व्यक्ति को इन्सान बनना नहीं आ सकता। सच पूछा जाय तो मुसलमान बनना ही इन्सान बनना है। इन्सानियत की पूरी शिक्षा इस्लाम द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।"

इस बार जमाल व्यंग्य से बोला—'राहे निजात' के किस पृष्ठ पर यह बात लिखी है देवी जी?

"उसी पृष्ठ पर, जिसे आप विलायत में खो आये हैं।" नजमा ने शरारत से कहा।

इस पर जमाल हँसते हुये कहने लगा—"गुड। बहुत अच्छी बात कही है। नमाज़ पढ़ते रहने पर भी तुम्हारी बुद्धि अभी तक कुण्ठित नहीं हुई है। इसीलिये तो मुझे आश्चर्य होता है कि तुम्हारी जैसी बुद्धिजीवी नारी, जिसे न जाने क्या होना चाहिये था—क्या बन कर रह गई है। नमाज़ पढ़ती हुई तुम अच्छी नहीं लगती।"

नजमा तत्क्षण ही प्रत्युत्तर में बोली—"विचित्र सी बात है! मुझे आप के मुँह से ऐसी बातें अच्छी नहीं लगती।"

जमाल ने बुझे हुये पाईप को दियासलाई से कुरेद कर उसे सुलगाते हुये कहा—"सैद्धान्तिक बात व धार्मिक तर्क को फिलहाल छोड़ो। आर्ट के दृष्टिकोण से मैं तुम को एक मोटी सी बात बताता हूँ। वह यह कि नमाज़ पढ़ती हुई औरत चाहे वह कितनी सुन्दर और आकर्षक या कितनी ही जवान व सुडौल क्यों न हो, कभी हसीन व जवान नज़र नहीं आ सकती।".

नजमा ने बात काटते हुये कहा—"तो भाई जान, यह नमाज़ का नहीं नज़र का कुसूर है।"

जमाल मुस्कराता हुआ बोला—"कट्टर पंथियों की तरह हस्तक्षेप और तर्क न करो, बल्कि पहले पूरी बात सुन लो! मेरा मतलब यह है कि नमाज़ वास्तव में नौजवानी और जवानों के लिये बनी ही नहीं है। एक लड़की जब दुपट्टे का दोहरा आँचल सिर पर डाल कर चेहरे को कानों के आगे तक छुपा कर दुपट्टे के अन्दर छुपे हुये हाथ बाँध कर नमाज़ पढ़ने खड़ी होती है, तो अच्छी-खासी बूढ़ी अम्मा नज़र आती है। एक पति जब अपनी पत्नी को नमाज़ पढ़ते हुये देखता है, तो उसे कदाचित ही विश्वास होता हो कि वह उसकी पत्नी है।"

नजमा ने जल कर अर्थ भरे भाव से कहा—"यदि खुदा न खास्ता विवाह के समय तक आप की यह राय रहे, तो ज्ञात कर लीजियेगा, कहीं आपकी पत्नी नमाज़ पढ़ने वाली तोनहीं है!"

जमाल ने इस चोट को फौरन महसूस करते हुये कहा—"नहीं ! खैर, मेरी पत्नी को तो स्वयं ही यह निर्णय करना होगा कि वह पति से लौ लगाये या भगवान से ?"

नजमा की माता ने अचानक वहाँ पहुँच कर इस रुचिकर वाद-विवाद को समाप्त कर दिया और दोनों को चाय पर चलने को कहा। नजमा, जमाल के अन्तिम वाक्य से तिलमिलाई हुई थी। आखिर उसने उठते-उठते कह दिया—"पति की सेवा करना भी भगवान की एक आज्ञा है। किन्तु यह स्पष्ट है कि पति का स्थान ईश्वर से कहीं छोटा है। वास्तविकता और कृत्रिमता में बहुत अन्तर है।"

जमाल न चलते-चलते कहा—"अच्छा-अच्छा मौलाना, इस धार्मिक वाद-विवाद को खत्म कीजिये। यदि यह तर्क चलता रहा तो चाय ठंडी हो जायेगी और चाय का नाम लेते ही याद आया, कल आप को मेरे यहाँ चाय पर आना है। मेरी दो अँग्रेज़ दोस्त भी होंगी।"

तीन

****-

नजमा और जमाल की पूर्ण रूप से मँगनी तो नहीं हुई थी। परंतु दोनों इस बात से भिज्ञ थे कि उनके माता पिता की यही इच्छा है। और अपने माता-पिता की इस इच्छा को दोनों ही पसन्द करते थे। विलायत जाने से पूर्व जमाल तो यह चाहता था कि उस का विवाह नजमा के साथ हो जाय और तब वह जाय; क्योंकि नजमा से ऐसा सम्बन्ध स्थापित करने के लिये और भी कई प्रार्थी ज़ोर लगा रहे थे। नजमा की माँ स्वयं चाहती थी कि नजमा की सगाई उसके मौसेरे भाई शरफ से हो जाये। परन्तु कठिनाई यह थी कि जिस वर्ष नजमा एंट्रेंस की परीक्षा में उत्तीर्ण हुई थी, उसी वर्ष शरफ इस परीक्षा मे असफल रहा था। इसी कारण यह चर्चा ठंडी पड़ गई थी। खैर, शरफ की माँ तो इस पर भी कहती रही कि अपनों में 'फेल-पास' नहीं देखा जाता बल्कि इस सम्बन्ध को पक्का करने के लिए उसने यह राय दे एक अचूक तीर मारने का प्रयत्न किया कि नजमा की शिक्षा अब समाप्त कर दी जाय और वह शरफ को पढ़ाती रहेगी। अतः यह स्पष्ट है कि वह नजमा से आगे बढ़ जायेगा। परन्तु नजमा के माता-पिता ने उस का यह प्रस्ताव ठुकराने के साथ-साथ ही इस सगाई के सम्बन्ध में अपनी अस्वीकृति दे दी। शरफ के अतिरिक्त एक-आध और भी आत्मीय थे, जो नजमा के लिए उधार खाये बैठे थे, किन्तु नजमा के पिता को यह किसी भी रूप में मान्य नहीं था। यद्यपि स्वयं नजमा ने कभी किसी से कहा नहीं था, परन्तु उस के हृदय में जो स्थान जमाल के लिये था, वह किसी और के

लिये नहीं था। पहली बात तो यह कि दोनों बाल्यावस्था से साथ-साथ रहे, साथ-साथ खेले, साथ-साथ कूदे थे। यह दूसरा बात है कि इन दोनों की ओर से कभी उन्मादों वाले प्रेम या मुहब्बत का प्रदर्शन नहीं हुआ, चोरी-चोरी मिलना-जुलना नहीं हुआ, गर्म आँसू और ठंडी आहें नहीं छोड़ी गयीं और चाँद-तारों की कसम नहीं खायी गयीं। मगर ख़ामोशी तो सबसे ज़्यादा ज़बानदराज़ है। इस कम्बख़्त की ज़बान को कौन रोक सकता है। अतः इसी की बदौलत नजमा और जमाल दोनों को एक-दूसरे के दिल की दशा ज्ञात थी। नजमा को सबसे अधिक सन्तोष इस बात पर था कि जमाल की प्रकृति में सज्जनता विद्यमान थी। इस बात को तो वह स्वप्न में भी न सोच सकी थी कि जमाल के स्वभाव में अक्खड़पन की पुट होगी। यदि उसे यह इत्मीनान न होता तो कदाचित नजमा उसके इतने निकट न रहती।

निश्चय ही विलायत से लौटने पर नजमा को जमाल में बहुत से परिवर्तन दिखाई दिये थे और वह कभी इस विचार से भी सहम जाती थी कि जमाल ने अन्य भारतीयों के साथ कहीं अपनी मौलिकता भी न भुला दी हो। वह विशेषता, जिसको भारतवासी मर्यादा और विलायत वाले दुस्साहस या हिमाकत का नाम देते हैं। परन्तु इस एक माह के दौरान में, जब से जमाल विदेश से आया था; उसने नजमा की इस आशंका के सिद्ध होने का कोई प्रमाण नहीं दिया। जमाल तथा उसके मध्य जो गरमा-गरम बहस नमाज़ के विषय को लेकर हुई थी; उससे पूर्व भी उन दोनों में वेश-भूषा, बाल सँवारने के ढंग तथा इसी भाँति के कई विषयों पर कई बार तर्क हो चुका था और नजमा प्रत्येक समस्या का समाधान यह कह कर करती थी कि जो अवगुण आप को मुझ में नज़र आते हैं, अपनी पत्नी में नहीं पैदा होने दीजियेगा। किन्तु जमाल ने नमाज़ के विषय को ले कर छिड़ी बहस के सम्बन्ध में जो उत्तर दिया था, वह केवल मज़ाक नहीं था; वरन नजमा के लिये बहुत

ज़्यादा अहमियत रखता था। उसके मस्तिष्क में जमाल का यह वाक्य गूंज रहा था कि मेरी पत्नी को स्वयं ही यह निर्णय करना होगा कि वह खुदा से लौ लगाये या पति से। नजमा यह बात किसी से नहीं कह सकती थी, परन्तु मन ही मन इस गुत्थी को सुलझाने में प्रयत्नशील थी कि यदि उस का विवाह जमाल से हो गया, तो क्या वास्तव में उसे इस प्रकार का कोई निर्णय करना होगा! कभी-कभी तो वह यह सोचती थी कि साहब बहादुर ताज़े विलायती हैं। मस्तिष्क में विलायत समाया हुआ है। थोड़े दिनों बाद सारा जोश ठंडा हो जायगा और यह मुँहजोरी तशरीफ ले जायेगी। परन्तु इसके साथ ही साथ वह अन्य बहुत से विलायत से लौटे सिरफिरों को देखती थी, जिनका दिमाग कभी भी ठिकाने पर नहीं आया था। यह भी एक संयोग था कि उस के समक्ष जितने भी उदाहरण थे; बुरे ही थे। वरना बहुत से ऐसे अल्लाह के बन्दे भी विलायत जाते हैं, जो विशुद्ध हिन्दुस्तानी के हिन्दुस्तानी या मुसलमान के मुसलमान बने वापस लौट आते हैं।

कभी-जमाल से उसे प्रेम था, अत्यधिक और अटूट। ऐसा प्रेम जिसका प्रदर्शन कभी शब्दों का सहारा ले कर नहीं हुआ था। परन्तु लगता यह था कि दोनों के मध्य समझी-समझायी, कही-सुनी मुहब्बत है। लेकिन यह मुहब्बत तो उस समय की थी, जब दोनों का विलायत एक था, दृष्टि कोण एक था और एक सी प्रकृतियें थे। मगर विलायत से वापसी के पश्चात जमाल कुछ और हो चुका था और अब दोनों की मनोवृत्तियों के बीच एक अन्तर पैदा हो गया था।

यह किस प्रकार संभव था कि नजमा इन बातों को (जो जमाल के कथनानुसार बकवास थीं) छोड़ कर क्लबों की परी बनती, उस क साथ टेनिस लान पर कूदती, नाच घर में थिरकती और होटलों में डिनर या लंच की भागीदार बनती और ऐसा न करने पर नजमा जमाल के लिए अनुपयुक्त थी। और फिर इस तरह स्थान-स्थान पर

ख़त्म न होने वाली कोफ़्त के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। वह वास्तव में जमाल के जीवन को नष्ट नहीं करना चाहती थी। और इस दोतरफ़ा कोफ़्त के बजाय वह इसके लिए तैयार थी कि जो-कुछ भी गुजरे, उस पर गुजर जाये और जमाल का विवाह किसी ऐसी लड़की से हो जाय जो इन तमाम धार्मिक पचड़ों की उपेक्षा कर जमाल के इशारों पर नाच सके, साथ-ही-साथ यह निर्णय भी कर सके कि उसे खुदा से लौ लगानी चाहिये या अपने पति से। अर्थात् ऐसे पति से जिसकी ईश्वर में कोई आस्था न हो।

नजमा अपनी आशंकाओं में कदाचित बहुत आगे बढ़ गई थी। उसे स्वयं थोड़ी-थोड़ी देर बाद विचार आता था—अभी से निराशा की क्या बात है! अभी तो जमाल आया ही है। उसे कुछ दिन विलायती बना रहने दिया जाय। तब तक साहबियत के तमाम अरमान निकल जायेंगे। इसके पश्चात सम्भव है कि उसकी संगत की जमाल पर प्रतिक्रिया हो और तब जमाल पुनः वही जमाल बन जाये, जो विलायत जाने से पूर्व था। एक-आध बार तो उसकी यह इच्छा भी हुई कि लोक-लाज का आवरण ताक में रख कर वह जमाल से स्पष्ट कह दे—कि मेरी और तुम्हारी दुनिया अब एक नहीं रही है। तुम तो कदाचित अब भी मेरे योग्य बन सकते हो, किन्तु मैं निश्चित रूप से तुम्हारे योग्य नहीं हूँ! परन्तु इस कल्पना मात्र से ही उसका ललाट स्वेद कणों से आच्छादित हो जाता और तब वह अपने को टटोलती कि वह जमाल से इस तरह की बात कर भी सकती है या नहीं! विशेषकर ऐसी स्थिति में जबकि जमाल बेचारे ने कभी यह बात अपने मुँह से नहीं कही थी कि वह केवल नजमा से प्रेम करता है या उससे विवाह कराना चाहता है। ह, जमाल की आँखों ने नजमा से बहुत कुछ कहा था। इसके अतिरिक्त जमाल ने अपनी बहिन तारा के आग्रह पर एक बार यह भी कह दिया था कि आखिर, नजमा के होते हुये मेरे लिये दूसरी लड़की के बारे में क्यों

सोचा जा रहा है ! और यह बात नजमा तक इस तरह पहुँची कि तारा उसको 'भाभी जान' 'भाभी जान' कह कर छेड़ा करती थी और तारा की देखा-देखी उसकी अन्य सहेलियों को भी छेड़ने का नुस्खा याद आ गया था। लड़कियों के पास तो विवाय इसके और कोई मज़ाक होता ही नहीं कि वे अपनी किसी सहेली के साथ किसी परिचित या अपरिचित लड़के का नाम लेकर उसको तक्कू बता दें और इस तरह छेड़छाड़ करें। इस प्रकार के हास-परिहास का प्रायः यह अर्थ होता है कि तुम भी हमारे मंगेतर या किसी अन्य सज्जन का नाम लेकर हमें छेड़ो; ताकि हम प्रगट रूप में शरमायें और मन ही मन में इस बात से प्रसन्न हों कि ईश्वर ने हम को भी इस योग्य बना दिया है। परन्तु नजमा इस तरह के मज़ाक न तो स्वयं करती थी और न ही दूसरों से करवाना पसन्द करती थी। यह अवश्य है कि जमाल का नाम लेकर जब कभी उसके साथ ऐसी छेड़-छाड़ की जाती थी, तो उसे बुरा नहीं लगता था। दूसरे, भाभी जान नामक शब्द का प्रयोग भी उसे समय से पूर्व किया गया लगता था। बहरहाल, वह यह सोच कर हैरान थी कि जमाल की इस बदली हुई दशा के प्रति कैसा व्यवहार अपनाये, जमाल को किस तरह समझाये और स्वयं को किस तरह समझे !

चार

****

जमाल के यहाँ नजमा जिस समय चाय पर पहुँची, तारा आकुलता से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। तारा के अतिरिक्त वहाँ रजिया और नाहिद भी पहुँची हुई थी, जो तारा की मुख्य हमजोलियें थीं। सब की सब दौड़ कर नजमा से लिपट ही तो गयीं। यहाँ तक कि वह बड़ी कठिनाई से उनसे पीछा छुड़ा कर चची को प्रणाम करने जा सकी। अर्ज़मन्द आरा यानी जमाल की माता को नजमा से स्नेह नहीं वरन इश्क था। वे उसे देख कर फूल की नाईं खिल जाया करती थीं और उसकी एक-एक अदा पर बुरी तरह मिटी हुई थीं। वे प्रायः तारा से कहा करती थीं कि यदि किसी पर नजमा की परछाईं भी पड़ जाय तो वह पवित्र हो जाय। और उनकी इस बात पर तारा बुरा माना करती थी। यद्यपि वह स्वयं नजमा को अत्यधिक चाहती थी। इस समय भी अर्ज़मन्दआरा नजमा को देखकर उसे अपने गले से लगाये देर तक आशीष देती रहीं। आखिर, तारा नजमा को ज़बरदस्ती छीन लायी और लाकर उसे रजिया और नाहिद के समक्ष उपस्थित कर बोली—"लो, यह हैं बहू बेगम! सास के कलेजे से जो चिपटीं कि हम सब को भूल बैठीं।"

रजिया भी एक ही बला थी। अत्यन्त गम्भीरता से बोली—"हम लोगों को तो खैर, उसी दिन से भुला दिया गया है, जिस दिन से जमाल भाई आये हैं।

नाहिद भी कुछ कम न थी। तमक कर कहने लगी—"क्यों नहीं

भुलायेगी। जमाल भाई तो माशा अल्लाह, प्यास को भी मिटा देने वाली सूरत रखते हैं। तुम अपनी तो कहो, उस डाकिये के लिये बैरंग मरी जा रही हो या नहीं !"

नाहिद की इस चोट को सब समझ गये कि रजिया का विवाह किसी पोस्ट मास्टर से तय किया जा रहा है। सब को हँसी आ गई, मगर रजिया भला कहाँ चूकने वाली थी। उसे भी ज्ञात था कि नाहिद की सगाई एक कैप्टन साहब के साथ तय हो चुकी है। अतः वह फुर्ती से बोली—"लो, और सुनो ! यह रंगरूट वाली भी बोलीं। खबर भी है कि विवाह के बाद क़वायद करा-करा कर मार डालेगा तुझ !"

तारा ने बीच-बिचाव करते हुये कहा—"तुम लोग तो आपस में ही लड़ मरीं ! मैं तो समझे बैठी थी कि भाभी जान की कुछ खबर ली जायेगी।"

नजमा ने बात टालने की गरज़ से कहा—"अच्छा-अच्छा, अब यह बात छोड़ो। यह बाहर लॉन पर जो प्रबन्ध हो रहा है चाय का, तो क्या हम सब को भी वहीं चाय पीनी पड़ेगी ?"

रजिया बोली—"सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि होटल के बैरे भी आये हैं। वे ही चाय पिलायेंगे।"

नाहिद ने कहा—"मैं तो यही बात खुदा जाने, तारा से कितनी बार पूछ चुकी हूँ। यह कोई जवाब ही नहीं देती।"

तारा अपनी सफाई देते हुये बोली—"भई अल्लाह, मैं क्या जानूँ ? आखिर भाई जान बाहर से आये नहीं, जो उनसे पूछूँ। देखो, मैं अभी बुलाती हूँ।"

तारा ने बड़ी कठिनाई से जमाल को बाहर से बुलवाया। रजिया और नाहिद दोनों जमाल के सामने आई थीं, यही स्वतन्त्रता क्या कम

थी। परन्तु जमाल तो कदाचित यह समझे हुये थे कि पर्दा का कोई प्रश्न ही नहीं पैदा होता है। अतएव उनके आते ही तारा ने इस समस्या को सामने रखा। वह आश्चर्यचकित रह गया, गोया कि उसके सामने कोई अजीब सा सवाल रख दिया गया हो। पहले तो कुछ सिटपिटाया, एक-आध बार सीटी बजा कर आकाश की ओर देखा, फिर कलाई पर बँधी घड़ी में समय देखते हुये बोला—"मुझे दरअसल बिल्कुल ख्याल ही नहीं आया कि इस किस्म का सवाल उठ सकता है और अब सोचता हूँ कि किसी और का तो ज़िक्र क्या करूँ—तारा को भी बाहर चाय नहीं पिला सकता। इनके पिताजी (गोया वे जमाल के पिता न थे) भला यह क्यों कर बरदाश्त कर सकते हैं कि खुले हुये लॉन पर उनकी साहबजादी बेपर्दा बैठे और जबकि अपरिचित बैरे 'सर्विस' को अन्जाम दें।"

नजमा ने कहा—"लेकिन यह बात तो आप भी खूब भूल बैठे थे। खैर, अब भी यह हो सकता है कि सारी मेज़ें बाहर पीछे की तरफ वाले लॉन में पहुँचा दी जाँय।"

जमाल ने व्यंग्य से कहा—"और बैरों को साड़ियाँ पहना दी जायें।"

"या हम लोग मूँछें लगा लें।" नजमा तत्क्षण बोली।

जमाल ने नजमा की वाकपटुता का आनन्द लिये बिना ही कहा—"अजीब प्राबलम (समस्या) है। मेज़ें तो खैर पर्देदार लॉन में पहुँचाई जा सकती हैं, लेकिन 'सर्विस' का क्या होगा?"

नजमा ने उत्तर दिया—"वह हम चारों के सुपुर्द कीजियेगा। और अपने मेहमानों को वर्दीदार बैरे दिखा कर कह दीजियेगा साफ-साफ, कि अल्लाह के दिये यह भी मौजूद हैं आप की दुआ से! मगर पर्दे के कारण मेरी बहनें इनके सामने नहीं आ सकतीं। अतः वे स्वयं ही चाय पिलायेंगी।"

जमाल परेशान हो कर बोला—"मुझ पर भी हँसेंगी मेहमान और तुम सब पर भी।"

नजमा ने तत्क्षण ही कहा—"हँसना तो अच्छी बात है। शुक्र कीजिये कि रोने की नौबत नहीं आयेगी।"

जमाल को नजमा की यह बात बुरी लगी, परन्तु विवशता थी। क्या करता! शीघ्रता से सारा सामान पीछे वाले लॉन में पहुँचाया गया। और यह चारों लड़कियाँ नौकरानी सहित स्थान को सजाने में व्यस्त हो गयीं।

जमाल को आश्चर्य हुआ कि देखते ही देखते सारी मेजें करीने तथा सलीके से लगा दी गई थीं। परन्तु इस पर भी वह 'सर्विस' की ओर से सन्तुष्ट न था और डर रहा था कि न जाने क्या होगा।

नियत समय पर उसकी दो अंग्रेज दोस्त मिस मैबुल और मिस डैनियल आ पहुँची। जमाल ने सबसे उनका परिचय कराया और बताया कि वे दोनों तितलियाँ ऑक्सफोर्ड में उसकी सहपाठिनी रह चुकी हैं। इसके बाद उसने शर्मिन्दा होकर अपनी बहनों की पर्दा-प्रथा और इस हिन्दुस्तानी हिमाक़त पर उन दोनों के समक्ष माफी माँगने का वह क्रम बाँधा कि अन्त में मिस मैबुल ने तंग आ कर कहा—"आप इस कदर शर्मिन्दा क्यों हो रहे हैं? यदि आपके स्थान पर मैं होती तो ऐसी अच्छी बहिनों और इतनी अच्छी सहेलियों पर शर्मिन्दा होने के बजाय गर्व करती।"

मिस डैनियल भी कहने लगीं—"मुझे आज तक किसी बेपर्दा पार्टी में इतना लुत्फ़ नहीं आया, जितना इस पार्टी में आ रहा है। हिन्दुस्तानी लड़कियाँ खातिरदारी में विशेष स्थान रखती हैं।"

मिस मैबुल बोलीं—"और हम लोगों ने खातिरदारी का यह आर्ट बैरों और खानसामों को सौंप कर मिट्टी में मिला दिया है।"

खुदा-खुदा करके जमाल को अब सन्तोष हुआ कि उसकी महिला अतिथियों ने बुरा नहीं माना और न ही कोई मज़ाक उड़ाया। बल्कि वे दोनों तो तारा, नाहिद, नजमा और रजिया से मिल कर इतनी प्रसन्न हुईं कि अपनी पुरानी मित्रता को कुछ समय तक भूल बैठीं।

चाय पी चुकने पर कुछ देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। डैनियल को तो रह-रह कर इस बात पर आश्चर्य होता था कि नजमा और तारा कितनी प्यारी अँग्रेज़ी बोलती हैं और उनका बात करने का ढंग कितना अच्छा है। यह बातें चल रही थीं कि नजमा अचानक वहाँ से ओझल हो गई। पहले तो किसी ने इस घटना पर ध्यान नहीं दिया। कुछ समय पश्चात जमाल ने मिस डैनियल और मिस मैबुल से कहा—"आईये, आपको एक तमाशा दिखायें!"

यह कह कर सबों को अपने 'ड्राईंग रूम' में ले गया, जहाँ नजमा 'मगरिब' की नमाज पढ़ रही थी। परन्तु जमाल का यह मज़ाक रंग पर नहीं आया, क्योंकि मिस मैबुल ने उसकी इच्छा का साथ देने के विरुद्ध उसे डाँटते हुये कहा—"जमाल! 'सोसलिस्ट' होने का यह अर्थ नहीं कि तुम प्रार्थना का इस तरह मज़ाक उड़ाओ!"

जमाल ने उन की इस बात का यह कह कर मज़ाक उड़ा दिया—"यौर होलिनेंस, बज़ा इर्शाद (आपका कथन सत्य है।)"

यह पार्टी मिस डैनियल, मैबुल और इन लड़कियों के बीच मित्रता का सम्बन्ध पैदा कर समाप्त हो गई और तब जमाल ने चैन की साँस ली।

पाँच

*****

जिन सज्जन का शुभ नाम है शरफ; इनका रूप भी अजीब तरीके से शरीफ था। नजमा के मौसेरे भाई बनकर तो खैर, यह पैदा ही हुये हैं; परन्तु उसका पति बन कर मरने की कामना ने इन को अच्छा-खासा पागल बना रखा था। इधर नजमा की खाला (मौसी) भी अपने लड़के के लिये वह खिलौना हर कीमत पर प्राप्त करना चाहती थी, जिसके लिये शरफ मियाँ मचले हुए थे। अब तक तो खैर, शरफ स्वभाव से प्रेमी बने हुए थे। कारण यह कि मुकाबले में कोई और न था। आप ही आप थे। जमाल का विचार कभी-कभी अवश्य आता था, परन्तु उन्हें भगवान की ओर से यह उम्मीद प्राप्त थी कि जमाल निश्चय ही विलायत से किसी मेम को संग लायेगा। परन्तु जब जमाल वापस आ गया और वह भी एकाकी का एकाकी तो इन हजरत का प्रेमी स्वभाव पागलपन में परिवर्तित हो गया। प्रत्येक पल इन्हें धुन रहती कि इनकी शादी नजमा से होगी। नहीं होगी, तो जान दे दूँगा। खैर, वे जान तो क्या देते; हाँ, उनकी माँ बेचारी का दम जरूर निकल जाता था। और इधर नजमा के पिता मौलवी अब्दुल समद को जैसे इस लड़के के नाम से ही चिढ़ सी थी। ज्यों-ज्यों इस तरफ से कोशिशें होती, त्यों-त्यों मौलवी साहब के इन्कार में उष्णता पैदा होती जा रही थी। यहाँ तक की मौलवी साहब ने अपनी बेगम से स्पष्ट रूप में कह दिया था कि वह अपनी हमशीरा साहबा (बहिन) को

सूचित कर दें कि इस सिलसिले में उनके आग्रह के अर्थ भविष्य में यह होंगे कि अब तक जो सम्बन्ध मौजूद हैं, वे भी टूट जायेंगे। अतः इस प्रकार निराश होने के बाद शरफ साहब ने अपना नक़्शाये जंग बदल दिया। अब उन्हें चिन्ता हुई कि जमाल की ओर से मौलवी साहब को किस प्रकार विमुख किया जाये। परन्तु प्रोपेगैंडा स्वयं ही एक स्थायी कला है। जो व्यक्ति अपने लिये अच्छा प्रोपेगैंडा न कर सके, वह दूसरे के लिए बराबर प्रोपेगैंडा क्यों कर सकता है! किन्तु यह बात भी समझदार ही समझ सकते हैं और यदि शरफ साहब का बुद्धि से तनिक भी सम्बन्ध होता तो वह नजमा की तरफ से यहा समझ कर सन्तोष कर लेते कि लोमड़ी के लिये अंगूर खट्टे हैं। परन्तु यह बात उम्मीदवारी की धुन में उनकी समझ में न आ सकी और तब उन्होंने मौलवी साहब को जमाल से विमुख करने का यह बेहतरीन तरीका अपनाया कि वह नजमा की वालदा से लगायी-बुझायी शुरू करे ताकि स्वयं नजमा भी उनके जौहर से लाभ उठाती रहे और उस की वालदा की राय भी खराब न हो। तत्पश्चात मौलवी साहब तक यह ज़हर स्वयं पहुंच जायेगा।

उन्होंने बहुत विचार-विमर्श के बाद एक अचूक शस्त्र का आविष्कार किया, जो कि रहस्यमय उपन्यासों और काल्पनिक उड़ानों का भंडार था। अन्त में वे इस शस्त्र को कई प्रकार के ज़हर में बुझा कर एवं अपनी वाकपटुता का आश्रय ले एक दिन अपनी खाला के पास पहुँच ही गये और सबसे पहले नजमा की उम्मेदवारी के प्रति अपने त्याग पत्र की घोषणा कर दी। कहने लगे—"खालाजान! बात यह है कि नजमा के सम्बन्ध में मुझे अपने दुःसाहस का बोध अब हुआ है। मेरी उसकी जोड़ी कई वजहों से, बेतुकी सी थी। मेरी शिक्षा कम है और उसकी ज्यादा। मेरा स्वभाव कुछ और है उसका कुछ और। वास्तव में यह

मेरी ग़लती थी कि मैं इस सम्बन्ध के लिये ज़ोर दे रहा था। यह सच है कि मुझे उससे मुहब्बत रही है और इस मुहब्बत का मैं हमेशा ग़लत अर्थ समझता रहा। यद्यपि वह मेरी बहिन है और एक भाई को बहिन से मुहब्बत होनी ही चाहिये। सच पूछा जाय तो ऐसी मुहब्बत के कारण ही अब मेरा विचार हुआ कि मैं अपने साथ उसका जीवन नष्ट न करूँ, बल्कि यह देख कर खुश रहूँ कि वह खुश रहे। मेरे विचार से उसका बेहतरीन जोड़ा जमाल हो सकता है। परन्तु वह अपने रंग में किसी और तरफ बहक रहे हैं।"

नजमा की वालदा अब तक तो खैर, शिष्टाचारवश शरफ़ के यह शब्द सुन रही थी, परन्तु जमाल के विषय में यह अर्थ भरा वाक्य सुनकर गोया चौंक पड़ी—"अपने रंग में बहक रहे हैं ? कैसा रंग...! बेटा, बात करते हो तो साफ-साफ़ करो। मुझे यह निगोड़ी पहेलियाँ बुझानी नहीं आती।"

शरफ़ ने निश्चित होकर कहा—"कोई ऐसी खास बात नहीं है और जो कुछ है वह आप मुझ से क्यों कहलवा रही हैं ? कुछ दिनों बाद खुद मालूम हो जायेगा।"

नजमा की वालदा ने तनिक समीप खिसकते हुये कहा—"आख़िर, बताओ तो सही क्या बात है !"

शरफ़ सज्जनता से बोला—"खालाजान, बात यह है कि यह बात मेरे मुँह से निकल गई तो रवानी में। परन्तु मैं माफी चाहता हूँ कि आप मुझे मजबूर न करें। मैं चुगली करने को अत्यधिक कमीनापन समझता हूँ। वह जो किसी शायर ने कहा है—"मुँह से निकली, हुई परायी बात। जमाल तक यह बात पहुंची तो वह मुझे क्या कहेगा कि हमने अच्छी घड़ी राज़दार बनाया था।"

नजमा की वालदा की बेचैनी बराबर बढ़ रही थी। रहस्यमय ढंग

से कहने लगी—"ऊंह, तो क्या मैं किसी से कहने बैठूंगी ? आखिर बात क्या है, बताओ तो सही !"

शरफ़ जैसे तंग आते हुये बोला—"आप तो खालाजान, एक बात के पीछे पड़ जाती हैं। एक अंग्रेज लड़की है मिस मैबुल। उसी से कुछ गड़बड़ है।"

नमा की वालदा अब भला कैसे सहन कर लेती ! तफ़सील की खोज शुरू हो गई—"गड़बड़...? कैसी.....? बताओ तो सही कैसी .... ! तुम्हें मेरी कसम, जो कुछ छिपाया !"

शरफ़ ने जैसे कठिनाई से कहा—"लाहौल विला कूव्वत। बेकार मेरे मुंह से यह बात निकली खालाजान ! गड़बड़ आखिर कैसी होती है। विलायत से दोनों के अहदो-पैमान हो चुके हैं और बहुत शीघ्र ही विवाह भी हो जायेगा। परन्तु जमाल नजमा का दिल तोड़ना भी नहीं चाहते थे। अब आजकल मिस मैबुल को यह पट्टी पढ़ा रहे हैं कि मुसलमानों में चार शादियें तक हो सकती हैं और शौहर (पति) सब का बराबर ध्यान रख सकता है। मतलब, वह तैयार हो जायें तो पहले नजमा....."

नजमा की वालदा ने बात काट कर कहा—"चलो हटो। नजमा ऐसी गिरी-पड़ी नहीं है कि जमाल के अतिरिक्त उसे वर ही न मिल सके। मैं पृथ्वी-आकाश एक कर दूंगी और जमाल की यह चाल कभी भी सफल न होने दूंगी !"

नजमा की वालदा ने जोश में आकर यह बात तनिक ऊँची आवाज़ में कही थी, जो नजमा के कानों तक पहुची और बाद की चर्चा उसने दरवाज़े की आड़ से सब सुन ली। शरफ़ ने अपनी खाला के इस जोश को दिखावटी रूप से ठंडा करने के लिए कहा—"परन्तु यह तयशुदा बात

थोड़े ही हैं कि जमाल ऐसा ही करेंगे ! वह बेचारा तो स्वयं इस उलझन में फँसा है कि क्या करे, क्या न करे। मिस मैबुल से उसे वास्तव में प्यार है। वह किसी भी तरह उसे नहीं छोड़ सकता। इधर नजमा की कोमल भावनाओं का भी उसे पूरा ध्यान है।"

नजमा की वालदा ने आगबबूला हो कर कहा—"ऐसा ही है तो वे नजमा को बख्शें। नजमा पर दया दृष्टि रखने की कोई आवश्यकता नहीं ! वह मेरी लड़की पर यह आरोप भी लगा रहे हैं कि इसके हृदय में कोमल भावनायें हैं ! वह शौक से मेम को लायें या किसी और को !"

शरफ़ बोला—"देखिये, मैं इसीलिये आपको कुछ न बताना चाहता था कि आप को अकारण ही गुस्सा आ जायेगा। अच्छा, आप यह समझ लीजिये कि मैंने कुछ नहीं कहा है। वह बेचारा तो स्वयं ही मुझ से कह रहा था कि मैबुल और नजमा दोनों में से किसी को नहीं छोड़ सकता !"

नजमा की मौसी क्रोध के वशीभूत हो कुछ और ही कहने लगी थी कि अचानक मौलवी अब्दुल समद साहब के उस तरफ आने पर मौन रह गयी और क्योंकि 'लाहौल' के बाद शैतान को भी भाग निकलने के भी मार्ग मिल जाता है, इसलिये शरफ़ वहाँ अधिक देर न ठहर सका और कहीं जाने का बहाना बना उसने विदाई की आज्ञा माँगी और इस प्रकार उसकी अभिलाषा का एक भाग बहुत ही सफल रहा। मौसी और मौसा को सादर प्रणाम कर वहाँ वह से चलता बना।

छः

***

जिस दिन उपर्युक्त घटना घटी थी; संयोगवश उसी दिन मिस मैबुल और डैनियल को नजमा ने चाय पर बुलाया था। तारा, रजिया एवं नाहिद के अतिरिक्त जमाल भी आने वाला था। परन्तु इन सबों के आने से पूर्व ही शरफ नये गुल खिला गया था। नजमा खैर, अपनी माँ की नाईं कान की इतनी कच्ची तो नहीं थी, जो शरफ़ की बातों का विश्वास करती। हाँ, उसे यह चिन्ता अवश्य हो गई थी कि शरफ़ की गुफ्तगू ने उसकी माँ की राय जमाल की तरफ से ख़राब कर दी है। और संभव है कि आज जमाल के प्रति उनका व्यवहार कुछ बदला हुआ सा हो। यदि जमाल को ऐसा महसूस हुआ तो वह निश्चय ही बुरा मानेगा। वह इसी उधेड़-बुन में थी कि तारा, रजिया और नाहिद आ पहुँची। और इन तीनों से मिल कर वह शरफ़ की इस कूटनीति को क्षणभर के लिए भूल गई। इस पर भी उस का चित्त व्याकुल था। वह चाहती थी कि यह बात अपनी हमजोलियों को बता दे। शरफ़ से सम्बन्धित सारी बाते वैसे भी इन तीनों को ज्ञात थी। और शरफ़ का व्यक्तित्व उनकी दृष्टि में मनोरंजन का माध्यम था। नजमा न जब ऐंट्रेंस पास किया और बेचारा शरफ़ फेल हुआ तो रजिया ने एक मिसरा भी लिखा था—

"तालीम में भी फीस की कुछ पेश न आई,
और ,मुंह ही की खाई।

दो-चार क़दम आगे हो लैला नज़र आई,
उल्फत की दोहाई ॥
वो पास हों या फेल हों, क्या यह कम शरफ़ है,
दिल इस पे हदफ है।
वहशत मगर अब क़ैस के सर में यह समाई,
कैसे हो सगाई ॥

यह मिसरा बहुत अजीब था और बहुत दिनों तक पढ़ा गया। इसके पश्चात इन सबको यह मालूम था कि शरफ़ के फेल होने पर भी उसकी माँ शादी के लिए बराबर प्रयत्नशील थी। चुनाचे सब मिल कर नजमा को छेड़ा करती थीं कि शरफ़ को पति के रूप में ना सही तो शिष्यके रूप में ही स्वीकार कर लो। शादी नहीं तो ट्यूशन ही सही। संक्षेप में यही कि शरफ के बारे में सब की वही राय थी जो नजमा की थी। और यही कारण था कि नजमा आज का किस्सा तीनों को सुना कर अपने दिल का भार किसी सीमा तक कम करना चाहती थी। अन्त में उसने सोच-विचार कर तारा से कहा—"तारा, मिठाई खिलाओ तो एक शुभ समाचार सुनाऊँ!"

तारा ने गुलदस्ते सजाते हुये उत्तर दिया—"लीजिये! और सुनिये! दावत आपके यहाँ है और मिठाई हम खिलायें! मिठाई भी तुम्हीं खिलाओ नजमा और शुभ समाचार भी तुम्हीं सुनाओ!"

नजमा मुस्करा कर कहने लगी—"आज वह सज्जन तशरीफ लायें थे, शरफ साहब।"

रजिया साश्चर्य बोली—"अच्छा, तो अब उनका आगमन तारा के लिये प्रसन्नता का कारण न बन कर तुम्हारी प्रसन्नता का विषय बन गया है।"

नाहिद को शरफ के ज़िक्र से सदैव उलझन सी होती थी। अतः

वह घृणायुक्त स्वर में बोली—"उनका क्या है ! थाली के बैंगन तो हैं ही। इधर लुढ़क गये होंगे।"

तारा नजमा की नाईं चुप रहने वाली तो थी नहीं। कानों पर हाथ रख कर कहने लगी—"अल्लाह ना करे, उनका रुख इधर हो।"

नजमा ने हंस कर कहा—"नहीं भई, यह बात नहीं है; बल्कि वह तो आज एक शुभ समाचार सुना गये हैं कि मैबुल तारा की भाभी बनने वाली है।"

रजिया शीघ्रता से बोली—"सच···?"

नाहिद पुनः उपेक्षा से बोली—"चलो हटो ! शरफ ने कभी भूल कर भी सच बोला है या यही बात सच्ची होगी !"

तारा ने सब काम छोड़ आकुलता से पूछा—"बताओ तो सही, शरफ ने क्या-क्या कहा है ?"

नजमा ने चपके से इन तीनों को वह चर्चा सुना दी, जो उसने शरफ और अपनी अम्मीजान के बीच सुनी थी। हाँ, बीच में से अपने से सम्बन्धित जिक्र अवश्य निकाल दिया था। कुछ इशारे इसलिये निकाल दिये कि उनके विषय में बोलने से उसकी अम्मी की गुस्सैली प्रकृति की झलक मिलती थी। यह सम्पूर्ण किस्सा सुनकर तारा आवेश में आ गई, कहने लगी—"यह बात है ! अभी तो कहूँ कि भाई जान आखिर मैबुल से इतनी मीठा-मीठी बातें क्यों करते हैं ! जो ध्यान मैबुल पर दिया जाता है, उससे डैनियल क्यों वंचित है ! मैं तो उस कमबख्त से मिलना तक बंद कर दूँगी।"

नजमा ने कहा—"पागल हुयी हो ! वह शरफ···"

नाहिद बात काटती हुयी बोली—"अरे, मैं फिर कहती हूँ, वह एक

नम्बर का झूठा है। देखती नहीं हो, उसके मुँह से फूल झड़ते हैं! जमाल भाई का यदि ऐसा इरादा होता तो उन्हें डर किस का था, जो सबसे छिपाते!"

रजिया भी ताईद करते हुये कहने लगी—"अरे, बात कुछ नहीं है। किस्सा यह है कि अब शरफ़ को यह सूझी है कि खुद तो कामयाब हो नहीं सकते, अतः क्यों न जमाल भाई को बदनाम कर उनकी राह में काँटे बोये जायें! और खालाजान (मौसी जी) भी खूब हैं कि जान-बूझ कर भानजे शरीफ की बातों में आ गयीं।"

नजमा ने कहा—"पहली बात तो यह है कि हमारी अम्मा हर एक की बात का विश्वास कर लेती हैं। दूसरे, मैं अब तुम लोगों को क्या कहूँ कि शरफ उन्हें प्रभावित करने के लिये कैसी-कैसी 'एक्टिंग' करता है। मैंने उसे आज से अधिक चतुर कभी नहीं देखा।"

तारा बोली—"यदि यह बात वास्तव में झूठी सिद्ध हुयी तो देखना शरफ़ साहब की कैसी गत बनाती हूँ! मैं तो आज ही भाईजान से सारा किस्सा पूछ कर रहूँगी।"

नजमा, तारा को ऐसा करने के लिये मना करने ही वाली थी कि जमाल, और उसके साथ मैबुल और डैनियल भी वहीं आ विराजे। और तब इस गोष्ठी का गंभीर वातावरण क़हक़हों के शोर से कुछ का कुछ बन गया।

जमाल ने उस स्थान में प्रवेश करते ही देर से आने की क्षमा याचना की—"मेज़बान साहब! हम मेहमानों को माफ फरमायें, हालाँकि हम 'टी पार्टी' से भी आवश्यक काम यानि 'ब्रिज' खेलने में व्यस्त थे। और यह स्वाभाविक है कि ब्रिज को समाप्त होने से पहले छोड़ा नहीं जा सकता। इसलिये....."

मैबुल ने बात काट कर कहा—"ब्रिज का तो खैर, बहाना है।

परन्तु वास्तव में बात यह है कि आज जिस ढंग (स्टाईल) के बाल यह डैनियल बना रही थीं, उसमें इन्हें कई बार असफलता मिली।"

डैनियल ने झेंपते हुये कहा—"कोई विशेष ढंग के बाल न बना कर मैं तो नजमा के जैसे सीधे-साधे रूप में इन्हें ढालने की कोशिश कर रही थी, लेकिन बालों ने दाँव नहीं दिया।"

नजमा हँसते हुये कहने लगी—"टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चलने वाले को सीधे रास्ते पर लाना भी कठिन हो जाता है। आखिर बाल बेचारे जो हमेशा से पेंचो-ख़म के अभ्यस्त हैं, एक दम से कैसे सीधे हो जाते!"

जमाल ने शरारत से कहा—"समझीं मिस डैनियल! इन के कहने का मतलब यह है कि तुम बाँकी हो।"

नजमा ने अपना आशय पूर्ण करने के भाव से कहा—"देखिये, ग़लतबयानी ना कीजिये! मेरा अभिप्राय मिस डैनियल स्वयं समझ गई होंगी। आपको बहकाने की आवश्यकता नहीं है।"

मैबुल ने नजमा का साथ देते हुये कहा—"डैनियल को जमाल नजमा के विरुद्ध नहीं बहका सकते। हम लोगों को जमाल से अधिक नजमा की बात पर विश्वास है कि वह कभी भी ऐसी बात मुँह से नहीं निकालेंगी जिसे आक्रमण या ताना कहा जा सके!"

रजिया कदाचित इस वाद-विवाद से उकता गयी थी। उसने बात काटते हुये कहा—"मेरी राय यह कि अब अगर आप सब चाय पर तशरीफ ले चलेंगे तो मेरे मेदे पर आप सबों का एहसान होगा।"

नाहिद तत्परता से बोली—"साथ ही चाय पर भी एहसान होगा, जो कि ठंडी होती जा रही है।"

यह सजीव समूह पहले तो चाय पर पहुँचा। इसके बाद पर्देदार लॉन में सबने OPRHION नामक एक रुचिकर खेल खेला। इस

खेल में एक व्यक्ति को दूर भेजा जाता था। उसकी अनुपस्थिति में उपस्थित सब लोग उसके बारे में भिन्न-भिन्न राय कायम करते थे। और तब एक दूसरे को बता देता था कि उसकी राय यह है। फिर उस अनुपस्थित व्यक्ति को बुला कर बताया जाता था—कि तुम्हारे बारे में इतनी रायें कायम की गयी हैं। बताओ, कौनसी राय किस व्यक्ति की हो सकती है ?

यदि वह व्यक्ति राय देने वाले का सही नाम बता दे तो राय देने वाला चोर बना दिया जाता था। और तब उसके सम्बन्ध में राय कायम की जाती थीं। बूझने वाले को तीन अवसर दिये जाते थे। यदि वह इन तीनों में से किसी एक अवसर पर ही सही परिणाम पर पहुँच जाता तो खैर, नहीं तो उसे दोबारा चोर बनना पड़ता था।

सब से पहले नजमा चोर बनी। उसको दूर भेज कर उस के बारे में रायें कायम की गयीं। मिस मैबुल ने कहा—"मेरी राय में नजमा एक सर्व-गुण-सम्पन्न बाला है।"

मिस डैनियल ने कहा—"नजमा का हृदय उसके चेहरे से भी सुन्दर है।"

तारा ने कहा—"नजमा एक पहेली है।"

रजिया ने कहा—"नजमा अपनी आयु से अधिक वृद्धा है।"

नाहिद ने कहा—"नजमा एक मशीन की (नाई) हर बात की पाबन्द है।

जमाल ने कहा—"नजमा एक शेर है जो कहा न गया हो।"

इसके बाद नजमा को आवाज दी गयी। और मिस मैबुल ने घोषणा की—"आप के विषय में जो शब्द प्रयोग किये गये हैं—वह यह हैं। आप एक सर्वगुण सम्पन्न बाला हैं, आप अपनी आयु से

अधिक वृद्धा हैं, आप एक पहेली हैं, आप का हृदय आप के चेहरे से भी सुन्दर है, आप एक शेर हैं जो कहा न गया हो, आप मशीन की तरह हर बात की पाबन्द हैं।"

नजमा ने इन शब्दों को बार-बार सुन कहा—"देखिये, मैं एक पहेली हूँ, यह शब्द जमाल भाई के हैं।"

सब का सम्मिलित स्वर गूँज उठा—"ग़लत ! ग़लत !!'

जमाल बोला—"दो अवसर और हैं। वर्ना फिर आप को ही चोर बनना पड़ेगा !"

नजमा ने फिर ध्यान दिया और कहा—"मैं अपनी आयु से अधिक वृद्धा हूँ, यह राय जमाल भाई की है।"

फिर सब ने शोर बुलन्द किया—"ग़लत ! गलत !!"

जमाल ने कहा—"क्यों ! मैं ही रह गया चोर बनने को। बहरहाल, आखिरी मौका है।"

नजमा अब की बार बहुत देर तक विचार करती रही और तब उसने कहा—"अच्छा, अब सुनिये ! मैं एक शेर हूँ जो कहा न गया हो; यह राय जमाल भाई की है।"

सब ने तालियाँ बजा कर जमाल के चोर बनने की घोषणा कर दी और साथ ही साथ यह तय हुआ कि चोर को केवल दो अवसर दिये जायेंगे; क्योंकि खिलाड़ियों की संख्या कम है। जमाल को दूर भेज दिया गया। और उसके बारे में भिन्न-भिन्न रायें एकत्रित की गयीं।

मैबुल ने कहा—"जमाल साहब बेफ़िक्र हैं।"

तारा ने कहा—"भाई जान क्वाँरे हैं।" (इस पर सब हँस पड़े।)

नजमा ने कहा—"जमाल भाई दिलचस्प हैं।"

रजिया ने कहा—"जमाल साहब विलायती हैं।" (फिर सबको हँसी आ गयी।)

डैनियल ने कहा—"जमाल बच्चा है।" (इस पर सबों ने क़हक़हा लगाया।)

नाहिद ने कहा—"जमाल साहब शरीफ आदमी हैं।"

रायें व्यक्त हो चुकने पर जमाल को पुकारा गया और मिस मैबुल ने इस प्रकार उसे बताया। "आप के विषय में यह शब्द प्रयोग किये गये हैं। आप शरीफ आदमी है·····"

जमाल ने बीच में ही मैबुल की बात काटी—"वाह···वाह कितनी नेक राय है!"

मिस मैबुल ने डाँट कर कहा—"देखिये! हस्तक्षेप मत कीजिये!" फिर वह उससे बोली—"दूसरी राय यह है कि आप क्वाँरे हैं, तीसरी राय यह है कि आप दिलचस्प हैं, चौथी यह है कि आप बेफिक्र हैं, पाँचवीं यह कि आप विलायती हैं और छठी यह कि आप बच्चे हैं।"

जमाल ने इधर-उधर देखते हुये बन कर कहा—"क्या वालदा साहबा को भी इस खेल में शामिल किया गया है?"

तारा ने कहा—"क्या मतलब?"

जमाल बोला—"यह बच्चे वाली राय कुछ ऐसी ही है।'

उसकी इस बात पर सब हँसते रहे। आखिर मैबुल को ऊँचे स्वर में कहना पड़ा—"आर्डर-आर्डर। जमाल, तनिक गभीर बनना सीखो!"

जमाल ने फिर एक बार अदब से खड़े हो कर सारी रायें मालूम की और तब विचारते हुये बोला—"जमाल विलायती है, यह राय नजमा की है।"

सबों ने चीख कर कहा—"ग़लत! ग़लत!!"

जमाल फिर कुछ सोचने के बाद बोला—"मैं शरीफ आदमी हूँ; यह राय नजमा की हो सकती है।"

इस पर पुनः सबने बताया कि यह गलत है और जमाल को दूसरी बार चोर बनना पड़ा। इस खेल में आखिर तक जमाल ही ज्यादातर चोर बनता रहा। जीत में केवल नाहिद रही, क्योंकि उसे एक बार भी चोर नहीं बनना पड़ा। अतः उस दिन की 'क्वीन' (रानी) की पदवी उसी को मिली। संध्या समय तक यह खेल होता रहा। उसके बाद तारा को छोड़ कर सब अपने-अपने घर चले गये। तारा को नजमा ने अपने पास रोक लिया था।

सात

*****

पति-पत्नी जब वृद्ध हो जाते हैं तो अपनी जवानी की अपेक्षा वे अपनी औलाद के किस्सों और कहानियों में दिलचस्पी रखना आरम्भ कर देते हैं और स्वयं आपस में ऐसी थकी हुई सी चार्ता करते हैं कि सुनने वाले को कभी विश्वास ही नहीं हो सकता कि इन दोनों में भी कभी प्रेम-प्रणय की या उमंगों भरी बातें हुई होंगी।

विशेषतया मौलवी अब्दुल समद और उनकी पत्नी के बीच ऐसी ही बातें होती थी। गोया, एक दूसरे को बहुत दूर से पुकार रहे हों। न तो मौलवी उनकी कोई बात समझते थे और न ही बेगम साहिबा अपने पति की बात समझ पाती थी। परन्तु आज बेगम साहिबा को मौलवी साहब से अत्यन्त आवश्यक चर्चा करनी थी। वे मौलवी साहब को कुछ समझाना चाहती थीं और उन्होंने स्वयं किसी निर्णय पर पहुँचने की ठान ली थी। अतः एक रात को जब मौलवी साहब खाने के बाद नमाज़ से निवृत्त होकर हुक्का सुलगा कर निन्द्रा देवी की शरण में जाने के विचार से आँखें मूँदे लेटे थे कि अचानक उन्हें बेगम साहिबा का स्वर सुनाई दिया—"मैंने कहा, क्या सो गये ?"

मौलवी साहब तत्क्षण चौंके और बोले—"क्या, मुझ से कुछ कहा गया है बेगम साहिबा ?"

बेगम साहिबा ने पान उनके हाथ में थमाते हुये कहा—"लो पान! मुझे कुछ तुम से कहना है।"

मौलवी साहब ने पान मुँह में रख कर फरमाया—"क्या इसी वक्त कुछ कहना है ?"

बेगम साहिबा ने कहना आरम्भ कर दिया—"कहना यही है कि अपने भतीजे साहब के भी कुछ रंग मालूम हैं ? सुना है किसी मेम से शादी करने वाला है !"

मौलवी साहब ने अब पूरी तरह ध्यान देते हुये कहा—"मेम····· यानी अँग्रेज औरत···? हाँ, तो तुम क्या कहं रही थीं ?"

बेगम साहिबा जल कर बोलीं—"तोबा है, मैं तो यह कह रही थी कि जमाल यहाँ एक मेम से शादी कर रहे हैं।"

मौलवी साहब ने आश्चर्य से पूछा—"अच्छा ! कब हो रही है शादी यानी सगाई ?

बेगम बोलीं—यह तो मुझे नहीं मालूम। मगर सुना है बिल्कुल तय हो चुकी है।"

मौलवी साहब ने तर्क को प्रश्रय दिया—"किस से सुना है ? कहने का अभिप्राय यानि मतलब यह है कि इस समाचार पर किस सीमा तक विश्वास किया जा सकता है !"

बेगम साहिबा ने विश्वास दिलाते हुय कहा—"आज शफ़ीक़ आया था !"

मौलवी साहब आगबबूला हो गये और उन्होंने बात काट कर कहा—"हूँ, तो उस कमीने ने, उस कमबख्त, उस बेईमान ने पहुँचाई है यह खबर तुम तक ! यह ख़बर बेपर की है और इस को लाने वाला भी अविश्वस्त है। तुमने आखिर यह बात मुझ से क्या समझ कर कही है ?"

बेगम साहिबा, मौलवी साहब को चुप कराते हुये कहने लगीं—"बस, शुरू हो गई तुम्हारी बड़बड़ ! पहले पूरी बात तो सुन लिया करो।"

मौलवी साहब अपनी बात पर दृढ़ रहते हुये बोले—"सब बकवास है·····झूठ है। मैं कहता हूँ इस लाग-लपेट की बात पर ध्यान देना किसी समझदार व्यक्ति के लिये सिवाय समय नष्ट करने के और कुछ नहीं !"

बेगम साहिबा कुछ डाँटने के भाव से बोलीं—"अच्छा, ज़रा धीरे-धीरे बोलो। लड़कियाँ बराबर वाले कमरे में सो रही हैं। तुम तो एकदम ही आगबबूला हो जाते हो। शरफ़ कमबख्त तो स्वयं इस बात को छिपा रहा था, अचानक उसके मुँह से एक बात निकल गई तो मैंने कुरेद कर पूरा हाल मालूम कर लिया।"

मौलवी साहब ने कहा—"जमाल की अंग्रेज़ियत, नास्तिकता और उसके पश्चिमी रंग में डूबे रहने से मैं स्वयं परेशान आ गया हूँ। लेकिन इतना सब कुछ होते हुये भी तुम्हें समझ लेना चाहिये कि यह शख्स, जो तुम्हारा अत्यन्त प्रिय और स्नेही है अर्थात् शरफ़; हाँ, तो शरफ़ को कोई अधिकार नहीं कि वह जमाल पर इस तरह के दोष लगाये। जमाल में बहुत से अवगुणों का होना सम्भव है, परन्तु वह विश्वास-घाती और झूठा नहीं है। अगर वह इस तरह की शादी करना चाहता तो विलायत से शादी कर आता ! क्या समझीं·····!"

बेगम साहिबा उन्हें समझाने लगीं। "वह तो मैं भी समझती हूँ। मगर खुदा के लिये मेरी बात तो सुन लो ! शरफ़ आज यह कहने आया था कि उसने नजमा से विवाह करने का जो प्रयत्न किया था; वह उसकी भूल थी और अब वह खुद इस बात पर शर्मिन्दा है।"

मौलवी साहब ने इस बात को कोई अहमियत दिये बिना कहा—"यह एक दूसरी बहस है। इस से जमाल की एक अँग्रेज़ औरत से शादी की ख़बर का कोई सम्बन्ध नहीं !"

बेगम साहिबा ने अधिक समीप आते हुये कहा—"वो मैं बताती हूँ कि इस ख़बर का क्या सम्बन्ध है। शरफ अपनी ग़लती स्वीकार

करने के बाद कहने लगा कि नजमा और जमाल का सुन्दर जोड़ा है। परन्तु जमाल एक अँग्रेज लड़की से जिसका नाम मैबुल है; शादी करना चाहते हैं। साथ-साथ यह भी चाहते हैं कि नजमा का दिल न टूटे। इसलिये उस अँग्रेज लड़की को आजकल यह समझा रहे हैं कि मुसलमानों में चार शादियें तक हो सकती हैं।"

मौलवी साहब ने समझने के भाव से कहा—"गोया·····गोया वो यह चाहते हैं कि उस लड़की और नजमा दोनों के साथ शादी करें···? नामुमकिन·····बिल्कुल नामुमकिन·····अगर जमाल ने यह बात कही तो नामुमकिन, अगर शरफ़ ने ऐसी खबर दी है तो भी नामुमकिन। बस, मैंने कह दिया कि नामुमकिन·····!"

बेगम साहिबा ने चिढ़ कर कहा—"बस, तुम मुमकिन और नामुमकिन कहे जाओ! मैं कहती हूँ, आखिर कोई निर्णय क्यों नहीं करते? कब तक लड़की को यों ही बिठाये रखोगे! तुम्हारे कहने से मैंने शरफ़ का जिक्र छोड़ा। अब तुम भी सुन लो कि जमाल की तरफ से या तो इत्मीनान पूरा हो जाये, नहीं तो मेरी लड़की भी सौंकने-समेटने के लिये नहीं है।"

मौलवी साहब विचित्र भाव से बोले—"ऊँह, क्या बेकार की सी बकवास है। लेकिन तुम्हें मेरी पत्नी की हैसियत से इस तरह की साधारण सी बात नहीं करनी चाहियें। मैं पचास बार कह चुका हूँ कि अब्दुल अहद (जमाल के पिता) और मुझ में कोई अन्तर नहीं है। वह नजमा को इतना प्यार करते हैं कि यदि उन्हें खुदा-न-ख्वास्ता जमाल के विषय में कोई शंका हो गई, तो वह स्वयं नजमा की शादी जमाल से न होने देंगे·····बल्कि·····बल्कि·····खैर, जो बात मैं कहने वाला था; असामयिक और निराधार है। तो मेरा मतलब है कि·····कि·····कितने बजे होंगें?"

बेगम साहिबा जली हुई तो पहले से ही थी; कह दिया, "मुझे नहीं मालूम। बजे होंगे ग्यारह !"

मौलवी साहब ने कहा—"अस्सलाम वाले कुम।" और करवट ले कर मुँह दूसरी ओर कर लिया। उनकी पत्नी बहुत देर तक बुड़-बुड़ाती रहीं, परन्तु मौलवी साहब ने कुछ ही क्षण पश्चात खर्राटे लेने आरम्भ कर दिये।

मौलवी साहब और उनकी पत्नी के वाद-विवाद को नजमा और तारा चुपके-चुपके सुन रही थी। नजमा ने तारा को वास्तव में इसीलिये रोका था कि उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि शरफ़ जो गुल खिला गया है; उसका परिणाम यह अवश्य होगा कि यह वात उसके बाप से कही जायेगी। अतः मौलवी साहब और अपनी अम्मी जान के सो जाने के पश्चात नजमा ने तारा से कहा—"यही तमाशा दिखाने के लिए मैंने तुम्हें रोक दिया था। कहो, कैसा आनन्द आया ?"

तारा ने कहा—"तुम इसे आनन्द कह सकती हो, किन्तु मेरा तो खून खौल रहा है। जी चाहता है शरफ़ के बच्चे की वो गत बनाऊँ कि उसकी तोबा बोल जाये। लेकिन बड़ी अम्मा को आखिर, यह क्या हो रहा है ?"

नजमा मुस्कराते हुये बोली—"उनके स्वभाव से तो तुम भली-भाँति परिचित हो कि ज़रा सी बात कोई उनके कानों में डाल दे; बस, उनके दिल में पैठ जाती है। अभी तो तुमने देखा ही नहीं है, इस बात पर उनकी अब्बा मियाँ से खुदा जाने; अभी कितनी झड़प और होगी।"

तारा ने कहा—"बहन, चाहे तुम मुझे मार डालो; मगर मैं यह बात अम्मी जान से अवश्य कहूँगी कि मैं एक तमाशा देख कर आयी हूँ।"

नजमा ने स्नेह से कहा—"खुदा के लिये ऐसा गज़ब कभी न करना! चची अम्मा और अम्मी बी के बीच बहुत बड़ा झगड़ा हो जायेगा। यदि कहना ही है तो इसका ज़िक्र जमाल भाई से कर देना। वह फिर भी ठंडे दिल से इस बात को सुन कर इस षड़यन्त्र के प्रति सतर्क हो जायेंगे। ख़बरदार, जो यह बात तुमने किसी और से कही! अच्छे दिल इसी तरह बुरे हो जाते हैं।"

कुछ देर तक दोनों में बातें होती रहीं। आखिर निद्रा ने दोनों को इस उलझन से छुटकारा दिया।

आठ

*****

जमाल ने जिन अच्छे अंकों से कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की था, उसके बिना आजकल वकील या बैरिस्टर बनना ही वृथा है। इसलिये कि वकीलों और बैरिस्टरों की संख्या इस सीमा तक पहुँच चुकी है कि मुक़द्दमा दायर करने वालों की संख्या भी इतनी नहीं है। मुवक्किलों और वकीलों की संख्या का अनुपात यह हो गया है कि 'पचास वकील प्रति मुवक्किल' का तमाशा कचहरियों में नज़र आता है। गोया कि शक्कर के एक-एक कण पर पचासों चिऊँटियाँ चिपटी रहती हैं। इन असंख्य वकीलों में से चन्द सौभाग्यशालियों की ही वकालत चला करती है। बाकी बेचारे स्वयं चला करते हे और थका करते हैं। परन्तु जमाल के हिन्दुस्तान पहुँचने से पहले ही उसकी प्रसिद्धी यहाँ पहुँच चुकी थी। वह अपने देश में ही नहीं, बल्कि विलायत में भी भारतीय योग्यता और विद्वता के झंडे गाड़ कर आया था। और उसने अपने तमाम विलायती साथियों को ऐसी पराजय दी थी कि परीक्षा की परिणाम सूची में सबसे पहला नाम उसी का था। एक भारतवासी का नाम, जिसको देख कर उसके साथी ही नहीं—वरन् विलायत के समाचार पत्र भी दाँतों तले ऊँगली दबा रहे थे। वर्ना बैरिस्टरी पास करने अनेकों हिन्दुस्तानी जाया करते हैं—जाते हैं और चले आते हैं। किसी को कानों-कान खबर भी नहीं होती। किन्तु जमाल गया था गुमनाम, और वापिस आया है प्रसिद्धि लेकर। विलायत के अखबारों में अपने चित्र छपवा कर, विलायती तबकों में अपनी धाक जमा कर। अतएव हिन्दुस्तान

पहुँच कर भी उसे अपने लिये कार्य का क्षेत्र बनाने में अधिक कठिनाईयें नहीं हुई, वरन् बना-बनाया कार्य-क्षेत्र मिल गया। उसका लखनऊ पहुँचना ही था कि युनिवर्सिटी के कानूनी लेक्चरार का ओहदा उसे पेश किया गया और इस बात पर ज़ोर दिया गया कि जमाल उस ओहदे को स्वीकार कर ले। ऐसा करने के साथ ही जमाल ने अपना एक बाक़ायदा दफ्तर बना कर पहले तो एक सुप्रसिद्ध बैरिस्टर साहब के साथ प्रेक्टिस शुरू की। बाद में स्वयं उसका काम इतना बढ़ने लगा कि उसे अपने सहायक वकील रखने पड़े। इतनी जल्दी ऐसी सफलता बड़ों-बड़ों को नहीं मिलती जो इस ताजे विलायती को प्राप्त हुई। परिणाम यह हुआ कि उसके समय का बहुत कम भाग ऐसा था, जिसे बेकार कहा जाये। कचहरी और युनिवर्सिटी से जो समय बचता था, उसे जमाल मनोरंजन के विलायती साधनों में व्यतीत कर देता था। उदाहरण के लिए प्रातः नौ बजे के लगभग 'बैड टी' लेता था। तत्पश्चात शेव करना, स्नान करना और ब्रेक फास्ट। इसी बीच कचहरी का समय हो जाता था। कचहरी से 'लंच' के लिये आता था और तीसरे पहर की 'टी' 'बार रूम' में होती थी। वहीं टैनिस की वेश-भूषा पहुँच जाती थी और टेनिस लॉन पर ही डिनर सूट मँगाने की भी प्रायः आवश्यकता होती थी। यह वेश-भूषायें क्लब में ही बदल दी जाती थीं। परन्तु इतना व्यस्त रहने पर भी वह प्रायः टेनिस की नागा कर के नजमा के यहाँ हो आता था।

आज भी लगभग यही विचार कर वह कचहरी से घर आया था, ताकि हाथ-मुँह धोकर कपड़े बदले और नजमा के यहाँ चला जाये। परंतु तारा उसकी राह देख रही थी। तारा ने अब तक शरफ़ वाली बात खुदा जाने, किस तरह ज़ब्त कर रखी थी। जमाल को देखते ही वह बोली—"भाई जान! मुझे आप से बहुत जरूरी बात कहनी है।"

जमाल ने बात का वज़न तोले बिना कहा—"तो फिर मेरे साथ नज़मा के यहाँ चलो। रास्ते में ही बातें हो जायेंगी।"

तारा ने इन्कार करते हुये कहा—"जी नहीं, अब्बल, तो मैं थोड़ी देर पहले ही कल की गयी हुयी नजमा के यहाँ से आई हूँ। दूसरे, जो बात मैं कहना चाहती हूँ, वह नजमा के सामने नहीं कही जा सकती।"

जमाल कहने लगा—"तो अच्छा, मेरे कमरे में चल कर बैठो। मैं अभी हाथ-मुँह धो कर आता हूँ।"

तारा ने जमाल के ड्राईंग रूम में बैठ कर शरफ के सम्बन्ध में न मालूम क्या-क्या सोचा—इस तरह भाई जान से कहूँगी कि दगाबाज मक्कार शरफ़को मज़ा चखायें और यों उसकी खबर लें। किन्तु जमाल के आने के पश्चात जब तारा ने सारा किस्सा उसे सुनाया—किस तरह शरफ़ ने बड़ी अम्मा के कान भरे और फिर बड़ी अम्मा ने किस तरह उसकी बातों पर विश्वास कर बड़े अब्बा से तमाम बातें कहीं, तो जमाल ने सब-कुछ सुनने के पश्चात एक क़हक़हा लगा कर अपने विलायती अंदाज में कहा—"गरीब शरफ़। उस बेचारे को झूठ बोलना भी नहीं आता। उस व्यक्ति की समानता में दूसरा कौन दया का पात्र सिद्ध हो सकता है! ऐसा व्यक्ति जो विवश हो कर अपराधियों जैसी बातें करे और उस पर भी असफल हो जाये!"

तारा ने जमाल को आश्चर्य से निहारते हुये कहा—"नहीं भाई-जान! आप इसे साधारण बात समझ रहे हैं। आज उसने यह बात कही है, कल खुदा जाने क्या-क्या कहे?"

जमाल ने सिगार सुलगा कर तारा के गाल पर स्नेह से चपत लगाते हुये कहा—"नहीं-नहीं मेरा बिल्ली! ऐसी बातों का बुरा नहीं मानते। यह तो लताफा है और लतीफों का आनन्द उठाना ही चाहिये। मुझे क्या पता था कि शरफ़ इतना दिलचस्प है!"

तारा साश्चर्य बोली—"दिलचस्प आदमी ? यह क्या कह रहे हैं आप भाई जान···?"

जमाल उसी प्रकार मुस्कराते हुये बोला—"तुम देखती रहो ! अब तो मैं उसे ऐसा दिलचस्प आदमी बना दूँगा कि तुम सब झूम उठोगी। सच्ची बात तो यह है कि वह बेचारा अपने दिल से मजबूर है। मुहब्बत की तो ख़ैर, उसमें क्षमता ही नहीं है। इसलिये कि बेवकूफ आदमी मुहब्बत कर ही नहीं सकता। हाँ, वह यह अवश्य चाहता है कि उसकी शादी नजमा से हो जाये और चूँकि मौलवी अब्दुल समद साहब··· वे···यानि मेरा मतलब यह है कि बड़े अब्बा इस सम्बन्ध में अपनी अस्वीकृति दे चुके हैं। लिहाजा, वह अपनी दूरदर्शिता से यह समझता है कि मैं उसके रास्ते का काँटा हूँ। हाँलाकि अपने रास्ते का काँटा वह खुद है। नजमा तो ख़ैर, एक ऊँचे दर्जे की हिन्दुस्तानी लड़की है। परंतु मेरे विचार से तो शरफ़ ऐसी दया का पात्र है कि उससे कोई औसत दर्जे की लड़की भी नहीं आकर्षित होगी। कोई भी लड़की किसी बेवकूफ मर्द को पसन्द नहीं कर सकती।"

तारा उसकी बात काट कर कहने लगी—"मगर, भाईजान ! आप तो हमेशा से यह कहा करते थे कि लड़कियों को सबसे अधिक यह काम प्यारा है कि वे लड़कों को बेवकूफ बनाती रहें।"

जमाल ने अपने शब्दों पर ज़ोर देते हुये कहा—"ओह-हो, तुम ग़लत समझीं, बेवकूफ बनाना दूसरी बात है और बन-बनाये बेवकूफ को पसन्द करना दूसरी चीज़ है। लड़कियाँ तो अच्छे-खासे अक्लमन्द लड़कों को बेवकूफ बना कर खुश होती हैं और जब बेवकूफ बना लेती हैं, तो उनसे कतरा जाती हैं। अर्थात जो उनके बनाने से बेवकूफ बन जाय, उसको भी वे साधारणतया पसन्द नहीं करतीं। हाँ, उससे अवश्य मात खाती हैं, जो उल्टा उन्हीं को बेवकूफ बना कर रख दे।"

तारा ने बेबाकी से पूछा—"भाईजान ! आप की तो अभी शादी भी नहीं हुई है। आपको यह अनुभव कहाँ से प्राप्त हुये ?"

जमाल ने विलायती गर्व से कहा—"भोली गुड़िया ! शादी हो चुकी होती तो फिर अनुभव ही कैसे प्राप्त होते ! दूसरे, तुम्हारे इस हिन्दुस्तान में तो किसी को ऐसी बारीक बातों का अध्ययन करने का अवसर ही नहीं मिलता। यहाँ के सब पुरुष बैल और स्त्रियों में से कुछ गायें और कुछ बकरियाँ हैं। बस, इसी से समझ लो कि हिन्दुस्तानी लड़कियों की बेहतरीन किस्म हैं वो, जिनका एक नमूना नजमा है। परन्तु वह पर्दे में, नमाज़ में, रोज़े में, दुपट्टे में और खुदा जाने कितनी धार्मिक प्रथाओं को निभाने में व्यस्त है। अगर नजमा विलायत में होती तो जानती हो क्या करती ?"

तारा ने शरारत से कहा—"फिल्म स्टार बनती।"

जमाल ने इस चोट को गम्भीरता का रंग देकर कहा—"फिल्म स्टार ? तुम फिल्म स्टार को समझती क्या हो ! फ़िल्म स्टार तो वह महान आत्मायें बन सकती हैं, जिन पर एक देश व कौम को गर्व करना चाहिये। फिल्म स्टार एक इतिहास बनाती हैं, वह अपने मुल्क की ज़बान होती है। नजमा में फिल्म स्टार बनने की योग्यता पर्याप्त मात्रा में है। उसे तो ऐसा निराधार वहम है कि ज़रा-ज़रा सी बात पर नाक का कटना महसूस करती है। विलायत में इस तरह की बोदी नाकें नहीं होतीं और न ही इन बातों से शराफ़त का कोई ताल्लुक़ है। योरुप में या अमरीका में एक फिल्म स्टार को वह पदवी या स्थान प्राप्त है, जो इस हिन्दुस्तान में लीडरों और महात्माओं को भी प्राप्त नहीं होता। लोग सही मानों में फिल्म स्टारों को पूजते हैं। फिल्म स्टार के ऑटोग्राफ (हस्ताक्षर) लेने के लिये लोगों को इन्तज़ार करता पड़ता है। वहाँ वही व्यक्ति विद्वान समझा जाता है, जिसकी ऑटोग्राफ बुक में अधिक

से अधिक फिल्म स्टारों के दस्तखत हों। स्वयं मैंने इस अवधि में एक सौ आठ फिल्म स्टार्स के दस्तखत प्राप्त किये।"

तारा ने इस चर्चा से उलझ कर कहा—"खैर, आप तो विद्वान मान ही लिये गये होंगे। लेकिन हमारे यहाँ यह जो नया फिल्म स्टार पैदा हुआ है, उसके दस्तखत हासिल करने का क्या तरीका होगा ?"

जमाल हँसकर कहने लगा—"अब शरफ़ से मित्रता गाँठी जायेगी। मिस मैबुल और मिस डैनियल से उसका परिचय करा दिया जायेगा। और तुम जो आज शरफ के लिए अपने दिल में प्रतिशोध की भावना रखे हुये हो, तुम्हें ही शरफ को अपनी छोटी सी सोसायटी का 'हीरो' मानना होगा। रजिया और नाहिद को शरफ के गुण गाने होंगे। हाँ, इस नमाजी लड़की नजमा के सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं कह सकता कि उसके व्यवहार का रुख कैसा होगा ?"

तारा ने घृणा से कहा—"खैर, मुझे तो आप माफ कीजिये। जिस सोसायटी में शरफ़ जैसा व्यक्ति शामिल हो जाये, वह इस लायक ही नहीं हो सकती कि हम उसके सदस्य रहें।"

जमाल ने उसे समझाया, "तुम्हें इस तरह आवेश में आने की अपेक्षा व्यवहारपटु बनना चाहिये। याद रखो कि प्रतिशोध हमेशा अपने प्रतिद्वन्दी से लिया जाता है। यदि तुम ने शरफ़ से बदला लेना चाहा तो इसका यह अर्थ होगा कि तुम और शरफ़ एक ही दर्जे पर हो। बल्कि शरफ़ किसी सीमा तक तुम से अधिक ऊँचा सिद्ध होगा। क्योंकि तुम बदला लेने पर मजबूर हुई हो। आश्चर्य है कि इस मोटी सी बात को नजमा भी न समझी।"

तारा ने कहा—"जी नहीं ! वह तो हँस रही थी। इन तमाम बातों का तमाशा कह रही थी। और जो शरफ़ की योजना सफल हो जाय तो हमें स्वयं तमाशा बन कर हँसने के बजाय रोना पड़ेगा।"

जमाल ने अपनी 'नाईट कैप' उठाते हुये तारा की पीठ पर एक हाथ मारा और कहा—"अँग्रेजी की एक कहावत है, कुत्ते भौंकते हैं और कारवाँ गुजर जाता है। ऐसी ही एक कहावत मैंने हिन्दुस्तानी या फारसी में बी सुनी है।"

तारा ने कहा—"जी नहीं। वह यह है—मैनोरमी नशाँद सग बाँग बी ज़न्द।"

जमाल ने जाते हुये कहा—"हाँ-हाँ! यही है। बहरहाल, कल का समारोह देखने योग्य होगा। कल मिस मैबुल के यहाँ बड़ा लुफ्त रहेगा। तुम लोगों के अतिरिक्त उस की और भी बहुत सी सहेलियाँ आ रही हैं। मैं शरफ़ को भी पकड़ लाऊँगा। जाओ, तुम मैबुल के लिये बर्थ गाँठ का भेंट तैयार करो।"

कहता हुआ जमाल चला गया और तारा को वास्तव में भेंट देने का ध्यान तब आया।

———

नौ

***

मिस मैबुल का भला पर्दे से क्या सम्बन्ध ! इस नाम की वस्तु न तो उसके देश की सभ्यता ने सिखाई और न उसके माहौल ने दिखाई। परन्तु आज की वर्षगाँठ की पार्टी में केवल पर्दों का ही अच्छा प्रबन्ध न था, वरन् उसने अपने पुरुष मित्रों में से केवल जमाल के अतिरिक्त किसी को भी निमंत्रित नहीं किया था। ताकि नजमा, तारा, रज़िया और नाहिद को कोई असुविधा न हो। उसकी आठ-दस योरूपियन सहेलियाँ अवश्य वहाँ उपस्थित थीं। वास्तव में यह वर्षगाँठ तो एक तरह का बहाना थी। वह तो यों ही जमाल की बहनों और उनकी हम-जोलियों को बुलाना चाहती थी। वर्षगाँठ की पार्टी के सम्बन्ध में वह स्वयं कहा करती थी कि मालूम नहीं वे लोग कौन होते हैं, जो उपहार एकत्रित करने के लिये वर्षगाँठ की पार्टियों का आयोजन करते हैं। उसे ऐसा करना बहुत छिछोरापन लगता था। परन्तु इस छिछोरी बात के लिये डैनियल और जमाल नें मैबुल को इतना विवश किया कि उसे स्वय अपना एतराज अपने सिर ओढ़ना पड़ा।

पार्टी में पर्दे का इस सख्ती से प्रबन्ध देख कर पहले तो उसकी देशवासिनों और सहजातिनों ने आश्चर्य किया; परन्तु जब मैबुल ने नजमा, तारा, रज़िया और नाहिद की विशेषताओं का ज़िक्र उन औरतों से किया, तो उनके मन में इन सबों को देखने की उत्कट अभिलाषा उत्पन्न हुई। और यह उत्सुकता इस कारण चरम सीमा तक नहीं पहुँच

सकी; क्योंकि नियत समय पर यह चारों लड़कियाँ वहाँ उपस्थित हो गयीं।

नजमा आज सचमुच इस समूह की रानी लग रही थी। उसकी गौर एवं रक्ताभ छवि, सुबक नक्शा, कवितामय आँखें जिनमें ऐसी चमक थी, जो विशुद्ध हिन्दुस्तानी लडकी में पायी जाती है। और जिसको बड़ी-बूढ़ियाँ आँख का पानी कहती हैं। परन्तु ज्योंही किसी हिन्दुस्तानी लड़की की दृष्टि जरा उलझी तो तत्काल ही निर्णय दे दिया जाता है कि अमुक लड़की की आँख का पानी मर गया है। लेकिन नजमा की आँख का पानी तो अमृत के समान था। उसकी मन-मोहक आकृति के अतिरिक्त उसकी चित्ताकर्षक मुस्कान और वेश-भूषा में उसकी सादगी को देख कर सभी आश्चर्यचकित रह गये थे। सफेद साटन की सलवार पर सफेद ही फ्राँकनुमा कमीज़ और उस पर काम-दानी का दुपट्टा, पैरों में कामदार जूते, कानों में श्वेत रंग के बुन्दे; इस शुभ्रता ने पार्टी के सारे रंगों पर पानी फेर कर रख दिया। कोई उसकी शक्ल देख कर आईना बन गयी, किसी को उसकी सादगी ने मोह लिया, किसी पर नजमा की सुमधर मुस्कान की बिजली गिरी और किसी पर उसकी नम्रता का जादू चला। संक्षेप में यही कहना पर्याप्त होगा कि वो आयी, उस ने देखा, उस को देखा गया और फिर सब नजमा के बन चुके थे। नजमा पार्टी पर छाई हुई थी। यद्यपि वह प्रगट में लजाई हुई सी थी।

मैबुल ने इन चारों को अपनी हमजोलियों से मिलवाया। तत्पश्चात देर तक इधर-उधर की की चर्चायें चलती रहीं। परन्तु जमाल 'ना आज आते हैं न कल.....।' आध घन्टे से एक घन्टा हुआ और इसी प्रकार जब नियत समय के डेढ़ घन्टे जमाल की राह देखने में बिता दिये गये तो मिस डैनियल ने एक प्रस्ताव रखा। बोली— 'मेरी

राय में इस पार्टी को एक समारोह के रूप में परिवर्तित कर देना चाहिये। साथ-ही-साथ जमाल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव और फिर उस प्रस्ताव के अनुकूल जमाल के प्रति धिक्कार के 'रेजुलेशन' को स्वीकार किया जाना चाहिये।"

सब ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया ताकि समय इसी प्रकार व्यतीत हो जाय। वास्तव में यह भी इन्तज़ार की एक दिलचस्प योजना थी।

मैवुल ने बाक़ायदा खड़े होकर कहा—"माननीया महिलाओं! मैं इस पार्टी को एक समारोह की शक्ल में बदलने की घोषणा करती हूँ और यह समारोह मिस नजमा की अध्यक्षता में फौरन ही शुरू कर दिया जाना चाहिये।"

नाहिद ने खड़े होकर ज़ोरदार अँग्रेज़ी का प्रयोग कर संक्षिप्त सा भाषण देते हुये उपर्युक्त प्रस्ताव का अनुमोदन किया। तालियों की गूँज में सबको छोड़ नजमा को अकेले सभानेत्री के पद की कुर्सी सुशोभित करनी पड़ी। नजमा ने सभानेत्री बनते ही अपना वक्तव्य दे कर उस पद की मर्यादा निबाही! न तो उसकी पहले से कोई तैयारी थी और न ही उस के पास व्याख्यान की सामग्री थी। जो कुछ उसने बोला; विषय से परे था। था तो यह भी एक तरह का मज़ाक किन्तु मज़ाक ही मज़ाक में उस ने पन्द्रह मिनट तक ऐसा भाषण दिया कि अभ्यस्त वक्ता से भी इतनी आशा नहीं की जा सकती। उस के वक्तव्य में अँग्रेज़ी सभ्यता की बारीकियें थीं, पटुता थी, साथ ही दलीलें भी। और फिर उसकी भाषा के प्रवाह को देख कर तो अँग्रेज़ महिलाओं के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। सोचने पर बाध्य हो गयीं कि पर्दा करने वाला, सलवार-दुपट्टा ओढ़ने वाली हिन्दुस्तानी लड़की साहित्य और संस्कृति के प्रति कितनी अभिरुची रखती है। और फिर ऊपर से एक विदेशी भाषा का इतना विस्तृत ज्ञान.....। नजमा ने सचमुच इस मज़ाक से

सबको प्रभावित कर दिया। उसका भाषण न जाने कब तक चलता रहता यदि उसी समय जमाल और उनके साथ शरफ़ न पहुँचते। इन दोनों के विरुद्ध, उनके समक्ष ही 'शेम-शेम-शेम' का वोट 'लानत' के नारों में परिवर्तित किया गया। किन्तु उनके पहुँचने के बाद समारोह का रूप बदल गया।

जमाल ने शरफ़ को आगे बढ़ा कर कहा—"हाँलाकि यह सज्जन लगड़े नहीं हैं; फिर भी मेरे देर में पहुँचने का कारण ये ही हैं।"

मैबुल बोली—"यह ग़लत है। कोई किसी का जिम्मेवार नहीं हो सकता।"

जमाल संयत हो कर कहने लगा—"सच पूछा जाय तो जिम्मेवार आप हैं, आप की कौम है, आपका लिबास है! शरफ़ साहब से पूछ लीजिये कि आज टाई बाँधने इनको कितनी देर लगी है।"

अब शरफ़ ने ज़रा अक्खड़पने से कहा—"बात यह है कि अभ्यास नहीं है। ना, मैं ज़रा कम पहनता हूँ अँग्रेज़ी लिबास।"

शरफ़ की इस बात पर और बात कहने के ढंग पर सब के चेहरों पर मुस्कराहटें दौड़ गईं। कुछ उसकी ग़लत अँग्रेज़ी का लुत्फ़ ले रही थीं और कुछ समाँ उसका हुलिया भी बाँध रहा था। किन्तु जमाल अत्यधिक गम्भीर बना हुआ था। और उसी गम्भीरता से वह बोला—"शरफ़ भाई तो इस बनावटीपन से दुराव करते हैं। न ही इन्हें औरतों की तरह बनाव-सिंगार आता है। लेकिन मैंने आज इन्हें सूट पहना ही दिया।"

शरफ़ ने जल्दी से कहा—"नहीं! खैर पहन तो पहले भी चुका हूँ। मगर ज़रा कम पहनता हूँ। मुझे कुछ उलझन सी होती है इस लिबास में।"

मैबुल फुर्ती से बोली—"माफ़ कीजियेगा ! आप उर्दू में बातें करें तो शायद हम लोग भी कुछ समझ सकें।"

कोशिश करने पर भी नजमा स्वयं पर काबू नहीं पा रही थी। उस से हँसी नहीं दबी; आखिर, वह उठकर नमाज के लिये चल दी। शरफ़ की दृष्टि ने अपनी बित तक नजमा का पीछा किया, आखिर मिस मैबुल की तरफ देखता हुआ बोला—"क्या आप अँग्रेज़ी नहीं समझतीं ?"

जमाल न तत्क्षण ही कहा—"आप वास्तव में भूमध्य रेखा के पास की रहने वाली हैं। उस देश की भाषा उर्दू ही है और अँग्रज़ी बोलना या पढ़ना वहाँ बहुत बड़ा अपराध माना जाता है।"

शरफ़ बड़ा चलता-पुर्जा था, लेकिन इस समय तो अच्छा-खासा बवकूफ बन रहा था। आश्चर्य से बोला—"भूमध्य रेखा के पास से क्या मतलब है ?"

डैनियल ने उर्दू में कहा—"इंगलिस्तान का जो भाग भूमध्य रेखा पर स्थित है, उसको इंगलिस्तान नहीं कहते ! सिर्फ भूमध्य रेखा कहलाता है।"

शरफ़ ने समझते हुये कहा—"अच्छा·····अच्छा·····यह बात है ! मैं तो इसीलिये अँग्रेज़ी बोल रहा था कि शायद आप उर्दू न समझ पायें।"

जमाल ने हँसते हुये कहा— "क्या खूब ...! अजी साहब, इन्हें तो उर्दू शायरी से इतना ज़बर्दस्त लगाव है कि जब मैंने इनसे आप का ज़िक्र किया कि आप शेर भी कहते हैं, तो मेरे सिर हो गयीं कि किसी तरह आप को यहाँ ले कर आऊँ।"

शरफ़ ने संकोच से कहा—"मैं किस काबिल हूँ। कभी-कभी यों ही बक लिया करता हूँ।"

डैनियल बिना कुछ सोचे-समझे बोल उठी—"तो कुछ बकिये न !"

इस पर सबों ने गगनभेदी क़हक़हा लगाया और डैनियल हैरान रह गयी कि वह क्या कह गयी। परन्तु जमाल ने शीघ्रता से स्थिति को सँभाला, "यह होता है परिणाम दूसरे की भाषा बोलने का ! शरफ साहब ने विनम्रता से कहा कि बक लेता हूँ, परन्तु आप समझीं कि उर्दू बकना में शेर पढ़ने को बकना कहते हैं।"

मैबुल बोली—"तो यह बेचारी क्या जानें उर्दू ? मेरे साथ रहते-रहते इतनी भी सीख गयी हैं। इन्हें माफ कर दीजियेगा शरफ़ साहब !"

शरफ़ और भी नम्रता से कहने लगा—"ऐसी भी क्या बात है ! मैंने तो नोट भी नहीं किया, बल्कि आप सबों के हँसने पर मैं समझा कि मुझ से कोई ग़लती हो गई है।"

सब हँसी के मारे लोट-पोट हो गये। परन्तु जमाल ने साथ-ही-साथ महसूस किया कि मैबुल की अन्य महिला मेहमान उकता सी रही हैं। अतः इस चर्चा का विषय बदल कर वह बोला—"शरफ साहब का कलाम तो बाद में भी होता रहेगा, लेकिन चाय वगैरह को इस बहाने से टालना एक अजीब तरह की मेहमाननवाज़ी है।"

मैबुल ने मुस्कराते हुये कहा—"आप को चाय का तकाजा करने का कोई अधिकार नहीं है। आप स्वयं समय टाल कर आये हैं। इस पर भी, क्योंकि आप अपनी जमानत देने वाला एक दिलचस्प व्यक्ति साथ लाये हैं; आप के साथ यही रियायत हो सकती है कि नजमा के नमाज पढ़ कर आने के बाद आपको चाय मिल जायेगी।"

जमाल ने व्यंग्यपूर्ण भाव से कहा—"बशर्ते कि उन्होंने वज़ीफा (दुआ माँगना) न शुरू कर दिया हो।"

योरोपियन महिलायें 'वज़ीफा' के अर्थ तो क्या समझतीं; लेकिन

उसी समय नजमा की अनुपस्थिति के दौरान में जमाल उनसे वज़ीफा और नमाज़ के विषय में आलोचना भरी बातें कह रहा था। नजमा के पहुँचते ही मैबुल ने सब को चाय पर चलने को कहा और यह दल लान के उस भाग में पहुँच गया जहाँ चाय का प्रबन्ध था। चाय पीने के दौरान में हँसी-मज़ाक का क्रम भी चलता रहा। कभी शरफ़ का चमचे से चाय पीने का दृश्य लोगों को चाय पीने से रोक देता था, तो कभी जमाल के चेहरे पर झलके गाम्भीर्य के देख कर हँसी क़ाबू से बाहर हो जाती थी। और कभी-कभी अपनी हरक़त पर सब को हँसते देख शरफ़ का शिष्टाचारवश हँसना मनोरंजन का एक साधन बन जाता था। संक्षेप में यही कि इन्हीं दिलचस्पियों के साथ ही चाय का दौर समाप्त हुआ तो सबों ने मैबुल को जन्म-दिवस की बधाई देने के साथ-साथ-ही अपने-अपने उपहार दिये। सब एक-दूसरे की भेंट देखने के लिये आकुल थे।

सबसे पहले मैबुल की एक सहेली मिसेज मौरिस ने एक मखमली बक्स पेश किया जिसमें चाँदी का एक खूबसूरत कंघा था। तत्पश्चात् दूसरी इसी प्रकार की भेंटें दी गयीं। तारा कॉफी सेट लायी थी, रज़िया फूलदान, नाहिद कलमदान लायी थी। जमाल ने आग्रह किया कि पहले नजमा की ओर से आयी भेंट देखी जाय, तब वह अपना तोहफा पेश करेगा। परन्तु सबने जमाल को 'आपने जो तीर मारा है, उसे क्यों छिपाये हुये हैं' कह कर विवश कर दिया। आखिर जमाल ने एक पैकेट खोल कर उसमें से चाँदी का एक फ्रेम निकाला। फ्रेम में शरफ़ का एक चित्र जड़ा हुआ था। इस भेंट को मैबुल ने शरारत से स्वीकार कर जमाल का बहुत-बहुत धन्यवाद चुकाया। कहने लगी—"आपने यह भेंट नहीं दी है; बल्कि मुझ पर अहसान किया है।"

जमाल ने शरफ़ की तरफ पलट कर कहा—"शरफ़ भाई! वह मिसरा क्या है? दिल के बहलाने····· ?"

शरफ़ ने अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने के हेतु शीघ्रता से मिसरा पूरा कर दिया, "दिल के बहलाने की सूरत हो गयी।"

परन्तु शरफ़ ने पुनः झेंपते हुये कहा—"इस से भला, आप का दिल क्या बहलेगा ?"

तारा पर अपना वश नहीं रहा, अतः कह बैठी—"इस फ्रेम में जमाल भाई की तस्वीर होती, तो एक बात थी !"

तारा की इस बात पर मैबुल दंग रह गयी। जमाल तथा अन्य सभी मौन रहे, किन्तु शरफ़ का एकाकी और बेसुरा क़हक़हा गूँज कर रह गया। आखिर नजमा ने बढ़कर मैबुल के समक्ष अपनी भेंट देते हुये कहा—"यह कलामे मजीद (कुरान शरीफ) का एक अँग्रेजी नुस्खा है। आप जरूर इसकी कदर करेंगी !"

मैबुल ने सचमुच ही उस भेंट को बड़े मान से स्वीकार किया। परन्तु जमाल हँसते हुये कहने लगा—"मुझे मालूम होता तो मैं भी जाये नकाज़ (जिस कपड़े पर बैठ कर नमाज़ पढ़ी जाती है) पेश करता।"

मैबुल ने तत्परता से कहा—"और उसका अँग्रेजी अनुवाद भी शायद स्वयं ही करते। जमाल ! मैं पूछती हूँ आखिर, तुम अपने धर्म के प्रति इतने उदासीन क्यों हो गये हो। तुम्हारे जैसे लोग ही हमारे देश को बदनाम करते हैं कि लंदन जाने पर हिन्दुस्तानी ऐसा बन जाता है। यद्यपि लंदन किसी को धर्म से विचलित होना नहीं सिखाता।"

जमाल न खास अँग्रेज़ बन कर कहा—"आश्चर्य है, तुम सोशलिस्ट हो कर ऐसी बातें कर रही हो। मैं तो एक सिरे से ही धार्मिक पचड़ों के प्रति अपने आप को पराया समझता हूँ और न ही मेरी समझ में अब तक इन बड़ी बी मुल्लानी (नजमा) की नमाजों का रहस्य आया है।"

नजमा ने चुपके से कहा—" अल्लाह् आप को समझ दे ।"

जमाल ने नजमा की यह बात सुन ली और इस की ताज़ी चोट से न तिलमिला कर मुस्कराता हुआ बोला—"खुदा न करे, मैं इतना नासमझ हो जाऊँ ।"

नजमा शायद अब कोई कठोर सा उत्तर देने वाली थी कि इसी बीच शरफ़ ने मैबुल के समीम पहुँच कर उसके कान में कुछ फुसफुसाया और उसकी इस हरकत का प्रभाव यह पड़ा कि उपस्थित महिलायें 'दो बात' जानने के लिये व्याकुल हो उठीं । आखिर जमाल ने तकाज़ा कर ही दिया—"यह क्या फुसफुसाहटें शुरू हो गईं, भई ?"

मैबुल पहले ही हँसी से लोट-पोट हुयी जा रही थी, उस ने बड़ी कठिनाई से हँसी रोक कर कहा—"शरफ़ साहब तो वास्तव में प्रशंसा की चीज हैं ।"

जमाल नें बात काट कर कहा—"चीज़... ! बहुत खब कहा... हाँ तो बात क्या थी ?"

मैबुल ने कहा—"बात यह है कि शरफ साहब ने शर्मिन्दगी का इज़हार फरमाया है । कहते हैं, 'मुझे नहीं मालूम था कि पार्टी मे आने वालों को कुछ न कुछ भेंट देनी पड़ती है, वरना मैं साथ ही लेता आता।' और अब आप कह रहे हैं कि कल कोई अच्छी सी चीज़ लेते आयेंगे ।"

इस पर अन्य सब हँस दिये, किन्तु शरफ़ ने अपनी सफाई पेश करते हुये कहा—"यह बात जमाल को बता देनी चाहिये थी कि यहाँ का ऐसा दस्तूर है । परन्तु मैं कल सवेरे ही कुछ न कुछ अवश्य भेंट करूँगा ।"

मैबुल बोली—"शरफ़ साहब ! आप की यह बात ही एक तरह की भेंट है। अब, आखिर इस तक़ल्लुफ की क्या जरूरत है ।"

जमाल ने गोया शरफ़ की तरफदारी करते हुये कहा—"क्या खूब... ! आप का मतलब यह है कि तोहफा ही न दिया जाय ! यह नहीं हो सकता। और अगर आप आवश्यक समझती हैं कि तोहफा मय पार्टी के दिया जाये तो इसका भी प्रबन्ध हो जायेगा।"

शरफ़ तत्परता से बोला—"हाँ-हाँ ! यह और भी अच्छा है। कल ही सही !"

जमाल ने दिन और समय का दायित्व अपने ऊपर लिया और दूसरे अतिथियों के विदा लेने के कारण इस कार्य-क्रम को अस्थायी रूप से स्थगित कर दिया।

दस

****

जमाल के पिता मौलवी अब्दुल अहद साहेब बिरादर मुअज्जम (स्नेही भाई) अब्दुल समद साहब की तरह बिल्कुल रुढ़िवादि तो नहीं थे, किन्तु फिर भी नमाज पढ़ने में नियमितता बरतते थे। और लोगों का विचार था कि उस नियमितता को निभाने में खुदा की अपेक्षा उनके बड़े भाई के भय का हाथ अधिक था। बड़े भाई ने इन की शिक्षा-दीक्षा पिता की तरह की थी। उनके हृदय मे अपनी संतान की अपेक्षा छोटे भाई के लिये और भी अधिक स्थान था। मौलवी अब्दुल अहद के फाँस भी चुभ जाय तो उसकी खटक मौलवी समद साहब के दिल में होती थी। यही दशा छोटे भाई की थी। बूढ़े होने को आये थे, मगर क्या मजाल कि बड़े भाई साहब के सामने हुक्का पियें या किसी बात को उनके सामने ऊंचे स्वर में कह दें।

छोटे भाई थे; वे नजमा को इतना प्यार करते थे कि जमाल का भी उतना न करते होंगे। जमाल के साथ वे प्रायः ज्यादतियाँ भी कर बैठते थे, उस को डाँट देते थे, उससे नाराज़ हो जाया करते थे; किन्तु क्या मजाल जो उनके सामने नजमा को कोई एक बात भी कह दे। यही कारण था कि आज उन्हें अपनी पत्नी से जमाल और नजमा के विषय को लेकर उलझना पड़ा।

अर्जमन्दआरा के मुँह से कहीं निकल गया था कि जमाल और

नजमा का स्वभाव एक सा नहीं है। वह कट्टर रूप से पर्दे की पाबन्द है और जमाल उसी रूप से इस प्रथा का विरोधी है। इसी तरह विलायत से लौटकर अब वह यह चाहता है कि उसकी बीवी उसकी हर दिलचस्पी में भाग ले और नजमा में यह बात पैदा नहीं हो सकती।

इतना सुनना था कि मौलवी अहद साहब आग-बबूला हो कर बोले—"तो आपका विचार है कि नजमा हमारे साहबजादे के सिर मढ़ी जा रही है। हाँलाकि जमाल के विलायत से वापस आने के बाद उसका मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ देख कर मैं स्वयं सोच रहा हूँ कि वह नजमा के योग्य है भी या नहीं!"

अर्जमन्द आरा ने कहा—"मैं भी तो यही कह रही हूँ।"

अब्दुल अहद साहब ने अपने शब्दों पर ज़ोर देते हुये कहा—"जी नहीं, आप यह नहीं कह रही हैं; बल्कि जमाल की वालदा होने के कारण आप नजमा को उसके अयोग्य ठहरा रही हैं। इधर, मैं यह कह रहा हूँ कि मैं नजमा का विवाह किसी ऐसे लड़के से नही करूँगा जो मेरी बच्ची की कोमल प्रकृति को कुचलने का प्रयत्न करे। जमाल के लिये आप अपनी और उसकी मनपसन्द लड़की तलाश करें। मेरा उस बात से कोई सरोकार नहीं, लेकिन भविष्य मे नजमा का नाम कभी इस सिलसिले में लिया गया तो मुझ से बुरा कोई न होगा।"

अर्जमन्दआरा ने मियाँ को हत्थे से गिरता देख कर कहा—"आप पहले मेरा मतलब तो समझ लें!"

अब्दुल अहद साहब ने उसी प्रकार गर्म हो कर कहा—"आप का मतलब मैं खूब समझता हूँ! मुझे तो यह बात दरअसल आज ही ज्ञात हुई है कि आप केवल जमाल की माँ हैं; नजमा की कुछ नहीं। मगर कान खोल कर सुन लीजिये कि मेरे लिये नजमा से अधिक दरअसल, जमाल भी नहीं है।"

ठीक इसी समय खंखारने की आवाज़ से इन दोनों को पता चला कि मौलवी अब्दुल समद साहब पधारे हैं। अतः अब्दुल अहद साहब भी सँभल कर बैठ गये और अर्ज़मन्दआरा ने भी दुपट्टा ठीक कर सम्मान सहित उन्हें प्रणाम किया। अब्दुल समद साहब संकेतों द्वारा आशीष देते हुये आराम कुर्सी पर बैठ गये और अपना 'वज़ीफा' खत्म कर बोले—"अच्छा हुआ कि मियां अहद से भेंट हो गई। मैं वास्तव में इनकी उपस्थिति ही चाहता था। कहने का तात्पर्य यह कि यद्यपि मुझे मियाँ अहद या बहू से पूछने की कोई आवश्यता नहीं है, इस पर भी मैं परामर्श के विचार से पूछना चाहता था कि अज़ीज़ा तारा के लिये स्वर्गीय भाई अहसान के लड़के मियां इरफान से रिश्ता तय करने की बात मुझ से कही गयी है। लड़का होनहार है और साथ ही आज्ञाकारी भी। इस वर्ष लाहौर मेडिकल कालेज से अपनी शिक्षा समाप्त की है। हर शक्ल से मेरी राय में यह रिश्ता उपयुक्त है। अब तुम लोग भी ग़ौर कर लो।"

अब्दुल अहद साहब ने सम्मानपूर्वक कहा—"इस विषय पर मुझे ध्यान देने की जरूरत ही नहीं! आप जाने और आप का काम। मगर मैं चाहता था कि मैं पहले नजमा की ओर से निश्चिंत हो जाता।"

अब्दुल समद भौंचक्के होकर बोले—"नजमा·····?नजमा···? यानी यही अपनी नजमा न? तो उसकी ओर से निश्चिंत होने का क्या मतलब·····? यानी किस किस्म की फिक्र?"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"फिक्र यही है भाई जान कि लड़की अब ब्याहने जोग हो गयी है। ख्याल यह था कि लड़का घर में ही मौजूद है। मगर वह साहबजादे विलायत से चौपट होकर वापस आये हैं। नजमा जिस हद तक गम्भीर है उस से कहीं अधिक भावुक है। मतलब यह कि उस की शिक्षा-दीक्षा इस तरह हुई है कि वह अपनी

आत्मा के विरुद्ध कितनी ही अच्छा वस्तु की भी चाहना नहीं करती और किसी ज़बरदस्ती को हरगिज़ कबूल नहीं कर सकती।"

अब्दुल समद साहब ने उलझते हुये कहा—"अस्तखफर अल्लाह! तुम्हारी सदैव से यही आदत रही है। किसी साधारण सी, गोया बड़ी छोटी सी बात का वर्णन करोगे तो उस को इस तरह बयान करोगे कि समझने वाला कुछ भी न समझ सके। मैं बिल्कुल नहीं समझा कि तुम क्या कहना चाहते हो?"

अब्दुल अहद साहब ने कुछ झेंप कर कहना शुरू किया—"आप को मालूम है कि जमाल जब से विलायत से वापस आया है; उसके पाँव धरती पर नहीं टिकते। न धर्म की सुध है न रीति-रिवाजों को निभाने की कोई चिन्ता है। वह तो विलायत जाकर, शायद यह समझ बैठा कि वह ख़ुद विलायती हो गया है। ऐसी स्थिति में नजमा उस से क्यों कर खुश रहेगी! और अगर उसने अक़द (विवाह) के बाद नजमा को पर्दा छोड़ने या क्लब जाने के लिये विवश किया तो उसका कितना बुरा प्रभाव उस कोमल बच्ची पर पड़ेगा।"

अब्दुल समद ने दाढ़ी पर हाथ फेर कर विचार करना आरम्भ किया। वह सदैव इसी तरह कुछ सोचा करते थे। काफी देर तक 'हूँ-हूँ' करते रहे। तत्पश्चात मुस्कराते हुये बोले—"नजमा को आपने अजीब सा बना रखा है; अर्थात साहबज़ादी अन्डरग्रेजुएट भी हैं और कठोर रूप से नमाज़ रोज़े की नियमित भी हैं, कालेज की शिक्षा और साथ ही साथ बुर्क़ा भी, यानी मेरा मतलब है निहायत सख्त पर्दा; बहरहाल मैं जमाल की ओर से इस हद तक निराश नहीं हूँ। बल्कि·····बल्कि··· गोया किसी सीमा तक उसका अहसानमन्द भी हूँ कि उसने विलायत जा कर हम को किसी योरोपियन बहू का ससुर होने से बचाये रखा। अब रह गये वह परिवर्तन, जो तुम्हें अब नज़र आ रहे

है। इन परिवर्तनों को मैं इस कारण ग़नीमत समझता हूँ कि मेरा दृष्टि में आजकल के दूसरे युवक हैं जो विलायत गये बिना ही आपे से बाहर नज़र आते हैं। चौधरी सखावत अली का तो तुम जानते हो होगे !"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"जी हाँ, वही न, इस्लामिया कालेज के मौलवी !"

अब्दुल समद साहब ने फ़रमाया—"हाँ, ठीक है। वह तो तुम्हारे सहपाठी भी रह चुके हैं। कितना सीधा-साधा मसलमान है बेचारा ! शायद ही किसी वक्त की नमाज़ उससे छटती हो। बदकिस्मती से उनके साहबजादे ग्रेजुएट हो गये हैं। माँ-बाप से अँग्रेज़ी में बात करता है। माँ से मुँह टेढ़ा करके बात करता है। मेज़ पर खाना न खाये तो पाचन शक्ति बिगड़ जाती है। कमोड (शौच त्यागने का बर्तन) न हो तो उस मूर्ख को कब्ज़ की शिकायत पैदा हो जाती है। मौलाना की तनख्वाह का बड़ा भाग सिगार, सिनेमा, क्लब और न जाने किन-किन फिजूल चीजों में खर्च करता है। और एक ऐंग्लो-इण्डियन लड़की से उसकी आज ही कल में सिविल मैरिज होने वाली है। 'अललहम, अहफ़जनन·····।"

अब्दुल असद साहब ने कहा—"मगर इसके यह मतलब तो नहीं हैं भाईजान कि उसका उदाहरण सामने रखकर जमाल की गिरावट पर ध्यान ही न दिया जाय !"

अब्दुल समद साहब ने शीघ्रता से कहा—"न·····न····· ! मेरा मतलब समझने की कोशिश करो। मैं तुम्हें यह समझाना चाहता हूँ कि अगर जमाल विलायत से वापसी पर एक बीवी साथ लेता आता तो मैं और तुम क्या कर सकते। विलायत से अगर खुदा ना खास्ता शराब·····आख थू·····की लत लगा आता तो हमारे पास चारा ही क्या था।"

अब्दुल अहद साहब उत्तेजित होकर बोले—"चारा यह था कि फिर उसका हम से कोई सम्बन्ध न रहता।"

अब्दुल समद साहब ने जाँघों पर विजय का हाथ मारते हुये कहा—"यह·····यह·····मगर अज़ीज़मन! उसने यह बातें नहीं की। वह वेश-भूषा से साधारण से परिवर्तन और विलायती जलवायु के हल्के से प्रभाव के सिवाय वैसा का वैसा ही वापस आ गया है। यह सब कुछ मेरी दुआओं का नतीजा है कि जिस सीमा तक उसे गुमराह होना चाहिये था; वह नहीं हुआ।"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"आप इसे साधारण सा परिवर्तन समझते हैं। उसे तो एक सिरे से अपना हिन्दुस्तानी होना तो एक तरफ—मुसलमान होना भी याद न रहा।"

अब्दुल समद पुनः मुस्करा कर बोले—"तो बिरादरेमन, तुम को भी यह मालूम होना चाहिये कि वह विलायत गया था; हज्ज करने नहीं गया था कि वहाँ से कट्टर नियमों का पाबन्द हो कर और सच्चा मुसलमान बन कर वापिस आता। अभी वापस आया है। कुछ दिनों में यह सारा विलायती प्रभाव दूर हो जायगा। क्या तुम यह समझे बैठे थे कि विलायत से सर मुँडाये, दाढ़ी बढ़ाये, लम्बा कुर्ता और शरई पायजामा पहने तसबीह (माला) फेरता वह वापिस आयेगा।"

अचानक पिछले कमरे से हँसने की आवाज़, 'खि·····खि·····खि' इतने ज़ोर से आयी कि मौलवी अब्दुल समद साहब को भी मौन धारण कर उस तरफ़ ध्यान देना पड़ा और उनके "कौन है?!" कहने पर तारा हँसती हुई कमरे से बाहर निकल आयी और उन्हें प्रणाम कर एक तरफ बैठना चाहती थी कि अब्दुल समद साहब ने उसे अपने निकट बुलाते हुये कहा—"आज तू इतनी देर से थी कहाँ? भई, तू है बड़ी

बेवकूफ लड़की। हज़ार बार कहा कि बेटी अपनी आँखों का इलाज कर डाल। एक आँख छोटी एक बड़ी। कोई देखेगा तो क्या कहेगा ?"

तारा ने बच्चे की नाईं कहा—"ऊँह, नहीं।"

अब्दुल समद साहब उसकी पीठ पर थपकी देते हुये बोले—"और तुझे याद है, जब तू मुझ कहा करती थी कि बड़े अब्बा का मुँह भी बड़ा है और सारा हलवा भी वह अपने बड़े से पेट में जल्दी-जल्दी भर लेते हैं। मेरे लिये दूसरा घर तैयार कर दो। क्यों री ! अब बता तो सही !"

तारा ने लजा कर कहा—"मुझे याद नहीं।"

अब्दुल समद साहब ने उसे टालने के लिये कहा—"अच्छा, जा कर मेरे लिये चाय तो ला ! जिसकी इतनी बड़ी बेटी हो, वह बगैर चाय के रहे। छी:·····छी:·····छी:।"

तारा 'अभी लायी' कह कर हँसती हुई वहाँ से चली गयी।

अब्दुल समद साहब तारा की अनुपस्थिति का लाभ उठाते हुय अपने भाई से कहने लगे—"तो मैं यह कहना चाहता कि खैर जमाल की तरफ से तो निश्चिंत रहो। परन्तु तारा के इस रिश्ते के सम्बन्ध में मैं भी ग़ौर कर रहा हूँ और तुम दोनों भी सोच लो। फिलहाल, लड़के के विषय में मुझे जो सूचनायें मिली हैं; सब की सब सन्तोषजनक हैं। परन्तु इस पर भी और अधिक छानबीन की आवश्यकता है।"

अब्दुल अहद साहब तो वास्तव में तारा की ओर से निश्चिन्त से थे, परन्तु उनकी बेगम साहिबा तो इसी चर्चा में अधिक दिलचस्पी ले रही थीं। वह जेठ के सामने अधिक नहीं बोलती थीं, फिर भी पूछ बैठीं—"लड़के के माँ-बाप लखनऊ में हैं ?"

अब्दुल समद साहब ने कहा—"माँ तो मर चुकी है मगर ख़ाला (मौसी) यहीं लखनऊ में हैं। वे ही दरअसल में उसकी माँ हैं। उन्होंने इस लड़के को औलाद की तरह पाला है और उदारता को अपना कर को शिक्षा दिलवायी है। उनकी इच्छा स्वयं यह थी कि वह उस लड़के की शादी अपनी पुत्री से करतीं, लेकिन उस बेचारी की मृत्यु हो गई। और बाप के विषय में जो तुमने पूछा है; तो शायद मैं पहले ही कह चुका हूँ कि कि स्वर्गीय भाई अहसान यानी स्वर्गीय कहने के बाद यह प्रश्न ही विचित्र सा है। बहरहाल·····अवखाह, बेटी चाय ले ही आयी।"

चाय आने के पश्चात यह वाद-विवाद समाप्त हो गया। और चाय पी चुकने पर अज़ान का स्वर सुन यह दोनों भाई बाहर चले गये।

वास्तव में इन दोनों बुजुर्गों की यह चर्चा केवल तारा ने ही न सुनी थी; बल्कि तारा और जमाल दोनों कान लगाये सुन रहे थे। जमाल को ऐसा करना अच्छा नहीं लगता था लेकिन तारा उसे यह कह कर पकड़ लायी थी; 'सुन तो सही जहाँ में है तेरा फ़साना क्या ?'

अतएव जमाल ने इस तरह अपने बारे में दोनों बुजुर्गों की राय मालूम कर ली, वर्ना शायद उस के मुँह पर वे दोनों वृद्ध इतना निष्कपट वार्तालाप नहीं कर पाते। आख़िर, उस समय उसकी और तारा की हँसी ज़ब्त न रह सकी जब मौलवी अब्दुल समद साहब हुलिया पेश कर रहे थे; जिसमें मुँड़ा हुआ सिर और लम्बी दाढ़ी के साथ शरई पायजामें और लम्बे कुर्ते का वर्णन था। जमाल ने आज पहली बार अपने विषय में गम्भीरता से सोचा कि उसके और नजमा के बीच विचारों के अन्तर की एक दीवार स्थित है; इस पर भी नजमा में वह कौन सा आकर्षण है जो उसे नजमा के प्रति निराश नहीं होने देता। अगर यह आकर्षण सिर्फ नजमा के सौंदर्य के कारण था तो इसका अर्थ यह हुआ कि यह सच्चा आकर्षण नहीं, वरन् बनावटी आकर्षण है। जो

सौन्दर्य में हर युवक के लिये संभव है। और उस आकर्षण का जीवन वहीं समाप्त हो जाता है जहाँ यह आकर्षण दीवानगी के रूप में बदल जाय। परन्तु शादी तो एक ऐसे स्थायी उन्माद का नाम है कि इसके बाद व्यक्ति फिर जुदाई की चाह नहीं करता। जीवन के इस साथ को इस प्रकार के क्षणिक उत्तेजना से बहुत ऊँचा दर्जा मिलना चाहिये। केवल सौंदर्य एवं सौंदर्य की उपासना ही के सहारे यह गाड़ी नहीं चल सकती, वरन् इसके लिये कुछ और भी होना चाहिये। अब प्रश्न यह था कि वह 'कुछ' किस सीमा तक यहाँ मौजूद था। जमाल नजमा के दृढ़ स्वभाव से परिचित था और उसे यह भी ज्ञात था कि वह दृढ़ संकल्पों वाली लड़की है। अपनी आत्मा के विरुद्ध उसका तनिक सा झुकना भी असंभव था।

नजमा का आचार-व्यवहार केवल सांसारिक नहीं है। वह नमाज़ इसलिये नहीं पढ़ती है कि यह भी एक प्रोग्राम है। बल्कि उस ने नमाज़ पढ़ना उस वक्त आरम्भ किया होगा, जब वह पक्का इरादा कर चुकी होगी कि वह नमाज़ नहीं छोड़ेगी। वह पर्दा इसलिये नहीं करतीं थी कि यह पूर्वी रिवाज है; बल्कि पर्दे के लिये भी उसके पास खुदा जाने, कितनी ठोस और विभिन्न प्रकार की दलीलें होंगी।

अब जमाल के लिये केवल एक सूरत थी कि वह स्वयं, आत्म-निरीक्षण कर किसी निर्णय पर पहुँचे कि वह नजमा जैसी कट्टर धार्मिक प्रकृति वाली तथा पर्दादार पत्नी के साथ अपना पश्चिमी सभ्यता पर आधारित जीवन यापन कर सकता है या नहीं। इस में संदेह नहीं कि जमाल के लिये ऐसा निर्णय करना अत्यन्त कठिन था। बचपन से नजमा उसके हृदय में बसी रही, यौवन ने अपने विकास के साथ-साथ नजमा को उस के लिये कुछ और ही बना दिया। उसने सदैव नजमा को अपना समझा और अपने इस 'अपराध' की अत्यन्त लगन से उपासना की। परन्तु अब उसे अपना और नजमा का मार्ग अलग-अलग नज़र आ रहा

था। नजमा उसकी जीवन-संगीनी बन कर भी नमाज़ पढ़े, रोज़े रखे, पर्दा करे और बुर्का करे; इस कल्पना मात्र से ही वह अपने लन्दन में सिले हुये सूट के अन्दर ही अन्दर काँपा जाता था। नजमा उस के बजाय किसी और की हो जाय; इस विचार से वह इस बुरी तरह चौंक पड़ता था जैसे कोई बालक किसी भयानक स्वप्न से भयभीत हो जाया करता है।

जमाल के लिये यह असम्भव था कि नजमा की ओर से संतोष कर ले। फिर आख़िर बीच का मार्ग कौन सा हो सकता था। वह इस विषय में जितना सोचता था, उतना ही उलझता जाता था। अन्त में उसने यही निर्णय किया कि चाहे जो हो और जिस तरह भी हो—वह स्वयं नजमा से इस सम्बन्ध में चर्चा करेगा। सम्भव है, नजमा ही कोई सूरत बता दे या ऐसी चर्चा करने के पश्चात उसे ही स्वयं किसी निर्णय पर पहुँचने में आसानी हो। उसने तारा से भी इस विषय में गुफ्तगू की। और इस गुफ्तगू के अतिरिक्त तारा को यह भी समझाया कि वह केवल नजमा से बातचीत करके किसी निर्णय पर ही नहीं पहुँचना चाहता है, बल्कि यह भी चाहता है कि तारा और इरफान को भी आपस में एक-दूसरे के विचारों से अवगत होने का अवसर दिया जाये।

तारा उसकी इस बात पर बहुत कुछ लजाई, शरमाई, सिमटी-सिमटाई, परन्तु जमाल ने गम्भीरता से उसे यह बात समझा दी कि अब वह समय नहीं रहा है कि माता-पिता अपनी सन्तान को दाँव पर लगा कर कोई अन्धा जुआ खेल जायें और उस जुए का परिणाम सदैव जीत ही में बदल जाय। इस कारण आवश्यकता इस बात की है कि लड़का-लड़की स्वयं एक-दूसरे से भली भाँति परिचित हों।

आख़िरकार एक दिन जमाल ने इरफान, नजमा और तारा को

पिकनिक पार्टी के बहाने अपने-अपने घरों से बहुत दूर पहुँचा दिया। कैसी पिकनिक और कैसी तफरीह .....मतलब तो सिर्फ यह था कि भविष्य को उज्ज्वल बनाने के निर्णय किये जायें। अतः शहर से दूर एक उद्यान में पहुँचते ही जमाल ने तारा को ठहरने का संकेत कर इरफान को उसके पास छोड़ा और स्वयं नजमा को दूसरी ओर चलने का संकेत कर के कहा—"इधर आओ न नजमा! इन दोनों बच्चों के बीच कहाँ बैठी हो। मैं तुम्हें बाग का वह फव्वारा दिखाऊँगा, जिसको आज से सौ बरस पहले भी आजकल की निर्माण-कला के अनुरूप बनाया गया था।"

नजमा और जमाल जिस समय फव्वारे के निकट पहुँचे, उस समय तक जमाल एक लम्बे चौड़े व्याख्यान द्वारा इस राज़ को व्यक्त कर चुका था जिसे समझते तो दोनों थे; किन्तु एक दूसरे को समझाने की नौबत न आई थी। जमाल ने सब कुछ बता दिया कि उनके माँ-बाप का इरादा क्या है, वह स्वयं किस सीमा तक उनके इरादे का समर्थन करता है, उसने किस तरह इस शुभ विचार के सहारे अब तक जीवन के दिन बिताये हैं और अब कौन सी दुविधायें उसके मस्तिष्क में पैदा हो गयी हैं। संक्षेप में यह कि उसने इस घटना का सारा इतिहास नजमा के सामने रख दिया। नजमा ऐसी बातों के लिये तैयार नहीं थी। कुछ कहना तो एक ओर, वह तो सुनकर ही पसीने-पसीने हो चली थी। किन्तु इसके बावजूद चाहती वह भी यही थी कि जमाल को किसी भ्रम में न रहने दे। उसने जमाल के बार-बार आग्रह करने पर कहा—"आखिर, आप मुझसे क्या सुनना चाहते हैं?"

जमाल ने उसे समझाते हुये कहा—"मैं तुम्हारी बुद्धि और शिक्षा को देखते हुये तुम से कम से कम यह आशा तो जरूर करता हूँ कि तुम स्वयं अपने भविष्य के निर्णय के समय मौन न रहोगी। और यदि मुझ

पर तुम्हें जरा भी भरोसा है, तो कम से कम मुझे अपनी राय अवश्य बता दोगी।"

नजमा ने शरमाते हुये कहा—"मुझे आप पर यक़ीनन भरोसा है।"

जमाल ने बेसब्री से कहा—"तो फिर तुम्हें यह बताने में कोई संकोच नहीं होना चाहिये कि मैं वर्तमान स्थितियों में तुम्हारे स्वीकार करने योग्य हूँ या नहीं ?"

नजमा ने गरदन झुकाये हुये कहा—'आप अपने जैसा महान सबको समझ लेते हैं। क्या आपने यह उचित किया कि तारा और इरफान साहब को एकान्त में छोड़ दिया ? मैं इरफान साहब से भली भाँति परिचित नहीं हूँ।"

जमाल ने इतमीनान से कहा—"इरफान से नहीं, परन्तु तारा से मैं अच्छी तरह परिचित हूँ। इसलिये उस ओर से निश्चिंत हो कर आप मेरी बात का जवाब दीजिये ! टालने की यह खूबसूरत कोशिश न फरमाईये।"

नजमा ने दृढ़ हो कर कहा—"यदि आप मुझ से यह न पूछें तो बहुत अच्छा होगा ! सम्भव है कि आप मेरे इरादों को ग़लत समझकर अपना दिल दुखा बैठें।"

जमाल बोला—"मैं आपके इरादों को समझ कर दिल की सुरक्षा का प्रयत्न करूँगा। दूसरे, यदि इस वक्त दिल थोड़ा-बहुत दुख भी जाय तो जीवन कम से कम स्थायी दर्द से अवश्य बच जायेगा।"

नजमा ने ढीठ बन कर कहा—"चूँकि आप मुझे बहुत अज़ीज़ हैं; इसलिये मैं आपके जीवन का कड़ुवा नहीं बनाना चाहती।"

जमाल के विस्तारपूर्वक बात जानने के भाव को ताड़ कर नजमा ने कहा—"मैंने तो बिल्कुल साफ सी बात कही है। आपकी ज़िन्दगी अपने लिये जो संगिनी चाहती है; वह कम से कम ऐसी नहीं होनी चाहिये जैसी कि·····कि·····"

जमाल ने उसकी कठिनाई को आसान करते हुये कहा—"जैसी कि आप हैं। परन्तु आपकी ज़िन्दगी जो साथी चाहती है, उसे मेरे जैसा होना चाहिये।"

नजमा ने दृढ़ता से कहा—"मेरी ज़िन्दगी अब कोई संगी नहीं चाहती!"

जमाल आश्चर्य से बोला—"क्या मतलब? और 'अब' पर यह ज़ोर क्यों?"

नजमा ने तंग हो कर कहा—"आप मुझसे यह आशा क्यों करते हैं कि इस विषय में मैं अपने विचार प्रगट करती रहूँगी।"

जमाल ने ज़ोर देते हुये कहा—मुझे आशा हो या न हो, किन्तु मैं आज किसी परिणाम पर पहुँचे बिना यह गुफ्तगू खत्म नहीं कर सकता। तुम्हें बताना होगा कि तुम क्यों अब कोई जीवन-साथी नहीं चाहती!"

नजमा ने मुँह फेर कर कहा—"इसलिये कि मेरे जीवन का एक ही साथी हो सकता था जिसकी मैं अब संगिनी नहीं बन सकती।"

जमाल उलझ कर बोला—"खुदा के लिये यह पहेलियें अब समाप्त करो।"

नजमा ने चौंक कर कहा—"खुदा·····? क्या आप इस नाम से परिचित हैं?"

जमाल गंभीरता से बोला—"खैर····· यह व्यंग्य कसने का समय नहीं है। तुम मेरी बात का जवाब दो।"

नजमा ने अब उससे आँखें चार करके कहा—"यह व्यंग्य नहीं है, बल्कि वास्तव में यही वह खाई है, जो आप के विलायत जाने से पहले हम दोनों के बीच नहीं थी। परन्तु अब मैं आपके कथनानुसार उस

'बिकवास' में व्यस्त हो चुकी हूँ, जिसे मज़हब कहते हैं। मुझ से आप यह आशा क्यों कर रख सकते हैं कि मैं एक अप-टू-डेट इन्सान हूँ। मेरा मतलब यह है कि जो कुछ मैं कहना चाहती हूँ, वह आप स्वयं ही समझ चुके होंगे।"

जमाल ने कहा—"वास्तव में मैं समझ गया। मैं धर्म से और तुम पश्चिमी सभ्यता से पृथक हो। लेकिन मुझे धर्म से कोई घृणा तो नहीं है, अलबत्ता, मैं मज़हब को समय से बहुत पीछे रह जाने वाली वस्तु समझता हूँ। और मेरे विचार से दुनिया अब इतनी प्रगति कर चुकी है कि मज़हब से कोई लाभदायक फल निकलने के बजाय यदि पहुँच सकता है तो सिर्फ नुकसान ही पहुँच सकता है। तुम स्वयं अपने को देखो कि तुम शिक्षित और सुसंस्कृत (कल्चर्ड) होने पर भी जमाने का साथ; महज़ धार्मिक नियमों की पाबन्द होने के कारण नहीं दे सकती।"

नजमा ने उसकी बात काट कर कहा—"अपना धर्म दूसरे की सभ्यता से अधिक वज़नी चीज़ है।"

जमाल उसे समझाने लगा—'यहाँ अपने-पराये का प्रश्न नहीं। यह न समझना कि मैं अपने धर्म के प्रति उदासीन हो कर किसी दूसरे धर्म का पुजारी बनना चाहता हूँ। बल्कि मैं तो धर्म की कल्पना को ही उस जमाने की यादगार समझता हूँ, जब इन्सान को बच्चों की तरह डराया और बहलाया जा सकता था। अज्ञानता और बचपन में बहुत कुछ समानता है। बच्चों से कहा जाता है कि 'सो रहो, जू-जू आ रहा है या पढ़ लो तो चीज़ देंगे।' इस तरह अज्ञानों को धर्म समझाया करता था कि बुरी बात करते समय खुदा से डरो और खुदा को खुश करोगे तो जन्नत (स्वर्ग) मिलेगी। परन्तु अब शिक्षा ने हमें बुराई-भलाई की पहचान खुद करा दी है। तो सवाल यह है कि अब मज़हब की क्या

ज़रूरत है ! क्या तुम ईमानदारी से कह सकती हो कि वाकई खुदा मौजूद है ?"

नजमा ने भौंचक्का हो कर कहा—"क्या आप सचमुच इस सीमा तक भटक चुके हैं ? मैं यदि खुदा न ख्वास्ता खुदा के वजूद (अस्तित्व) को न मानूँ तो फिर ईमानदारी का क्या सवाल ? मगर अलहमुद्दौला कि, मैं खुदा की कसम खा कर कहती हूँ कि अपने वजूद से ज्यादा उसके वजूद को मानती हूँ। जमाल भाई ! आप····· इस तरह मेरे दिल को ठेस न पहुँचायें। मेरा अब तक यह ख्याल था कि आप महज़ फैशन का, वजह से खुदा और मज़हब से बेगाना बने हुये हैं, मगर आप तो बने हुये नहीं; बल्कि दरअसल बेगाना हैं। ऐसी सूरत में मेरा और आपका एक रास्ता कैसे मुमकिन है ?"

यह कह कर नजमा ने जाने के इरादे से एक-आध कदम बढ़ाया, किन्तु जमाल ने उसका मार्ग रोक कर कहा—"लेकिन यह तो मुमकिन है कि हम दोनों कोई ऐसा समझौता कर लें कि हमारे सिद्धान्त बीच में न आयें।"

नजमा ने लापरवाही से कहा—"मैं ऐसा कोई समझौता अपने लिये मुमकिन नहीं समझती जो मेरे सिद्धान्त में हस्तक्षेप न करता हो और न ही मैं आपको इतना कमज़ोर देखना चाहती हूँ कि खुदा की मौजूदगी को न मानते हुये भी सिर्फ मेरी खातिर आप खुदा के कायल हो जायें।"

जमाल रूखे स्वर में बोला—"खैर, मैं इतना बड़ा दगाबाज़ तो शायद नहीं हूँ, मगर मैं यह चाहता था कि अगर हम दोनों अपने-अपने कट्टर सिद्धान्त को छोड़ कुछ नर्म बनने की कोशिश करें तो···"

नजमा ने बात काट कर कहा—"तो भी कुछ फायदा नहीं होगा।

वह इसलिये कि आप के लिए शायद मुमकिन हो, लेकिन मेरे लिए बिल्कुल नामुमकिन है। अच्छा, अब माफ कीजिये, मेरी नमाज़ यानी आपके कथनानुसार बकवास का वक्त आ गया है।"

यह कह कर नजमा जब तेज कदमों से वापस आयी है, तो इरफान और तारा दोनों हँस रहे थे। यहाँ शायद कोई समझौता हो चुका था।

ग्यारह

******

नजमा और जमाल के मध्य जो कशमकश पैदा हो चुकी थी; उसे दोनों अपनी छोटी सी सोसायटी पर प्रगट नहीं करना चाहते थे। ऐसी सोसायटी जो कभी ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि इन दोनों के बीच मज़हब की बड़ी दीवार होगी। इस सोसायटी में अब इरफान भी सम्मिलित हो चुके थे और उनके शामिल होने से चहल-पहल कुछ और ही बढ़ गई थी। कारण यह कि इरफान ने सुगमता से शरफ़ को अपना खिलौना बना लिया था और उसे अजीब-अजीब रंग में पेश किया जाता था। पहले केवल जमाल ही थे, किन्तु अब इरफान ने तो मालूम नहीं, शरफ़ पर क्या जादू किया था कि वह जमाल की मैत्री और सहानुभूति भूल कर इरफान के संकेतों पर नाचने में अपना भला समझता था।

इरफान ने उसके हृदय में घुस कर उसे यह बात समझा दी थी कि यह व्यक्ति, जिसका नाम जमाल है—कभी उसका मित्र और समवेद नहीं हो सकता; क्यों कि वह स्वयं नजमा का उम्मीदवार है। शत्रु से सहानुभूति और मैत्री की आशा करना केवल दुःसाहस के और कुछ नहीं है। जमाल ने न जाने, क्या-क्या उपाय किये थे और किस तरह शरफ़ को अँग्रेज़ी कपड़ों का आदी बनाया था, किन्तु इरफान ने उसे विश्वास दिला दिया कि—जमाल ने तुम्हारे साथ सब से बड़ी दुश्मनी यही की है। नजमा एक नमाज़ पाबन्द, शरीयत और ठेठ मज़हबी लड़की है।

अगर उसे वह सूट-बूट पसन्द होता तो आखिर, अब तक जमाल से उसकी शादी न हो जाती। दोनों के माता-पिता बिल्कुल तैयार हैं। स्वयं जमाल इस शादी के लिये मरा जा रहा है। मगर नजमा जमाल के रहन-सहन और पश्चिमी प्रकृति से इतनी घृणा करती है कि शादी के लिये स्पष्ट रूप में इन्कार कर चुकी है। और जिस रंग में वह जमाल को देखना चाहती है, उस रंग को विलायत से आने वाला जमाल नहीं अपना सकता। परन्तु तुम्हारे लिये यह सहज है कि तुम अपने आप को नजमा के अनुकूल ढालो। एक तो धार्मिक व्यक्ति बनने से शादी की आशा हो जायेगी और दूसरे लगे हाथ मुक्ति भी मिल जायेगी। इससे बढ़ कर और क्या होगा कि खुदा भी मिले और विसाले सनम भी। इधर के भी रहो और उधर के भी।

शरफ़ की समझ में भी यह बात आगयी, बल्कि इस से कुछ ज्यादा ही समझ गया। उदाहरणार्थ यही कि नजमा के वालिद मौलवी अब्दुल समद साहब पर भी इस तरह असर पड़ सकता है।

अतएव अचानक ही शरफ़ साहब एक-दो सप्ताह के लिये लोप हो गये। सब को चिन्ता थी कि आखिर इन हज़रत को हुआ क्या। किन्तु इरफान ने किसी को ख़बर न होने दी की इन हजरात का ठिकाना कहाँ है। चुनाचे, पन्द्रह-बीस रोज पश्चात जब शरफ़ साहब की दाढ़ी बढ़ गयी और सिर के बाल ज़रा शरई से हो गये तो इरफान ने एक दिन सब को सूचित कर दिया कि शरफ़ एक दम वली अल्लाह (ईश्वर भक्त) बन गये हैं। प्रत्येक क्षण वह हैं और नमाजें। सूरत देख कर कोई पहचान भी नहीं सकता कि यह वही शरफ़ है। प्रगट है कि यह सूचना पाते ही सब शरफ़ को देखने के लिये उत्सुक हो उठे। अतः यह लश्कर का लश्कर इरफान के नेतृत्व में शरफ़ के यहाँ पहुँचने को बेकरार था। किन्तु नजमा ने इस बात का विरोध किया कि खाला के यहाँ इस प्रकार

सब का, विशेषकर उसका जाना उचित नहीं है। परिणाम यह हुआ कि इरफान स्वयं जाकर शरफ़ को अपने साथ ले आया।

शरफ को देख कर कौन ऐसा था कि आश्चर्यचकित न रहा हो। अँग्रेज़ी बालों के स्थान पर ख़शख़शी बालों वाला गोल-गोल सिर, आँखों में सुरमा, छोटी सी नूरानी दाढ़ी, लम्बा कुर्ता और तंग मोरी का पायजामा, पैरों में चप्पल, कंधे पर चारखाने वाला रूमाल, हाथ में तसबीह (माला), नीची निगाहें, बुदबुदाते होंठ, । मैबुल और डैनियल की तो उसे देख कर एक-एक बारीक से चीख भी निकल गयी। तारा ने अपने मुँह में दुपट्टा ठूँस लिया। इसलिये कि उसे इरफान पहले ही बता चुके थे।

जमाल ने आगे बढ़ बड़े आदर से शरफ़ का स्वागत करते हुये उसके हाथ चूम लिये। परन्तु शरफ़ साहब को उसकी यह हरकत पसन्द न आई। नजमा, रज़िया और नाहिद की आँखें फटी की फटी ही रह गयी। अन्त में इस आश्चर्यमिश्रित मौन को जमाल ने भंग किया, 'खुदा किसको शक्ति दे और कब दे; इन बातों को मालिक ही जानता है।"

शरफ़ ने आँखें बन्द कर एक झिरझिरी ली। और एक बार आकाश की ओर देख कर कहा—"नमाज़ का वक्त!"

इरफान ने कहा—"अभी काफी वक्त है।"

जमाल से अब न रहा गया और उसने इरफान से पूछा—"आखिर तक़लीफ ही क्या है।

इरफान ने बनावटी क्रोध प्रगट किया—'यानी आप मज़ाक कर रहे है! यह तकलीफ है? यह नहीं कहते कि अब शरफ़ साहब प्रत्येक प्रकार के सुख-दुःख से मुक्ति पा चुके हैं। इन्होंने एक दिन स्वप्न में किसी बुजुर्ग को देखा कि वह इनका कंधा पकड़ कर झिझोड़ रहे थे और बार-बार कह रहे थे, 'काया पलट-काया पलट।' बस, एकदम इनकी

आँखें खुल गईं और उसी समय से दुनिया के प्रति इन का मोह समाप्त हो गया। अब हर वक्त नमाज़ है, दुआयें हैं और यह हैं।"

मैबुल बोली—"लेकिन आज आप ने 'शेव' नहीं किया!"

शरफ़ ने कठोरता से कहा—'लाहौल विला क़ुव्वत।'

इरफान ने कहा—"हम मुसलमानों में 'शेव' करना, बहुत बड़ा अपराध है। हम दुनियादार उसकी चिन्ता नहीं करते, लेकिन शरफ़ साहब..."

जमाल बीच में ही कहने लगा—"नूरे अल्लाह! कारण भी तो बताइये।"

इरफान ने हँसी ज़ब्त करते हुये कहा—"जी हाँ, तो शरफ़ साहब ऐसा पाप नहीं कर सकते।

शरफ़ ने पुनः कठोरता से कहा—"इन्शा अल्लाह, अज़ीज़ ..."

अब तो इरफान के लिये भी हँसी रोकनी कठिन हो गयी और तारा का तो दम ही निकला जा रहा था। नजमा, रजिया, ताहिद, खुदा जाने, किस तरह हँसी पर नियन्त्रण पाये हुये थीं। आखिर, इरफान ने शरफ़ से कहा—मेरे विचार से आप नमाज़ और दुवाओं से निमट लीजिये। समय हो चुका है।"

शरफ़ तत्क्षण खड़े हो गये और इरफ़ान इनको बहुत दूर एक ओर ले जा कर नमाज़ में इनका ध्यान जुटा, हँसी से बेकरार वापिस आगया। जमाल ने बहुत कुछ तो समझ लिया था कि यह हजरत इरफान का ही खिलाया हुआ गुल है। परन्तु विस्तृत विवरण जानने के लिये इरफान से पूछा—"आखिर यह ढोंग है क्या?"

इरफान ने नजमा की तरफ 'दण्डवत' की नाईं झुक कर कहा—"यह सब कुछ हुज़ूर के बदौलत है।"

नजमा ने आश्चर्य से कहा—"मेरे बदौलत?"

इरफान ने हँस कर पूरा विवरण सुना दिया। वह किस्सा सुनाया जा रहा था और इन सब का हँसी के मारे बुरा हाल था। अपने तमाम गाम्भीर्य के बावजूद भी नजमा हँसती जा रही थी।

जमाल ने आँसू पोंछ और हँसी पर नियन्त्रण पाते हुये कहा—"यानी कमाल यह है कि सिर तक मुण्डवा दिया है गरीब का।"

मैबुल ने कहा—"क्या वह वास्तव में इतना बेवकूफ आदमी है ?"

नजमा बोली—"लीजिये, अब की बार 'नोबुल प्राईज़' मिस मैबुल को मिलना चाहिये। यानी देख-भाल कर पूछती है कि शरफ़ बेवकूफ है या नहीं !"

जमाल ने कहा—"आदमी तो शायद ही हो, लेकिन बेवकूफ जरूर है।"

तारा ने कहा—"हाँ, है वली पोशीदा और काफ़िर खुला।"

इरफान ने तत्परता से कहा—"ग़लत ! यूँ कहिये, "आदमी पोशीदा है और खर खुला।"

जमाल ने प्रायश्चित के भाव से कहा—"हाली ने सच कहा है—"ऐ इश्क तू ने अक्सर क़ौमों को खा कर छोड़ा।"

नजमा ने हँस कर कहा—"मुझे इस मियरे पर सदैव हँसी आई है। कितनी अद्भुत तस्वीर है कि इश्क बैठा हुआ है भोजन करने। और अक्सर कौमें भुनी हुयी उसके सामने रखी हुई हैं। और इश्क खा रहा है सबको।"

इरफान ने कहा—"खैर, क़ौमों को तो नहीं। मगर यह कह सकते हैं कि ऐ इश्क तूने लोगों को खा कर छोड़ा।"

मैबुल ने दया के भाव से कहा—"Poor fellow (पूअर फैलो)"

जमाल ने कहा—"आज कल तो हर तरफ यह काशिश रही है कि

grow more food (ग्रो मोर फूड) और इरफान साहब ने यह क्रम जारी कर रखा है कि grow more fool (ग्रो मोर फल)"

नजमा ने कहा—"यदि अनाज की मेदे के लिए आवश्यकता है तो बेवकूफ की आवश्यकता आत्मा की खुराक के लिए है।"

जमाल ने तत्क्षण कहा—"विशेषतया जब कि कोई स्वभाव से ही बेवकूफ हो।"

शरफ़ को आता देखकर सब चुप हो गये। वे हजरत कुछ बुदबुदा रहे थे और तसबीह फिराते हुये आकर बैठ गये तो जमाल ने कहा—"आप यदि वजीफा (दुवाओं का क्रम) खत्म कर लें, तो मैं भी कुछ निवेदन करूँ!"

शरफ़ ने तसबीह फिराना छोड़ कर कहा—"कहिये!"

जमाल ने कहा—"सुना था कि खुदा से लौ लगाने से पहले इन्सान इस दुनिया में प्रेमलीला रचाता है। लेकिन आपकी प्रेमलीला की तरफ से हमें कोई खबर नहीं मिली!"

शरफ़ ने एक दिग्गज की नाईं कहा—"मेरी ईश्वर भक्ति कभी भी दुनिया के और लोगों की तरह सांसारिक प्रेम के प्रति आकर्षित नहीं हुई।"

जमाल फौरन बोला—"तो फिर आपने सजदों को तड़पने दिया होता! यह सजदे करने क्यों शुरू कर दिये?"

शरफ़ ने निरुत्तर हो कर कहा—"हाय कमबख्त, तू ने पी ही नहीं!"

जमाल ने कहा—"महज़ मुझे कमबख्त कहने के लिये यह बेमौका मिसरा आपने खूब पढ़ा!"

शरफ़ जमाल को छोड़ नजमा से सम्बोधित हो बोला—"आपने नमाज नहीं पढ़ी?"

नजमा ने गम्भीर हो कर कहा—"अब आप ने शुरू कर दी है, तो मैं क्या करूँगी पढ़ कर।"

शरफ़ ने हैरत से कहा—"ऐं.....!"

इरफान ने कहा—"यह तो वही बात हुई शरफ़ साहब कि "मैं हुआ क़ाफिर तो वह क़ाफिर हो गया मुसलमान।"

शरफ़ ने संशोधन किया—"जी नहीं, मैं हुआ मुसलमान तो वह मुसलमान क़ाफिर हो गया।"

नजमा ने कहा—"जी हाँ, बस, मौजूँ नहीं है वर्ना मिसरा खूब है।"

शरफ़ ने जैसे बहुत गंभीरता से पूछा—"मगर वाकई आप नमाज़ तो बड़ी पाबन्दी से पढ़ा करती थीं!"

नजमा शरारत से बोली—"आज तो मुझे नमाज़ के अलावा शुकराना (धन्यवाद) की भी दो 'रक़अतें' पढ़नी हैं कि खुदा ने आपका यह शक्ति दी।"

शरफ़ ने झेंप कर कहा—"अभी तो कुछ नहीं हो सका। मैं बड़ा गुनहगार हूँ।"

जमाल ने कहा—"गुनहगार तो खैर, आप हैं। मगर क्या आपका इससे भी ज्यादा कुछ इरादा है?"

इरफान ने जमाल को शरफ़ की तरफ से समझाते हुये कहा—"जमाल साहब! आप जो यह परिवर्तन देख रहे हैं, यह सब पन्द्रह-बीस दिन का परिणाम हैं। गोया अभी तो इब्तदाये इश्क है।"

शरफ़ ने पुनः अपनी कावलियत जताई—"इब्तदाये इश्क है रोत है क्या.....?"

जमाल ने बड़ी चिन्ता प्रगट की। "ग सबको आप की हालत पर और ज्यादा रोना पड़ेगा?"

इरफान ने गम्भीरता से कहा—"जी हाँ, यह तो परिवर्तन है ज़माने के ! एक दिन वह था कि शरफ़ साहब पैदा हुये थे और रो रहे थे, लेकिन उस समय इनके रोने पर भी सब खुश थ और हँस रहे थे। अब दुनिया आपको रोयेगी, लेकिन आप हँसेंगे।"

'दुनिया आपको रोयेगी' वाले वाक्य पर नियन्त्रण करने पर भी कोई अपनी हँसी न रोक सका और जमाल ने इरफान की पीठ पर हाथ मारते हुये कहा—"खबीस कहीं का !" और हँसी से लोट-पोट हो गया। इस हँसी के तूफान को नजमा ने सँभाला, कहने लगी—"शरफ़ साहब ! आप हँसी पर बिल्कुल ध्यान न दें ! अल्लाह वालों की हँसी दुनिया वालों ने हमेशा उड़ाई है।"

और कुछ देर पश्चात शान्ति छा गयी। इरफान शरफ़ को लेकर चल दिया और बाकी सब अपनी-अपनी तरफ रवाना हो गये।

बारह

*****

इरफान वास्तव में विचित्र सा व्यक्ति था। जितना हँसमुख उतना ही कुशाग्र बुद्धि भी। चेहरे पर सदैव मुस्कराहट खेला करती थी, परन्तु दिल व दिमाग में बहुत सी विकट समस्यायें भी घूमा करती थीं, जिनको वह हल किया करता था। वह नियमित रूप से नमाज़ी तो न था, किन्तु जमाल की नाईं धर्म के प्रति उदासीन भी नहीं था। ईद, बकर-ईद की नमाज़ पढ़ लिया करता था और रमज़ान के माह में रोज़े रखने की उसे बचपन से आदत थी। आजकल के शिक्षित वर्ग में धर्म के प्रति इतना लगाव ही बहुत है। इतने दिनों तक कालेज का जीवन यापन करने के बाद भी उसे ताश के किसी खेल से दिलचस्पी न थी और न ही वह सभ्यता के बनावटी चोंचलों में विश्वास रखता था। यद्यपि यह शौक पूरा करने के लिये वह चाहता तो अपनी खाला से सब कुछ ऐंठ सकता था।

मैडिकल कालेज में भी स्वस्थ और सुन्दर होने पर वह किसी नर्स की अर्थ भरी दृष्टि का रहस्य कभी नहीं समझा। यों तो वह अत्यन्त नटखट था—कालेज की तमाम शरारतों में सब से पूर्व वही हर हंगामे का हीरो, क्रिकेट का कप्तान, टेनिस का अच्छा खिलाड़ी, फुटबाल का जानी दुश्मन और हाकी से अत्यधिक लगाव रखने वाला था। परन्तु वह इन तमाम बातों के साथ ही बहुत ठोस किस्म का आदमी था और उसकी बुद्धि इतनी कुशाग्र थी कि जो वस्तु एक बार उसकी दृष्टि में से गुजर जाय; फिर क्या मजाल जो उसके मस्तिष्क से निकल

जाय। उसकी आकर्षक अदायें, शरीफाना शरारतें, उसकी विलक्षणता और उसकी शिष्टतायें उसे प्रायः शीघ्र ही सोसायटी का हीरो बना दिया करती थीं। अतः उस सोसायटी में उसकी उपस्थिति के बिना अब कोई आनन्द ही नहीं आता था।

तारा तो खैर, एक विशेष सम्बन्ध के कारण उसमें दिलचस्पी रखती थी; किन्तु तारा के अतिरिक्त नजमा ने उसके सम्बन्ध में बहुत अच्छी राय कायम की थी। और नजमा की यह अच्छी राय गोया इरफान के लिये गर्व की बात थी। जमाल भी इरफान को बहुत चाहता था। यहाँ तक कि मैबुल और डैनियल उसे बड़े प्यार से Naughty boy (शरारती लड़का) कहा करती थीं।

इरफान की खतरनाक दृष्टि से नजमा और जमाल के बीच की खाई आखिर छुप न सकी। और उसने इस बात का अनुमान लगा लिया कि इस आकर्षक चहल-पहल से भरे वातावरण की पृष्ठ-भूमि में एक मौन खिंचाव या कशमकश भी अपना काम कर रही है। इसलिये उस ने जो अनुमान लगाया था उसकी जांच तारा की सहायता से की और तारा से उसे यह मालूम हो गया कि यह गुत्थी सुलझने की अपेक्षा उलझती ही जाती है। किन्तु तारा को स्वयं भी इस बात की खबर न थी कि जमाल और नजमा के बीच समझौते की पारस्परिक बातें किस सीमा तक हो चुकी हैं और इस प्रकार की बातें होने के बाद भी आशा का पक्ष निराशा के पक्ष की समानता में दुर्बल हो गया है। इरफान ने तो नजमा की केवल कुछ नज़रों को देखा था, जो सदैव खिली रहने पर भी जमाल से साक्षात होते ही बुझ सी जाती थीं। और उसने थोड़ा-बहुत जमाल की दशा का भी अध्ययन किया था जो सदैव प्रसन्न रहने पर भी नजमा के सामने खिन्न सा हो जाता था। परन्तु इरफान की प्रकृति ऐसी थी कि उसे इस प्रकार के रहस्यों पर सुगमता से विश्वास नहीं होता था। ऐसी स्थिति में उसका दम घुटने लगता था।

उसे कुछ ऐसा प्रतीत होता, जैसे वतावरण में धुँआ भरा हुआ है। आखिर, एक दिन उसने बहुत उलझ कर जमाल को पकड़ ही लिया, बोला—"जमाल भाई ! यह बिना पूछे कि मैं कहाँ जा रहा हूँ; आप चुपचाप से मेरी कार में बैठ जाईये।"

जमाल ने आश्चर्य से उसका मुँह देखा तो उसने पुनः कहा—"बस, बैठ जाईये न ! तशरीफ लाईये।"

जमाल ने कार में बैठते हुये कहा—"खैरियत तो है ?"

इरफान मोटर स्टार्ट करते हुये बोला—"खुदा की इनायत से यहाँ सब खैरियत है। और आपकी खैरियत के लिये खुदा वन्द करीम से दुआ करता हूँ। दूसरी विनती यह है कि बस, चलिये जहाँ मैं ले चलूँ।"

जमाल ने कहा—"मगर भई ! मुझे आज क्लब जरूर जाना चाहिये। प्रबन्धक कमेटी के चुनाव की समस्या है।"

इरफान ने निश्चिंत हो कर कार को बस्ती से दूर ले जाने वाली सड़क पर मोड़ कर कहा—"मेरी राय यह है कि इस चुनाव का अपने दिमाग से निकालिये और इतमीनान से मेरे साथ चलिये।"

जमाल ने आश्चर्य से कहा—"आखिर, किस्सा क्या है ? कुछ मालूम तो हो !"

इरफान संतोषजनक भाव से बोला—"कुछ नहीं, सब मालूम हो जायेगा। आपको मालम है कि जिस जगह हम इस वक्त हैं वहाँ से आपको क्लब जाने के लिये इस समय कोई सवारी नहीं मिलेगी और न ही आप पैदल जा सकते हैं। रह गई मेरी यह गाड़ी यानी कार, तो यह आपकी सेवा नहीं कर सकती। अतः आप इतमीनान से अब मेरे साथ इस सामने वाले बाग में चलिये।"

बाग के किनारे कार रोक कर इरफान उतर पड़ा। और जब जमाल मौन धारण कर उसके पीछे-पीछे बाग में प्रवेश कर गया, तब इरफान ने एक बेंच की ओर संकेत कर जमाल से कहा—"तशरीफ रखिये!"

जमाल ने बैठते हुये कहा—"आखिर, यह कैसा जंगलीपन है ?"

इरफान ने संजीदगी से कहा—"पहले आप यह बताईये कि आपको मेरे विषय में यह मालूम है कि मैं कितना जिद्दी आदमी हूँ !"

जमाल बोला—"जी हाँ, मालूम है।"

इरफान कहने लगा—"बस, तो मेरी ज़िद को सामने रख कर यह कसम खाईये कि जो कुछ मैं आपसे पूछूँगा, आप उसका साफ-साफ और सच्चा जवाब देंगे। ध्यान रहे कि मैं झूठ का बहुत खतरनाक पारखी हूँ और बहानेबाज़ी आज तक मेरे सामने सफल नहीं हुई है। इसलिये इन कोशिशों को काम में ला कर अपना और मेरा समय नष्ट न करियेगा ! आप स्वयं समझदार हैं।"

जमाल ने हँस कर कहा—"मसखरे ! कुछ कहेगा भी ! बिना वजह धौंस देता चला जा रहा है।"

इरफान बोला—"मैं सीधे-सीधे सवाल करता हूँ कि नजमा और आपके बीच वह खामोश कशमकश क्या है, जिस पर आप दोनों पर्दा डाले हुये हैं ?"

जमाल जैसे आश्चर्यचकित हो बोला—"कशमकश·····?"

इरफान ने ताली बजा कर कहा—"वन्स मोर ! (एक बार और) बड़ी अच्छी एक्टिंग है हैरत की ! लेकिन शायद आप भूल गये हैं कि मैंने अभी-अभी आपको बहानेबाज़ी से दूर रहने की दोस्ताना राय दी थी। अच्छा, अब सच बोलने की कोशिश कीजिये ! शाबाश !"

जमाल ने झुँझला कर कहा—"अजीब चीज़ हो, भई ! कशमकश वगैरह कुछ भी नहीं है। हम दोनों एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से पसन्द करते हैं और विचारों में मेल न होने के कारण नापसन्द भी।"

इरफान ने प्रसन्नता से कहा—"शाबाश ! अब आप सच बोलने की तरफ झुके हुये नज़र आते हैं ! व्यक्तिगत रूप से पसन्द करना और विचारों में मेल न होने के कारण नापसन्द होना; इन दोनों को आप

लोगों के सेवक को ज्ञान है। परन्तु मैं आप से विस्तृत विवरण चाहता हूँ। जमाल भाई! मजाक छोड़िये। मैं आप से सच कहता हूँ कि आप दोनों ने अपने-अपने दिलों की उलझनों को छिपाने का असफल प्रयास किया है। इसीलिये जो कुछ आप दोनों के दिलों पर गुजर रही है, उसका किसी को ज्ञान नहीं है। तारा तक को मालूम नहीं। आप विश्वास कीजिये! मेरा दम घुटा जाता है और मैं आप दोनों के हँसमुखपने के आनन्द में छिपी हुई उस मुरझाहट को देख रहा हूँ जो धीरे-धीरे आप दोनों पर छा रही हैं।"

जमाल ने स्नेह से इरफान का हाथ पकड़ कर कहा—"इरफान! तुम खतरनाक हद तक तेज बुद्धिवाले हो! तुम ने यह जिक्र न छेड़ा होता तो अच्छा था। तुम को सब कुछ मालूम होने के बाद भी शायद को यह ना मालूम होगा कि मैं इस सिलसिले में अपने दिल और दिमाग इतना नाजुक बना चुका हूँ कि अब इसका जिक्र ही सहन नहीं होता।"

इरफान भी आत्मीयता से बोला—"आप ग़लत समझ रहे हैं। इस जिक्र को आप इसलिये सहन नहीं कर सकते थे कि आपके दर्द का अनुभव आप को छोड़कर और किसी को न था। मगर अब तो मैं आपका यह बोझ हल्का करना चाहता हूँ। क्या मालूम, मेरे ही दिमाग में कोई ऐसी तरकीब आ सके जो इस गुत्थी को सुलझा दे।"

जमाल ने निराशा प्रगट की। "नहीं इरफान! यह गुत्थी सुलझने वाली गुत्थियों में से नहीं है! यह गुत्थी कभी की सुलझ चुकी होती, यदि मैं नजमा के प्रति बेईमानी करने पर खुद को राज़ी कर सकता या नजमा ही मेरे कट्टर सिद्धान्तों में लचक पैदा कर सकती। मगर मुसीबत यह है कि मैं नजमा को धोखा नहीं दे सकता। मैं उसका आदर करता हूँ। अगर मेरे दिल में उसके लिये सिर्फ मुहब्बत ही होती तो 'मुहब्बत और जंग (युद्ध) में सब कुछ उचित है' वाले नियम पर

चल कर मैं अपने रास्ते की कठिनाईयों को दूर कर देता। लेकिन यहाँ प्रश्न उसके आदर का है !"

इरफान ने कुछ न समझते हुये कहा—"मैं चाहता हूँ कि आप मुझ को वह सब-कुछ समझा दें जो मैं समझने की कोशिश करते हुये भी नहीं समझ पाया। और आप इतने अटपटे ढंग से बात कर रहे हैं कि जो कुछ मैं समझता हूँ वह भी दिमाग से निकला जाता है।"

जमाल ने इरफान के कंधे पर हाथ रख कर कहा—"अजीजेमन ! बात सिर्फ इतनी है नजमा ठेठ पूर्वी सभ्यता में विश्वास रखने वाली और धार्मिक प्रवृत्ति की लड़की है। और पढ़ी-लिखी और बुद्धिमान होने पर भी वह अपने धर्म और पूर्वी सभ्यता में पूरा विश्वास रखती है। मैं स्वभाव से ही मजहबी आदमी नहीं और विलायत जा कर मैं औरत के प्रति जो विचार धारा साथ लाया हूँ; उससे नजमा बिल्कुल भिन्न है। अगर मैं जबरदस्ती अपनी विचारधारा और अपने विश्वास को बदलता हूँ तो इसमें मेरी स्वीकृति नहीं होगी, बल्कि किसी भार को बेकार में अपने ऊपर डालूँगा और ऐसा करना नजमा के विचार में बहुरूपिया बनना होगा, स्वाँग भरना होगा और इस तरह की बेईमानी मैं कम से कम नजमा के साथ नहीं कर सकता।"

इरफान ने कहा—"गोया, आप का मतलब यह है कि आप नजमा से मुहब्बत तो जरूर करते हैं, लेकिन उसे मजहब से बेगाना और पश्चिमी रंग में रँगी हुई लड़की देखना चाहते हैं ?"

जमाल ने इसी बात का दूसरा रूप पेश किया—"यह तो खैर, नामुमकिन है ! मैं तो खैर, इस कोशिश में भी सफल नहीं हो सकता कि अपने को नजमा के रंग में या धर्म में आस्था रखने वाला और पूर्वी रीति-रिवाजों का आदर करने वाला खालिस हिन्दुस्तानी बना सकूँ !"

इरफान ने कहा—"आखिर; क्यों नहीं ? आप अपने को नजमा के लिये मजहबी और मशरिकी क्यों नहीं बना सकते ?"

जमाल ने ज़ोर देते हुये कहा—"इसलिये कि मज़हब का सम्बन्ध नजमा से नहीं है। अगर पूर्वी सभ्यता के प्रति मेरा आकर्षित होना, नजमा के कारण हुआ तो यह नजमा के प्रति आकर्षित होना होगा; ना कि पूर्वी सभ्यता के प्रति ! यही तो एक नाज़ुक सी बात है इरफान, जो एक पहाड़ बन मेरे और नजमा के बीच खड़ी हो गई है। मैं झूठ नहीं कहता, बल्कि वास्तव में मुझे रोजे, नमाज़, इस पर्दे और इस वेश-भूषा से कोई लगाव नहीं है। जब मैं किसी को नमाज़ पढ़ते देखता हूँ तो मुझे सचमुच हँसी आती है। मैं सिर्फ इसी धर्म को नहीं, बल्कि दुनिया के तमाम धर्मों को ढकोसला समझता हूँ और धर्म को उस जंगली सभ्यता की यादगार मानता हूं, जब इंसान ने अपनी बुद्धि से काम लेने की कोशिश नहीं की थी और उसको मजबूर होकर इन बेकार की चीज़ों या ढकोसलों में विश्वास रखने वाला बनाया गया ताकि वो अपनी मर्यादा में रहे। लेकिन अब इन धर्मों की क्या ज़रूरत है, जब हम में बुरे-भले की तमीज़ पैदा हो चुकी है, जब हम इसी दुनिया में अपने कर्मों से नरक या स्वर्ग पैदा कर सकते हैं; तो अब अगर नजमा के कारण मैं अपनी हँसी रोकूँ—तो यह बेईमानी होगी।"

इरफान ने बातें काट कर कहा—"बेईमानी.....?" यानी मज़हब से इतने दूर रहने पर भी आप ईमान और बेईमानी में विश्वास करते हैं !"

जमाल गम्भीर हो कर बोला—"इरफान ! मैं इस समय ऐसी स्थिति में नहीं हूँ कि तुम्हारे ताने का मुकाबला कर सकूँ।"

इरफान ने सहानुभूति जतलाई। "माफ कीजियेगा ! मेरी बात करने के ढंग ने एक सवाल को ताना बना दिया। मैं तो वाकई यह समझना चाहता हूँ कि आप मज़हब के नाम से तो नफरत करते हैं, मगर बुराइयों से इतने दूर। शराब आप नहीं पीते, जुआ आप नहीं खेलते, दुनिया का कोई और ऐब भी आप में नज़र नहीं आता।

ईमानदार इतने कि जरा से स्वार्थ को आप सहन नहीं कर सकते। आप जैसे आदमी को सचमुच में मज़हबी आदमी होना चाहिये था। धर्म भी तो यही बातें सिखाता है। फिर आखिर, मजहब से इतना दुराव क्यों.....?"

जमाल ने जैसे बाजी जीत कर कहा—"यही तो मैं तुम से कहलवाना चाहता था और यही मैं तुम्हें समझाना चाहता था कि जब धर्म के बिना ही इन्सान सीधे रास्ते पर चलने वाला और सच्चा बन सकता है तो फिर सवाल यह है कि ढोंग क्यों रचाया जाय? मेरे विचार से पवित्रता और सच्चाई अपनाना ही इन्सानियत की माँग है।"

इरफान ने उस पर उसी के शब्दों द्वारा आक्रमण किया—"उसी माँग की अनुभूति का नाम धर्म या मज़हब है।"

जमाल बोला—"अच्छा, यों ही सही! मगर यह तो विचारों का साधारण सा ही अन्तर है कि तुम इन विशेषताओं को मज़हब के नाम से पुकारते हो और मैं इन्सानियत के नाम से। बहरहाल, यह बहस बड़ी लम्बी है और हम कुछ क्षणों में इस गुत्थी को नहीं सुलझा सकते जिसको हमारे बुजुर्गों के बुजुर्ग सुलझा-सुलझा कर आपस में उलझा करते हैं और हमारी नस्लों की नस्ल भी इसी शोले को तर्क करने के लिये भविष्य की नस्लों के लिये छोड़ जायेंगी। संक्षेप में यह कि मैं नजमा को धोखा नहीं दे सकता और न ही नजमा को धोखा दिया जा सकता है।"

इरफान ने उकता कर कहा—"इसका मतलब यह हुआ कि आप अपने अविश्वास पर इतना विश्वास रखते हैं कि इसे नजमा के लिये भी....."

जमाल उसकी बात काट कर, उत्तेजित हो बोला—"फिर वही नजमा के लिये...? इरफान, तुम आखिर, मेरी बात क्यों नहीं समझ रहे हो? मैं हर एक के लिये शायद सब कुछ कर सकूँ; मगर नजमा मुझे इतनी प्रिय है और मैं उसका इतनी इज्जत करता हूँ कि उससे झूठ

बोलने की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता और अपने आप को इतना गिराने के बाद न ही नजमा के काबिल समझता हूँ। क्या इसीलिये मैं मजहबियत और मशरिकयत का ढोंग रचाऊँ, जिसे वास्तव में मेरा दिल बकवास समझता है!"

इरफान कहने लगा—"भाई साहब! यही तो खाकसार भी अर्ज कर रहा हूँ कि आप धर्म के खिलाफ ऐसे विचार रखते हैं कि वही विचार आप का धर्म बन गये हैं। फिर धर्म के लिए आप की नफरत तो बाकी नहीं रही न! एक और धर्म बेदीनी की शक्ल में आप के सामने है जिसके आप सच्चे समर्थक हैं। खैर, जो कुछ भी हो; मगर अब तो सवाल यह है कि यह सजोग हर दशा में होना है—मुझे मालूम नहीं क्यों: इस बात पर यकीन है कि आप दोनों के बीच के पहाड़ रूई के गालों की तरह तितर-बितर हो जायेंगे और यह समानान्तर रेखायें किसी एक केन्द्र पर जा मिलेंगी। आखिर, वह केन्द्र इतने परेशान होने पर क्यों नहीं मिला, अभी क्यों नहीं मिला!"

जमाल ने मुस्करा कर कहा—"यदि आप बुद्धिमान नहीं बल्कि आविष्कारक बनना चाहते हैं तो अपनी जाँच पड़ताल जारी रखिये, लेकिन मुझे तो प्रगट रूप में ऐसा कोई केन्द्र नजर नहीं आता।"

इरफान ने उठते हुये कहा—"अल्लाह, ऐसी टेढ़ी-मेढ़ी बहस करने वालों से बचाये! दिमाग पच्ची हो कर रह गया; मगर इस कम्बख्त की समझ में कुछ न आया। अब मैं दूसरे पक्ष का निरीक्षण करूँगा। देखूँ, वहाँ क्या 'मन्तख' बघारी जाती है।"

जमाल ने हँसते हुये कहा—"मेरा विचार यह है कि मुझ से बात-चीत करने के बाद तुमको मेरे पागल होने का अहसास हुआ होगा। मगर नजमा से बातचीत कर शायद तुम्हें खुद अपने पागल होने का विश्वास हो जाय। मेरी बातचीत ने तुम्हें कम से कम मायूस नहीं किया होगा। लेकिन वहाँ ऐसा टका सा जवाब मिलेगा कि आप अपना सा मुँह लेकर

रह जायेंगे। पहले तो मुझे यकीन ही नहीं कि इस बारे में आपको मुँह खोलने की इजाजत दी जाये।"

इरफान ने चलते हुये कहा—"अच्छा, तशरीफ लाईये! आपके विचार से मैं ऐसा ही गँवार हूँ कि मुँह ना खोलने की इजाजत का मौका आने दूंगा! मैं जंग के कई नक्शे हर वक्त अपनी जेब में रखता हूँ। नजमा से बातचीत करने का मेरा यह तरीका न होगा। आप मुझे इतना बेवकूफ न समझें, जितना मैं सूरत से नजर आ रहा हूँ। बहरहाल, तशरीफ लाईये।"

तेरह

****

नजमा के हृदय पर बहुत-कुछ बीत रही थी, किन्तु इस पर भी वह प्रसन्न थी। वह क़शक़मश के प्रति निश्चिन्त थी। अब उसे केवल यह चिन्ता थी कि वह जमाल को कभी निराश और बुझा-बुझा नहीं देखना चाहती थी। स्पष्ट है कि इसका केवल एक ही उपाय था कि वह जमाल को पाश्चात्य सभ्यता के प्रति आकर्षित करने वाली चादर को ओढ़ कर उसकी हो जाय। परन्तु ऐसा करने में वह स्वयं को विवश पाती थी। और वह स्वयं जमाल को भी इतना पतित नहीं देखना चाहती थी कि केवल उसे अपनाने के लिये जमाल स्वयं को बदल ले। यदि जमाल ने यह दुर्बलता दिखाई होती तो कदाचित वह नजमा की दृष्टि में गिर चुका होता। परन्तु वह जमाल के चरित्र से भली भाँति परिचित थी। वह उसकी सच्ची अधार्मिकता को झूठे धर्म से अधिक पसन्द करती थी। वह खुदा की वह उपाधि नहीं चाहती थी जिससे जमाल के जो विचार या विश्वास धर्म के प्रति थे, वह केवल उसके लिये बदल जायें। नजमा के मस्तिष्क में आजकल जिन विचारों का समूह रहता था, उनको नजमा के स्वभाव की समानता में उसकी प्रकृति के प्रतिकूल समझा जायेगा। परन्तु नजमा वास्तव में अपने आपको इस विचित्र परीक्षा के लिये तैयार कर रही थी कि स्वयं वह जमाल के लिये कोई अच्छी लड़की चुने, जो जमाल की प्रकृति के अनुकूल हो और उस के जीवन में थोड़ा-बहुत आनन्द भर सके। वह देख रही थी कि यदि जमाल का ध्यान उस पर केन्द्रित रहा तो कुछ दिनों में ही यह मायूसियों, यह ठंडी आहें, यह खामोश फरियादें, उसे हतोत्साह कर उसे चलती-फिरती लाश और आत्मा से वंचित शरीर

बना देगी। वास्तव में नजमा स्वयं ही प्रत्येक प्रकार की परीक्षा के लिये प्रस्तुत थी, किन्तु जमाल का यह जीवन उस से देखा नहीं जाता था। वह जानती थी कि लड़कियाँ हजार मिल सकती हैं, किन्तु जमाल को अपनी ओर आकर्षित करना किसी के लिये भी सहज नहीं है। उसे अनुमान था कि वह स्वयं किस सीमा तक जमाल पर छायी रहे क्यों कि जमाल के लिये किसी अन्य दिशा में जाना एक हद तक असंभव सा था। परन्तु इसके अतिरिक्त और कोई उपाय भी न था कि जमाल का यह कटु जीवन अपनी दिशा बदल पाता। नजमा की दृष्टि इस विषय में बार-बार घूम कर मैबल पर आ टिकती थी। वह मैबुल, को जमाल के लिये हर रूप में उपयुक्त और पूरक पाती थी। मैबुल सुन्दर थी, सुशील थी, प्रखर बुद्धि वाली थी। जमाल के लिये एक विशेष स्थान मैबुल के हृदय में था। जमाल के विलायती जीवन के गहरे चिन्ह मैबुल के दिल में थे और जमाल ने अपने आप को जिस प्रकार प्रत्येक आकर्षण दूर रखा था, उस व्यवहार पटुता की वह दिल से कदर करती थी। वह स्वयं नजमा से कई बार कह चुकी थी कि तुम से अधिक भाग्यशालिनी लड़की और कौन होगी जिसे जमाल सा पवित्र और स्नेही पति मिलने वाला है। नजमा चाहती थी कि इस सौभाग्य का सेहरा मैबुल ही के सिर बाँध दे। उसे विश्वास था कि वह मैबुल को अवश्य ही इस सम्बन्ध के लिये राजी कर लेगी, किन्तु फिर वही जमाल की स्वीकृती का प्रश्न...! आखिर, उसने बहुत सोच विचार करने के पश्चात यह निश्चय कर लिया कि यदि वह स्वयं अपने प्रेम की आहुति की शपथ जमाल को दिलायेगी तो जमाल उस के संकेत पर अपने को बुल के हवाले अवश्य ही कर देगा। प्रत्येक दशा में उस के लिए पहली मंजिल यह थी कि मैबुल से इस विषय में ज़िक्र करे। अतः बहुत-कुछ सोचने के बाद आखिर एक दिन उसने अपने विचार को व्यक्त कर दिया और बिना कोई सूचना दिये वह मैबुल के यहाँ जा धमकी।

मैबुल भी संयोगवश उस समय एकाकी थी। परन्तु नजमा को शंका

थी कि कदाचित वहाँ डैनियल या मैबुल की कोई अन्य सहेली न आ धमके। इस कारण उसने यह तय कर लिया था कि मैबुल को संग ले कर या तो कहीं बाहर चली जायेगी या मैबुल से कुछ ऐसा प्रबन्ध करवायेगी कि उसकी उपस्थिति का किसी को कोई आभास ही न मिले। अतएव नजमा ने वहाँ पहुँचते ही मैबुल के आश्चर्य प्रगट करने और स्वागत करने के उत्तर में यह कहा—"खैर, मेरे आने पर ताज्जुब तो बाद में करना। सब से पहले तो यह इन्तजाम करो कि या तो मेरे साथ कहीं बाहर चलो, वर्ना अपनी आपा से कह दो कि अगर कोई आये तो तुम्हारे बारे में कह दिया जाय 'घर में मौजूद नहीं हैं।' मुझे तुम से एकान्त में बहुत सारी बातें करनी हैं।"

मैबुल ने सहम कर कहा —"कुशल तो है ?"

नजमा ने मुस्करा कर कहा—"कुशल है बावली ! घबराने की कोई बात नहीं। हाँ, एकान्त होना आवश्यक है। ऐसा न हो कि कोई आजाये।"

मैबुल ने खामोशी से आ कर आपा को हिदायतें दीं और नजमा को साथ ले अपने 'बैड-रूम' में चली गयी ताकि वहाँ किसी का आगमन न हो। वहाँ पहुँचने के पश्चात उसने डरते-डरते पूछा —"कम से कम यही बता दो कि किस किस्म की बात है ! मैं अपने आप को वह बात सुनाने के लिये तैयार तो कर लूँ !"

नजमा ने धैर्य रख मुस्करा कर कहा—"बात बहुत अच्छी किस्म की है। बड़ी खुशी की। लेकिन अचानक ही कह रही हूँ, इसलिये तुम्हें जरा ताज्जुब होगा। मतलब यह कि तुम्हारा दम नहीं निकलेगा। न ही कोई खतरे या चिन्ता की बात है।"

मैबुल ने सन्तोष अपनाने के प्रयास के साथ कहा—"मैं तो सहम गई थी कि न जाने क्या हो गया। अच्छा, अब तुम जल्दी से बता दो, मेरा बाकी डर भी दूर हो जाय !"

नजमा ने मबुल के समीप उचक कर कहा—"डार्लिंग ! मैं तुम्हें एक चीज़ देने और एक चीज़ तुम से माँगने आयी हूँ। बोलो, सौदा करती हो ?"

मैबुल बोली—"कैसी बातें कर रही हो नजमा ! तुम ने जब कोई चीज़ दी है, मैंने सदैव उसे गर्व से स्वीकार किया है और मेरे पास या मेरे वश में जो कुछ है, वह तुम्हारा है। तुम्हें मुझ से पूछने की जरूरत ही नहीं !"

नजमा ने बात पक्की करने के भाव से कहा—"कल्पना करो, तुम्हारे वश में हो, बल्कि तुम्हें सहन करना पड़े... !"

मैबुल ने जोश से कहा—"सहन करना तो वश से बाहर का चीज़ नहीं। अगर सहन करने पर वश पैदा हो सकता है तो इसे वश ही समझो। आखिर, तुम यह पहेलियाँ क्यों बुझा रही हो ? साफ-साफ क्यों नहीं कहती !"

नजमा ने मैबुल का हाथ पकड कर प्यार से कहा—"अभी-अभी बात साफ हुई जाती है। अच्छा, फर्ज़ करो मैं तुम्हीं को तुम से माँग लूँ !"

मैबुल ने हँस कर कहा—"इस से ज़्यादा आसान तो शायद कोई काम न हो। मैं यों भी तुम्हारी हूँ। तुम्हारी चीज तुम्हें देना कौन सी मुश्किल बात है !"

नजमा ने मैबुल का कँधा झिझोड़ कर कहा—"बस, तो ठीक है। अब सौदा तो हो गया। अब यह बताओ, अगर मैं तुम्हें अपनी कोई बहुत प्यारी वस्तु दूँ... ?"

मैबुल ने कहा—"तुम जो चीज़ मुझे दोगी, प्यारी होगी।"

नजमा ने कहा—"इन्कार तो नहीं करोगी... ?"

मैबुल ने तंग आ कर कहा—"आज तुम्हें क्या हो गया है नजमा ?" तुम्हारी चीज है और मैं इन्कार करूँगी ! तुम्हारी तबियत तो अच्छी है ! ज़रा नब्ज़ तो दिखाओ !"

नजमा ने कहा—"नब्ज नहीं, प्यारी बहन ! मेरा दिल देखो ! अच्छा, तो अब तुम अपने वचन पर दृढ रहना ! तो सुनो, मैं आज तुम से तुम्हारी भीख माँगने आयी हूँ। मैं तुम्हें अपनी ज़िन्दगी की हासिल चीज़ सौंपना चाहती हूँ यानी जमाल।"

मैबुल बोली—"नजमा ... ! क्या मतलब है तुम्हारा ?"

नजमा ने उसकी आँखों में आँखें डाल कर कहा—"मैबुल, तुम वायदा कर चुकी हो ! मैं तुम्हें जमाल से और जमाल के साथ तुम्हें बाँधने का फैसला कर चुकी हूँ। अब तुम इन्कार नहीं कर सकतीं !"

मैबुल ने किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो कहा—"मुझे मालूम है कि इस वक्त तुम्हें स्वप्न की बात होने, मेरे दिमाग़ में ख़लल होने, इस बात के मज़ाक होने वगैरह के, खुदा जाने, कितने शक हो रहे होंगे। लेकिन न यह स्वप्न है, न मेरा दिमाग़ ख़राब और न ही मैं मज़ाक कर रही हूँ, बल्कि तुम से विनती कर रही हूँ कि तुम मेरी प्रार्थना स्वीकार करो और जमाल के जीवन को इस गहरे गढ़े में गिरने से बचा ले, जिसमें वह गिरा ही चाहता है—वर्ना मैं ही नहीं बल्कि हम सब, जमाल जैसे योग्य व्यक्ति सच्चे मित्र और बहुत प्यारे साथी को खो देंगे। और वह हमारे साथ रहते हुए भी अपनी उदारता, अपने हँसमुखपने और अपनी ज़िन्दा-दिली को खो कर, खुदा जाने क्या से क्या हो जायेगा।"

मैबुल, न मालूम यह बात सुन भी रही थी या नहीं। वह इस समय पत्थर की एक ऐसी मूर्ति नज़र आ रही थी, जिसमें जीवन और आत्मा का अभाव होता है। आँखें फटी की फटी रह गयी थी। साँस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे थी।

नजमा ने कुछ देर उसके उत्तर की राह देख, उसे झिंझोड़ कर कहा—"बोलो मैबुल, मुझे कोई ऐसा जवाब दे दो कि मैं आशा-निराशा

उसके भवर जाल से मुक्ति पाऊँ, जो मेरी आत्मा को कष्ट दे रहा है। तुम मुझको सिर्फ इसी तरह खरीद सकती हो और जीवन में सब से बड़ा अहसान मेरे साथ यही कर सकती हो। कुछ तो बोलो ... !"

मैबुल ने बहुत-कुछ कहने का इरादा कर बड़ी कठिनाई से कहा—"मगर..."

नजमा ने फिर मचल कर कहा—"खुदा के लिये मेरा दिल न तोड़ देना। मैबुल ! तुम्हें नहीं मालूम कि मैं अपने दिल को कितना नाजुक बना कर तुम्हारे पास लायी हूँ।"

मैबुल ने बड़ी कठिनाई से अपने को संयत कर कहा—"तुम खुद बताओ नजम, कि अगर इस वक्त तुम मेरी जगह होतीं तो क्या करतीं ! मैं जवाब देना तो क्या...अभी तक तुम्हारे सवाल पर ही हैरान हूँ। आखिर, तुम यह किस दिल से कह रही हो ? और तुम ने यह कल्पना कैसे कर ली कि यह बात मेरे लिये उतनी ही आसान है, जितनी तुमने सोची है।"

नजमा ने पूर्ण विश्वास से कहा—"इसलिये कि तुम पर मैं अपना अधिकार समझती हूँ। इसलिये कि तुम स्वयं जमाल को जानती हो कि वह तुम्हारी दृष्टि में सब से ज्यादा प्यारा साथी है।"

मैबुल ने कहा—हाँ, यह ठीक है। वह निस्संदेह मेरा बहुत प्यारा मित्र है। उसके लिये मेरे हृदय में बहुत ऊँचा स्थान है। मैं उसे विलायत ही में आम सतह से बहुत ऊँचा मान चुकी हूँ। मुझे सच्चाई के साथ उसकी दिलकशी और मोह लेने वाली एक-एक बात को स्वीकार कर लेना चाहिये। किन्तु प्यारी, इसका मतलब यह तो नहीं कि... कि...यानी जो कुछ तुम कह रही हो, वह भी हो जाय।"

नजमा ने हर्ष विह्वल हो कर कहा—"हाय मैबुल, तुम में कितनी 'मशरकित' है ! मुझे तो आश्चर्य होता है कि एक पश्चिमी लड़की और

शादी के नाम पर उसकी ज़बान इतनी लड़खड़ा जाय... ! अच्छा, अब मैं तुम से पूछती हूँ कि इतने निकट रहने पर भी कभी तुम्हारे मन में विचार नहीं उठा कि काश, जमाल तुम्हारा हो सकता। देखो मैबुल, मैं तुम्हें तुम्हारी सचाई के कारण पूजती हूँ। मैं इस समय तुम से सच बोलने और तुम्हारे मुँह से स्पष्ट रूप से सब सुनने आयी हूँ। इससे पहले कि तुम कुछ कहो, मैं ज़िन्दगी में सिर्फ पहली बार तुमसे कहती हूँ कि मैंने जीवन को थोड़े दिन पहले तक इसी उम्मीद के सहारे क़ायम रखा था कि जमाल मेरा है.....लेकिन अब मेरी यह बात सुनने के बाद कम से कम यह सब तुम्हें भी बोलना पड़ेगा !"

मैबुल ने पराजित हो कर कहा—"नजमा ! तुम से झूठ बोलने या सचाई को छिपाने का इरादा कम से कम मैं नहीं कर सकती। इसलिये कि तुम केवल सच्ची ही नहीं हो बल्कि सच्चाई की पारखी भी हो। हाँ, यह अवश्य पूछना चाहती हूँ कि मेरे विषय में तुमने ऐसा सोचा कैसे कि मेरे दिल में कभी यह इच्छा नहीं पैदा हुई होगी। भारत में आने से पहले विलायत में ही जमाल ने नियाहत खूबसूरती के साथ तुम्हारा नाम ले कर मेरी इस इच्छा को दबा दिया था।"

नजमा ने मुस्कुरा कर कहा—"भोली मैबुल ! मुझसे न तुमने कुछ कहा, न जमाल ने। मगर मैंने तुम्हारी इस मरी हुई इच्छा के जनाज़े खुद तुम्हारी निगाहों को उठाते हुये देखा। मुझे विश्वास था कि तुम मुझ से साफ-साफ कह दोगी। मुझे इसके अतिरिक्त यह भी मालूम है कि अगर जमाल के सामने मैं खुद न होती, तो मेरे बाद उसकी नज़र सीधी तुम्हीं पर ठहर सकती थी। यही कारण है कि मैं यह विनती ले कर किसी और के पास नहीं गयी; केवल तुम्हारे पास आयी हूँ।"

मैबुल ने कुछ शरमाते हुये और किंचित आश्चर्य से कहा—"लेकिन अब मुझे यह भी बता दो कि आखिर, तुम जमाल की और जमाल तुम्हारा क्यों नहीं हो सकता ? मैं तो यह समझने के अयोग्य हूँ कि

आखिर, वह कौन सी शक्ति हो सकती है जो तुम दोनों को एक दूसरे से अलग कर दे।"

नजमा ने फीकी हँस कर कहा—"यह बड़ी लम्बी बहस है। सिर्फ इतना ही समझ लो कि जमाल का और मेरे रहन-सहन का तरीका, जमाल की और मेरी प्रकृतियों का भिन्न होना, जमाल के और मेरे दृष्टिकोण में 'रडयाड किपलिंग' का मतभेद शामिल हो गया है कि पूरब-पूरब और पश्चिम-पश्चिम, यह दोनों कभी कहीं मिल सकते।"

मैबुल ने तेजी से कहा—'यह मतभेद तो मेरे और जमाल के बीच भी शामिल हो सकता है। तुम इस से फायदा क्यों उठा रही हो ?"

नजमा ने उसे समझाया। 'नहीं मैबुल, तुम्हारे और जमाल के बीच यह मतभेद नस्ल की भिन्नता होने पर भी नहीं है, जो हम दोनों के बीच में है। तुम दरअसल मेरी मशरकियत और धर्म के प्रति लगाव की सही रूप में कल्पना भी नहीं कर सकती। जमाल की जिन्दगी को मैं महज अपनी मशरकियत और धर्म में आस्था होने के कारण उजाड़ना नहीं चाहती। मैं उसकी जीवनसंगिनी कैसे बन सकती हूँ जब कि उसकी जिन्दगी घर की चाहरदीवारी के बाहर चहल-पहल चाहती है। वह क्लब की जिन्दगी, सोसायटी की जिन्दगी, बाल रूम की जिन्दगी का अभ्यस्त हो कर आया है और मैं इन स्थानों पर उस के साथ किसी को भी नजर नहीं आ सकती। मैं नहीं चाहती कि वह महज मेरे लिये या मेरी मुहब्बत के लिये अपनी इन उमंगों को जो उसकी जिन्दगी बन चुकी हैं, खत्म कर दे। और अगर वह इस कुरबानी के लिये तैयार भी हो जाय तो भी एक सौ एक मतभेद मेरे उस के बीच में हैं। मैं एक खास मजहबी लड़की हूँ और उसे मजहब से कोई लगाव नहीं। उस के लिये तो यह डूब मरने की बात होगी, अगर मैं उसके साथ क्लब जा कर नमाज के वक्त सजदा करना शुरू कर दूँ। संक्षेप में यह कि दरअसल न तो मैं ही

उसके काबिल रही हूँ और न ही वह मेरे काबिल। फिर भी हम दोनों का दिल एक दूसरे को माँगता है तो ऐसे दिल का इलाज सिर्फ यह है कि उस पर दिमाग़ का शासन शुरू कर दिया जाय और इसी दिमाग़ के शासन का यह परिणाम है कि मैं जमाल की ज़िन्दगी अपने साथ कड़ुवी बनाने के बजाय तुम्हारे साथ आनन्दमय बनाना चाहती हूँ।"

मैबुल की समझ में इस समय कुछ न आ रहा था। वह न तो नजमा की तरफ से इस आक्रमण के लिये तैयार थी और न प्रत्युत्तर किसी आक्रमण या जान छुड़ाने का कोई उपाय उसके मस्तिष्क में था। वह तो इस समय कुछ सिटपिटा कर रह गई और चाहती थी कि किसी तरह यह बात टल जाय ताकि शान्ति से इस समस्या का अध्ययन कर कोई उपाय ढूँढ सके।

आख़िर, उस ने इस बहस से डर कर जान छुड़ाने के लिये कहा—"नजम! सच पूछती हो तो इस समय न तो तुम्हारी कोई बात मेरी समझ में आ रही है और न ही मैं जानती हू कि मुझे किस बात का क्या जवाब देना चाहिये। मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे थोड़ा सा वक्त तो ग़ौर करने को दो ताकि मैं भी किसी निर्णय पर पहुँच सकूँ।

नजमा ने बड़े स्नेह से मैबुल का हाथ अपने दोनों हाथों में ले कर कहा—"तुम्हें गौर ही क्या करना है। तुम्हारे दिल में आज न सही, लेकिन पहले जमाल की तमन्ना रह चुकी है। तुम्हारी नज़रें उसे स्वीकार कर चुकी हैं और खुद जमाल ही के कहने से तुमने इस ख़्याल को ख़ामोशी से याद रखने के लिये भुलाया था। अतः जहाँ तक ग़ौर का सम्बन्ध है, वह तो हो ही चुका है। अब तो मैं सिर्फ तुम से यही चाहती हूँ कि तुम अपने हृदय को इस बात का विश्वास दिला दो कि तुम दोनों के बीच नजमा बाधा नहीं पहुँचायेगी। तुम ने जमाल को अपना न समझने में अगर क़ुरबानी से काम न लिया था, तो अब उसे

अपना समझने के लिये कुर्बानी दो। तुम बेशक ग़ौर करने का हक रखती हो लेकिन ग़ौर करने के बाद भी इस प्रस्ताव को ठुकराने का अधिकार नहीं रखती, यह समझ कर ग़ौर करना।"

मैबुल ने सचाई से कहा—"नजम! तुम्हें नहीं मालूम कि इस समय मेरे दिल-ओ-दिमाग़ की क्या दशा है! मुझे कम से कम इस वक्त कोई निर्णय देने पर मजबूर न करो। मुझे सोचने-समझने या ग़ौर करने का न कहो; मगर सँभलने का वक्त तो दो।"

नजमा ने मैबुल की कमर पर हाथ मारते हुये कहा—"हाँ, हाँ! तुम ज़रूर सँभलो! मगर तुम्हारा हाल ऐसा है, जैसे किसी पर पहाड़ टूट पड़ा हो। मेरी बहन! तुम को वह चीज़ ..वह दुर्लभ वस्तु भेंट कर रही हूँ जिस से ज़्यादा कीमती चीज़ मेरी दृष्टि में और कोई नहीं हो सकती। अच्छा, अब मुझे चाय नहीं पिलाओगी? और हाँ, ज़रा मज़ेदार नाश्ता भी!

मैबुल ने लापरवाही से कहा—"तुम ख़ुद खानसामे से कह दो।"

इस के बाद नजमा ने इस नीरस वातावरण को चाय और नाश्ते के भुलावे में डाल दिया।

———

चौदह

****

हजरते मौलाना शरफ़ और जमाल जिसे 'नूरे अल्लाहे मरक़दा' कहता था ; उनको क्या मालूम कि यहाँ स्थिति कितनी विषम और गम्भीर हो चुकी थी। और वे अपनी चिल्लाक़शी (चौंचले) में पूर्ण वेग से व्यस्त थे। दाढ़ी बढ़ रही थी और बुद्धि घट रही थी। एक तरफ तो वे अपने इस स्वाँग से नजमा को धोखा देना चाहते थे। दूसरी तरफ उन्हें यह ख्याल भी आया कि इस बहुरूप से कुछ और काम क्यों न लें। अतः आपने वास्तव में 'दुवायें' भी शुरू कर दी थीं कि नजमा का मन जमाल की ओर से उखड़ जाय। टोने-टोटकों के उपाय भी आपने इधर-उधर से पूछ रखे थ कि अगर इन दुवाओं का कुछ प्रभाव न पड़ा तो यह प्रयोग शुरू कर दिये जायेंगे। किंतु एक आपत्ति यह थी कि इस वेश-भूषा और बुजुर्गी के रुआब में इन लड़कियों की महफिल में हर रोज आप का सम्मिलित होना भी सहज न था—वरन् कुरान के नियमों के विरुद्ध था। परन्तु एकान्त में उन का दिल भी न लगता था। यहाँ तक कि वह प्रेयसि उनके सामने थी, जिसके लिये आप ईश्वर भक्त बने थे। इरफान को छोड़ कर बहुत ही कम कोई आप के पास आता था और सिर्फ इरफान ही से आप को यह मालूम होता रहता था कि उनका ढोंग किस सीमा तक सफल हो रहा है, एवं इस धार्मिक रूप का नजमा पर किस हद तक प्रभाव पड़ रहा है। किन्तु केवल इतना ही तो पर्याप्त न था। आखिर, सोचते-सोचते आपने एक सूरत

निकाली और कव्वाली के आयोजन के बहाने सब को निमंत्रण-पत्र भेज दिये।

जिस समय निमंत्रण-पत्र जमाल के पास पहुँचा, तो वह अत्यधिक उदास था। परन्तु इस समाचार ने उसकी दशा ही बदल दी। एक विचित्र सी ताज़गी और मुस्कराहट ले कर वह सब से पहले इरफान के पास पहुँचा। उसे साथ ले नजमा और तारा के लिये दूसरी गाड़ी का प्रबन्ध किया कि वे तत्क्षण ही मैबुल के यहाँ पहुँच जायें। और आखिर, यह पूरी संस्था मैबुल के यहाँ से थोड़ी ही देर में शरफ़ साहब के यहाँ जा पहुँची, जहाँ उस ज़िन्दा पीर का 'उर्स' (महान् आत्मा की स्मृति में जश्न मनाना) होने वाला था। शरफ़ साहब की सजधज, सुबहान अल्लाह; मुँड हुये चमचमाते सिर पर अत्यंत सुन्दर पालिश नज़र आ रही थी। क्या आश्चर्य, कि मैबुल और डैनियल का मन 'रकेटिंग' के लिये लालायित हो उठा हो। आँखों में तेज़ और तेज़ भी सुरमे का...! लहराती हुई दाढ़ी पर महकता हुआ इत्र, जोगिया रंग का लम्बा सा रेशमी कुर्ता, चारखाने का रेशमी तहमद, फर्श पर हर तरफ कालीन और गाव तकिये लगे हुये और मध्य में स्वयं हजरते शाह शरफ़ मियाँ साहब जैसे कि अपने आप पदासीन हुये हों; एक लम्बी सी तसबीह लिये बैठे थे। इन लोगों के पहुँचते ही आँखें बन्द कर गोया और भी खुदा में मगन हो गये और तसबीह ज्यादा तेजी के साथ चलने लगी।

तारा तो खैर, पहले ही से मुँह में रूमाल ठूँस चुकी थी। क्यों कि उसे अपनी हँसी पर विश्वास न था। नजमा बेसाख्ता हँसी की हालत में भी क़हक़हे तक नहीं पहुँची थी। हाँ, मैबुल और डैनियल के प्रति शंका थी कि कहीं वे इस समारोह में ज़ोर से न हँस दें। इसलिये इरफान ने पहले से ही दोनों को मना कर दिया था। यद्यपि यह दृश्य देख कर दोनों का हँसी के मारे दम निकला जा रहा था। इरफान श्रद्धा से नतमस्तक खड़ा था और जमाल को यह चिन्ता थी कि हजरते

शाह साहब क़बला का ध्यान इस नश्वर संसार के प्रति क्यों कर आकर्षित किया जाय ।

शरफ साहब अल्लाह से लौ लगाने में इतने मग्न थे कि सब लोग आ चुके थे, मोटर का हार्न बज चुका था । अब भी कोई खाँस रहा था, किसी के कदमों की आहट आ रही थी, परन्तु हुजूर को भला, दुनियां की इन बातों से क्या मतलब... ! आप इस दुनिया में थे ही कब... ! आखिर जमाल ने श्रद्धा पूर्वक कहा—"अस्सलाम वाले कुम !"

शरफ़ साहब ने गोया चौंक कर आँखें खोल दी और "वाले कुम अस्सलाम" कहते हुये खड़े हो गये । सब से पहले इरफान ने आगे बढ़ कर दोनों हाथों से उनका सम्मान किया ।

शरफ़ ने कहा—"आप इस ऋणी को और भी ऋणी बना रहे हैं । तशरीफ रखिये !"

सब लोग क्रम से बैठ गये तो जमाल बोला—"मौलाना ! आप तो अपनी तपस्या में ऐसे लीन हो गये कि हम मिट्टी के जीवों को बिल्कुल ही भुला दिया !"

इरफान ने जल्दी से कहा; ताकि 'अपनी तपस्या में लीन हो गये' का रहस्य शरफ़ समझने न पायें, "शरफ़ साहब ने दरअसल में खुद अपने को भी भुला दिया है और खुद को खो कर आप अब किसी और को ढूँढना चाहते हैं ।"

शरफ़ ने आँखें बंद कर दाढ़ी पर हाथ फेर कर होठों में ही कहा—"तू ही तू..." और फिर एक गहरी साँस ले कर रह गये ।

तारा ने अपना मुँह गाव-तकिये के पीछे छुपा लिया । और नजमा को मैयुल की आकृति देख कर हँसी आ गई जो बड़ी हैरानी से शरफ़ साहब को घूर रही थी । जमाल ने गम्भीर हो कर कहा—"इरफान साहब, यह समझ में न आया कि यह समारोह जो आज इस

दरगाह में हो रहा है; क्या स्वयं शरफ़ साहब के उर्स के सिलसिले में है या किसी और वजह से ?"

शरफ़ ने इरफान की अपेक्षा स्वयं उत्तर देने के लिये गला साफ किया ही था कि एक औरत अपने बच्चे को कंधे से लगाये हुये दरवाजे पर आ कर खड़ी हो गई और शरफ़ साहब को अपना ध्यान उस ओर आकर्षित करना पड़ा। "आओ ! ले आओ इसे !"

वह औरत बड़ी श्रद्धा से आगे बढ़ी और शरफ़ साहब की मसनद के समीप बच्चे को ले कर बैठ गयी। आप पहले तो कुछ बुदबुदाये। तत्पश्चात् निहायत बुजुर्गी से झुक कर बच्चे पर तीन बार फूंक मारी और कहा—"इन्शा अल्लाह ! बहुत जल्दी ठीक हो जायेगा। बस, तेल-मिर्च, गोश्त, अंडा मछली वगैरह की खुशबू इस के निकट न आये। ले जाओ !"

वह औरत आप की तरफ मुँह किये उल्टे पैरों वापिस हो गयी। पहले तो सब मौन रहे, परन्तु उस औरत के जाते ही तारा का तो हँसी के मारे बुरा हाल हो गया। नजमा ने दुपट्टे से अपना मुँह छुपा लिया तथा जमाल हँसते हुये बोला—"गुड लार्ड ! मेरे फरिश्तों को भी खबर न थी कि नौबत यहाँ तक पहुँच चुकी है।

इरफान बड़ी कठिनाई से अपनी हँसी पर नियंत्रण पा, कहने लगा—"आखिर क्या किया जाय ? परोपकार से बेचारे अपने को किस तरह बचा सकते हैं ! अभी परसों ही ईद को कुबड़न की लड़की अचानक बेहोश हो गई और उसे तब होश आया, जब शरफ़ साहब ने दुआ पढ़ कर पानी भेजा और जब वह पानी उसके मुँह पर छिड़का गया।"

शरफ़ ने कहा—"यह सब उसका देन है कि उसने इस नाचीज़ की दुवाओं में कुछ असर दे रखा है। अगर मैं खुदा के बन्दों को फायदा

पहुँचा सकता हूँ तो यह मेरा फर्ज़ है कि मैं फायदा पहुँचाने में आनाकानी न करूँ।"

जमाल ने कहा—"बजा इर्शाद हुआ। लेकिन क्या सैयद व मुल्लाओं ने अपना काम आप को सौंप दिया ?"

इरफान ने कहा—"कोई भी बात जान-बूझ कर नहीं शुरू की जाती। बल्कि खुद-ब-खुद हो जाया करती है। आप ने तो अभी तक किसी को भी अपना भक्त नहीं बनाया है शरफ़ साहब ! फिर भी लोग अपने आप बन रहे हैं। उदाहरण के लिये मैं ही इस बात को स्वीकार करता हूँ कि मैं सच्चे दिल से आप को गुरु मान चुका हूँ।"

जमाल शरारत से बोला—"आप खुदा न ख्वास्ता इन के भक्त बन गये। फिर तो आपके गुरु को भी मुक्ति नहीं मिलेगी।"

इरफान कुछ कहने ही वाला था कि स्वयं शरफ़ ने जल कर कहा—"जी नहीं ! मुक्ति तो केवल आप को मिलनी चाहिये।"

इरफान ने उसका वाक्य पूरा किया—"बशर्ते कि क़यामत की सरकारी जबान अँग्रेजी हुई !"

शरफ़ ने आनन्द से कहा—"जी हाँ, जी हाँ ! मजहब से दूर का भी वास्ता नहीं और दख़ल दे रहे हैं आप मुक्ति के मामले में ! आप को इन झगड़ों से क्या लेना ! यह बख्शिश वह नहीं जो बैरों को दी जाती है। आप अपने क्लब के मामले, कचहरी के मुकद्दमे और नाच-रंग वग़ैरह की फिक्र रखिये !"

जमाल ने कहा—"गोया नाच-रंग मेरे सुपुर्द है और गाना आप के सुपुर्द ! अब क़व्वाली आखिर, कब शुरू होगी ?"

इरफान बोला—"सुना आप ने शरफ़ साहब ! जैसे खुदा की इबादत में कव्वाली भी कोई गाना है...! तोबा...तोबा !"

शरफ़ ने एक झुरझुरी ले कर कहा—'कव्वाली और गाने में वही फर्क है जमाल साहब, जो आप में और मुझ में है।"

जमाल बोला—"शुक्र है। मुझ में और आप में फर्क तो है!"

अब नजमा ने इस चर्चा को समाप्त करने के भाव से कहा—"लेकिन, सचमुच में कव्वाली कब शुरू होगी?"

शरफ़ ने पूर्ण रूप से ध्यान देते हुये कहा—"अभी बस, यानी अभी शुरू होती है! कव्वाल साहब आ चुके हैं। आप ही लोगों का इन्तज़ार था। मैं अभी प्रबन्ध करता हूँ।"

यह कह कर शरफ़ साहब तो प्रबन्ध करने लगे और इधर इन सब को खुल कर हँसने का अवसर मिल गया। तारा सब से अधिक बेचैन थी। नजमा ने हँसते हुए कहा—'दुःख है कि रज़िया और नाहिद इस तमाशे में उपस्थित नहीं हैं।"

इरफान ने कहा—"आप का मदारी सलामत रहे, ऐसे ऐसे तमाशे हमेशा हो सकते हैं। लेकिन मुझे दाद दीजिये कि कैसा लाजवाब पीर (अवतार) बनाया है मैंने! कहीं से भी नकली नहीं नजर आता।"

जमाल बोला—"तू इसे मार डालेगा! पागल तो खैर, बेचारा है ही किन्तु आप की इच्छा यह है कि वह सचमुच कपड़े फाड़ कर भाग निकले।"

इरफान ने कहा—"मेरी इच्छा है या कि हमारी श्रद्धेया नजमा साहेब की; जिनका खिलाया हुआ यह गुल है। और आप दोनों ज़रा होशियार रहियेगा। हमारे पीर ने ऐसा जबरदस्त टोना शुरू किया है कि आप लोगों को भी पहुँचे हुये लोगों से टकराने का पता चलेगा! आप उन्हें पागल कह रहे हैं और वो आपकी पराजय का इन्तज़ार कर रहे हैं।"

मैबुल ने जो अब तक हैरान बैठी हुई थी; कहा—'इन के माता—

"पिता इनका इलाज नहीं करते ?" यह बात इस सादगी से मैबुल ने कही कि सब को यकायक ही हँसी आ गई।

आखिर, इरफान बहुत कठिनाई से बोला—"माता-पिता क्या इलाज करेंगे, वे तो स्वयं साहबजादे के चेले बनते जा रहे हैं। शरफ़ साहब की अम्मी को बड़ा गर्व है कि उनकी कोख से ऐसा सिद्ध बुजुर्ग पैदा हुआ है !"

डैनियल ने कहा—"मगर मैं तो यह सोच रही हूँ कि इस मज़ाक में एक नौजवान की ज़िन्दगी खराब हो रही है।"

जमाल ने कहा—"खैर, इस तरफ से आप निश्चित रहें। शरफ़ साहब की ज़िन्दगी अब कम से कम एक काम की तो हुई कि लोग उस का आनन्द ले सकें। वर्ना वह तो अब तक किसी काम के भी न थे।"

मैबुल ने शरारत से कहा—"खैर, आप तो ऐसा कहने के लिए कुदरती तौर पर मजबूर हैं। आप ही के कारण उस बेचारे की यह दशा हुई है। आप से टक्कर न होती तो वह क्यों ऐसा भयानक बहुरूपिया बनता !"

इतने में शरफ़ साहब ने पधार कर एक पर्दा इस तरह लगा दिया कि नजमा और तारा का कव्वालों से सामना न हो सके और तब कव्वालों को आने का संकेत किया। यह कव्वाल भी शरफ़ साहब से कम पहुँचे हुये नहीं मालूम पड़ते थे। ढोलकी वाले के अतिरिक्त सब की वेश-भूषा शरफ़ साहब से मिलती-जुलती थी। वही आँखों में सुरमा, जुल्फों में तेल, दाढ़ी में इत्र, पिचके हुये गालों के बीच ठूँसी हुई गिलौरियाँ और मुखाकृतियों पर वह भाव झलक रहे थे जो देखते ही देखते तैज में परिवर्तित हो जाते थे।

आखिर कव्वाली शुरू हो गई और शरफ़ साहब हाथ में तसबीह ले, आँखें बन्द कर बैठ गये। कव्वालों ने पहले तो एक फारसी

क्रता सुनाया, तत्पश्चात् शरफ़ साहब की गज़ल आरम्भ हुई।

इरफान ने पहला मिसरा सुनते हुये जमाल से कहा—"यह खुद सरकार की ही रचना है। जमाल साहब! इन की इस ग़ज़ल के हर मिसरे में खुदा की तरफ से एक न एक संदेश है। दिल के जज़बात को इस तरह ऊँडेला है कि सिर्फ समझने वाले भी कुछ न समझें! खैर, आप तो समझ ही लेंगे कि यह क्या कयामत है।"

जमाल ने बड़ी कठिनाई से अपने को संयत किया। तारा तो खैर, मरी जा रही थी परन्तु नजमा का भी हँसी के मारे बुरा हाल था। एक तो शरफ़ की रचना के शब्द, दूसरे इरफान का वक्तव्य—फिर सब से बढ़ कर शरफ़ की भावुकता! वास्तव में हँसी पर नियंत्रण पाना कठिन हो गया था और कव्वाल थे कि मिसरे की सराहना कर रहे थे, 'ऐ तूने अपने शरफ़ को यह क्या कर दिया।'

शरफ़ तो पहले झूमते रहे फिर 'क्या कर दिया, क्या कर दिया' की तकरार पर स्वयं अपनी ओर संकेत करने लगे। यह दृश्य हँसने वालों के संयम की जैसे परीक्षा ले रहा था। इसे तारा और नजमा का हृदय ही जानता होगा। यहाँ तक कि कव्वालों ने शेर पूरा कर दिया,

'ऐ तूने अपने शरफ़ को यह क्या कर दिया,
और एक आसी को मर्दे खुदा कर दिया।"

जमाल की आकृति हँसी को रोकने के कारण लाल हो गयी; किन्तु इरफान घुटनों के बल बैठे हुये बराबर झूम रहे थे और बार-बार आकाश की ओर हाथ उठा देते थे। स्वयं शरफ़ पर एक उन्माद छा गया था। सब हँसी से लोट-पोट हुये जा रहे थे और तारा तो मरी ही जाती थी। अलबत्ता, मैम्बुल और डैनियल विस्मय-विस्फारित नेत्रों से इस दृश्य को देख रही थीं। उन्हें न हँसी आ रही थी और न क्रोध, बल्कि अजीब तमाशा बन कर रह गयी थीं। अन्त में कव्वालों ने बहुत

देरवार इस मतला को समाप्त कर दूसरा शेर पढ़ा—

"बहरे में मिल के क़तरा समन्दर बना"

इरफान एकदम झूम कर और 'बजा फरमाया' का नारा बुलन्द कर रह गया और शरफ़ ने पूरे जोश के साथ झूमना आरम्भ किया। ढोलकी वाले ने जबरदस्त हाथ मारना शुरू किया। कव्वालों के चेहरे लाल हो गये और गले की नसें उभर गयीं। आखिर, उनमें से एक कव्वाल की आवाज एक तान के साथ सब पर छा गयी, तो उसने मिसरे लगाने शुरू कर दिये—

"एक दिन क़ैस को सहरा में जो जा कर देखा
सूख कर इश्क में लैला के हुआ था कांटा,
दश्ते गुरबत में अजब हाल बना रक्खा था
लब जो हिलते थे तो आती थी यही मुँह से सदा,
और बहर में मिल के क़तरा समुन्दर बना।"

एक अन्य कव्वाल ने सोचा कि मैं ही क्यों रह जाऊँ। अतः वह एक गठकड़ी (तान) ले कर सब पर छा गया और उसने भी मिसरे लगाने शुरू कर दिये—

"अमादाये वे कतल मन आने शोख सितम गारे,
रीं तरफे-तमाशा बीं न कर वो गुनहगारे,
गर नामो-निशाँ मन परसन्द बगू क़ासिद,
क्या..................? कि...............
बहरे में मिल के क़तरा समुन्दर बना।
अरे, खुद से वाअसल तो सब से जुदा कर दिया..."

शरफ़ साहब झूम-झूम कर उठने लगे। इरफान भी कम नहीं थे। उन पर क़यामत का जनून छाया हुआ था। आखिर, शरफ़ साहब ने स्वयं ही नारा बुलन्द किया—'सब से जुदा कर दिया, जुदा कर दिया, जुदा कर दिया।" और कव्वालों ने मर-मिटने के भाव से इसी शेर को रटना

शुरू कर दिया। यहाँ तक कि इरफान ने नारा बुलन्द किया—"अलउल्लाह्..." और शरफ़ साहब भी एक नारा 'बजा फरमाया है' कह कर झूमते हुये खड़े हो गये। इनके खड़े होते ही कव्वाल भी खड़े हो गये और इरफान भी। इरफान ने जमाल को चुपके से खड़े होने का संकेत किया। वह वह इस समय अपनी हँसी भूल कर सहमा हुआ बैठा था। इधर मैजुल और डैनियल का भी रंग उड़ा हुआ सा था। हद यह है कि इस वक्त तारा तक मौन धारण किये हुये थी और नजमा विस्मय में डूबी हुई थी कि यह क्या हो रहा है। आखिर जब शरफ़ ने स्वयं मिसरा दोहराया, कहा कि 'खुद से बाअमल तो सब से जुदा कर दिया' और उस की भाव-भंगिमा नृत्य के रूप में बदलने लगी तो इरफान ने उसे सँभाला। और बड़ी कठिनाई से यह उत्तेजित वातावरण शाँत हुआ। इस ग़ज़ल के अंत तक कई बार ऐसी स्थिति पैदा हुई और आखिर खुदा-खुदा कर ग़ज़ल समाप्त हुई। अब कव्वालों ने शरफ़ साहब की एक दूसरी चीज़ आरम्भ कर दी—

"अपने शरफ़ को सुहागन बना दो पिया।"

यह ज़रा चलती हुई चीज़ थी और तारा से अब ज़ब्त न हो रहा था। वह चुपके से उठ कर बाहर चली गयी और हँसी से लोट-पोट हो एक कुर्सी पर गिर पड़ी। मैबल का दम घुट रहा था और वह चाहती थी कि इस कोलाहल को किसी तरह समाप्त किया जाये। अतः उसने उसी गाने के दौरान में ऊँचे स्वर से कहा—"ज़रा ठहरिये ! देखिये तो, तारा को क्या हो गया है ?"

इरफान बोला—"नशा छा गया होगा। रहने दीजिये इसी तरह।"

परन्तु शरफ़ साहब ने स्वयं कव्वालों को मौन धारण करने का संकेत किया और सब जा कर तारा के चारों ओर जमा हो गये; जिसका हँसी के कारण यह हाल था कि आँखों से आँसू जारी थे और चेहरा तमतमा उठा था।

इरफान ने उसे देखते ही कहा—"म तो जानता था कि नशा है। यह तो सरूर होता है सरूर ! लोग मज़ाक समझते हैं कव्वाली सुनना ! दिल से सुनी जाय तो पता चले !"

इरफान के इस गम्भीर वक्तव्य पर तारा का और भी बुरा हाल हो गया। उसमें अब हँसने की शक्ति न रही थी ; केवल दिल को थामे 'हाय-हाय' कर रही थी और नजमा हँसी के मारे दोहरी हुई जा रही थी। आखिर, शरफ़ ने बहुत प्रसन्न हो कर कहा—"मुझे नहीं मालूम था कि तारा के सीने में भी ऐसा दिल है, माशा अल्लाह !"

इरफान ने कहा—"ऐसे-वैसे का कोई सवाल नहीं। यह तो वह जादू है कि पत्थर भी पानी बन कर बह जाय ! ज़रा ग़ौर तो कीजिये कि 'अपने शरफ़ को सुहागन बना दो पिया।' कोई मामूली बात है...?"

जमाल ने एक घूँसा इरफान की पीठ पर मारा और स्वयं सचमुच ही हँसी के कष्ट से परेशान हो कर रह गया। नजमा को चाहिये था कि वह उसे सँभालती ; परन्तु वह स्वयं सँभलने का प्रयत्न कर रही थी। आखिर, बड़ी मुश्किल से तारा का होश आया और यह निर्णय हुआ कि अब कव्वाली का सिलसिला समाप्त कर दिया जाय ; वर्ना एक-आध का दम निकल जायेगा। अंत में शरफ़ ने बड़े ठाठ-बाट से चाय द्वारा सबकी आवोभगत की। मैबुल और डैनियल तो विस्मय चकित थीं ही और तारा इतनी थक चुकी थी कि अब उसमें किसी बात का आनन्द लेने की क्षमता ही न थी। आखिर इरफान ने शरफ़ का हाथ चूमने के बाद विदाई की आज्ञा माँगी और शरफ़ ने द्वार तक पहुँच कर सब को विदा किया।

पन्द्रह

******

यह नौजवान पार्टी अपनी गतिविधियों में निमग्न थी और वृद्ध अपनी-अपनी धुनों में निमग्न थे। मौलवी अब्दुल समद साहब ने न जाने किन-किन तरीकों से इरफान के विषय में जाँच-पड़ताल करने के पश्चात् यह निश्चय कर लिया था कि लड़का प्रत्येक रूप से तारा के उपयुक्त है। चूँकि उन का विचार था कि जवानी प्रत्येक रूप म अविश्वसनीय होती है। अतः जहाँ तक हो सके इसे ऐसे शिकंजे में अवश्य कस देना चाहिये कि बुजुर्गों के सिर से इसके उत्तरदायित्व का बोझ हट जाय। अर्थात् जब तक शादी न हो उस समय तक बुजुर्ग, जैसे इस बात के उत्तरदायी होते हैं कि जवान-लड़कियाँ अपने को जवान न समझें और इस से पूर्व कि उनमें कुछ बुद्धि पैदा हो; बुजुर्गों का कर्त्तव्य है कि वे उनके यौवन का कोई रक्षक ढूँढ निकालें। नजमा की ओर से वह निश्चित थे ही कि लड़का मौजूद है। केवल तारा की चिन्ता थी। अतः इरफान के मिलने के पश्चात् अब देर का कोई कारण न था। चुनाचे वह इन्हीं विचारों में उलझे हुये जिस समय मौलवी अब्दुल अहद साहब के यहाँ पहुँचे; वहाँ भी संयोगवश जमाल, नजमा, रज़िया और तारा का ही ज़िक्र चल रहा था। बात यह है कि जब बुजुर्ग अपनी सन्तानों के वयस्क होने पर अपनी शादियाँ भूल चुकते हैं तो उन्हें सन्तानों की जवानी भी खटकने लगती है और वे चाहते थे कि उनके बुजुर्गों ने जो

व्यवहार उनके प्रति अपनाया था, वही व्यवहार वे अपनी सन्तानों के प्रति अपनायें। सन्तान ने यौवन की सीमा में प्रवेश किया नहीं कि उन के बुजुर्गों या माता-पिता को उनके भाग्य से खेलने का शौक़ पैदा हुआ। यह भी वास्तव में एक शौक है जैसे बटेर लड़ाना या मुर्ग लड़ाना आदि-आदि। यह लोग भी इसी शौक के साथ अपनी सन्तानों की किस्मत लड़ाते हैं। कहीं कोई पड़कती हुई जोड़ नज़र आयी, फौरन ही मुक़ाबला तय कर लिया। 'पाली' की तिथि भी नियत हो गयी और विवाह के रूप में सन्तान की किस्मत-बाज़ी का फैसला हो गया। उन्हें दिन-रात यही चिंता रहती है, ढूंढ-ढूंढ कर औलाद की जोड़-तलाश की जाती है और जब तक यह तमाशा न हो जाय; दिन-रात यही चर्चायें चलती रहती हैं।

मौलवी अब्दुल समद साहब के आगमन पर अब्दुल अहद साहब और उनकी बीवी ने आदर-पूर्वक उनका स्वागत किया और स्वयं शिष्टता से बैठ गये। अब्दुल समद साहब ने पहुँचते ही पुनः इस ज़िक्र को ताज़ा कर दिया। "मियाँ अहद से तो यह पूछ-ताछ यानी मतलब यह कि ऐसा सवाल ही फ़िज़ूल है कि स्वर्गीय भाई अहसान के सुपुत्र मियाँ इरफान के विषय में क्या तहक़ीक़ात की! इसलिये कि मुझे मालूम है कि उन्होंने कुछ भी यानी क़तन.....यानी मेरी मुराद यह है कि उन्होंने कुछ भी पूछ-ताछ न की होगी। यह काम इनके बस के नहीं। बचपन से इस किस्म के तमाम विषयों से यह दूर-दूर.....यानी कि अलग-अलग रहे हैं। मगर दुल्हन ने शायद कुछ मालूम किया है या खुद ही उन्हें कुछ मालूम हुआ हो तो मैं चाहता हूँ, कि मुझे भी जानकारी हो जाय!"

बेगम अब्दुल अहद ने सिर झुका कर कहा—"मुझे तो बस, यही मालूम है कि लड़का अच्छा-खासा है।"

अब्दुल समद साहब ने अपने शब्दों पर ज़ोर देकर कहा—"अच्छा

ख़ासा में एक दबी हुई मजबूरी पायी जाती है। और इस शब्द का अनुवाद ग़नीमत हो सकता है.....गोया, मतलब यह हुआ कि जिसे अच्छा-ख़ासा कहा जा रहा है, वह मजबूरन क़ाबिले-क़ुबूल है! यानी वह अच्छा है, मगर कुछ बुराइयों के साथ.....या वह बेहतर है चन्द बुरों के साथ मुकाबला करने में।"

अब्दुल अहद साहब को हँसी आ गई और वह मुँह फेर कर बैठ गये। बेग़म अहद की समझ में नहीं आ रहा था कि अब वह क्या कहें! आख़िर, बड़ी कठिनाई से अपने शब्दों को नाप-तोल कर बोलीं—"मेरा मतलब यह है कि लड़का अच्छा मालूम होता है।"

अब्दुल समद साहब ने कहा—"मालूम नहीं होता, बल्कि वाक़ई अच्छा है! अच्छा मालूम होने और अच्छा होने में बड़ा फ़र्क़ है अच्छा तो शादी का हर उम्मीदवार मालूम होता है। जो कोई शादी का पैग़ाम देता है, वह अच्छाइयों का पाउडर चेहरे पर मल लेता है। मगर हमको चाहिये कि इन्हीं अच्छाइयों के पर्दे में बुराइयाँ निकाल कर देखें! चुनाचे मैंने यही किया। अपने ख़ास जासूस नियुक्त किये ख़ुद लड़के से मिला। उसे अच्छी तरह परखा और अब मैं इतमीनान के साथ कह सकता हूँ कि उस में तारा से संजोग होने की क़ाबलियत ही नहीं—बल्कि ऊँचे दर्ज़े की क़ाबलियत है। अब मैं सिर्फ़ यह मालूम करना चाहता हूँ कि आप दोनों को कोई एतराज तो नहीं!"

मौलवी अब्दुल अहद साहब ने कहा—"आप की इच्छा में हमारे एतराज़ का कोई सवाल ही नहीं उठता।"

अब्दुल समद साहब ने प्रसन्न हो कर कहा—"तुम्हारी फ़रमाबरदारी में तो कोई शक नहीं, लेकिन मेरी अक्लमन्दी पर यक़ीनन शक़ किया जा सकता है। मुमकिन है कि मेरा फैसला ग़लत हो। अगर ऐसा लगता है तो मुझे बताने में कोई हर्ज़ नहीं!"

बेगम अहद ने कहा—"हम लोग तो खुद आप ही के फैसले की इन्तज़ार में थे।"

अब्दुल समद साहब ने कहा—"मेरा फैसला यह है कि इस शुभ काम में अब देर नहीं करनी चाहिये। सब से बड़ी बात यह कि मैंने अपने को मौजूदा ज़माने से पीछे हटा हुआ समझ कर और वक्त की माँग का ख्याल कर.....वक्त की माँग समझे आप लोग.....? यानी मौजूदा नस्ल के अधिकार..... मगर यह भी तुम न समझोगे—संक्षेप में यह कि ज़माने के रंग को देखते हुये खुद तारा से भी राय ली है और उसे इस रिश्ते पर कोई एतराज़ नहीं है।"

अब्दुल अहद साहब यह सुन कर चौंक गये।

इस पर अब्दुल समद साहब ने कहा—"घबराने की बात नहीं है! बजाय इसके कि हमारे बच्चे अपनी ज़िन्दगी के सौदे पर हमारे सामने खड़े हो जायें; अक्लमन्दी का काम यह है कि हम खूबसूरती के साथ—शब्द खूबसूरती को न भूलना.....! हाँ, तो खूबसूरती के साथ उनकी राय मालूम कर लें। चुनाचे मैंने नजमा को यह काम सौंपा था। और आखिर, मुझे सिर्फ यही नहीं मालूम हुआ कि तारा को इस रिश्ते पर कोई एतराज़ नहीं है, बल्कि यह भी मालूम हो गया कि इरफान खुद तारा की बेहद इज्ज़त करता है।"

बेगम अहद ने कहा—"बस, तो फिर आप की जो राय हो।"

अब्दुल समद साहब ने हैरान हो कर कहा—"मेरी राय.....? यानी मैं इतनी देर से और किसी की राय जाहिर कर रहा हूँ, भाई! तुम लोग मेरी बात समझने की बिल्कुल कोशिश नहीं करते। हाँलाकि मैं ढूँढ-ढूँढ कर आसान लफ़्ज़ों में बात करने की कोशिश करता हूँ। अब तो सिर्फ यह सवाल है कि इन्तज़ार, और ज्यादा देर करने की क्या ज़रूरत है। मेरे ख्याल में इस मरतबा 'रजब-अल्म रजब' (इस्लाम धर्म के महीनों के नाम) की कोई तारीख शादी के लिये नियत

कर दी जाये ! मैं फिजूलखर्ची यानी धूम-धड़ाके में विश्वास नहीं रखता और न ही दरअसल में यह बातें होनी चाहियें।"

अब्दुल अहद साहब बोले—"यह तो दुरुस्त है। मगर मैं चाहता था कि अलग-अलग करने के बजाय एक ही मौके पर नजमा और तारा दोनों के फर्ज से छुट्टी पा लें।"

अब्दुल समद साहब ने कहा—"हाँ, हाँ, इस में क्या है ! जरूर, ऐसा ही करो।"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"मैं चाहता हूँ कि नजमा से भी इसी तरह पूछ लिया जाय जैसे कि तारा से पूछा गया है।"

अब्दुल समद साहब ने बपरवाही से कहा—"मेरे ख्याल में इसकी कोई जरूरत नहीं ; इसलिये कि इरफान की तरह जमाल ऐसा लड़का नहीं है जिसके बारे में नजमा को कोई राय कायम करनी होगी। इरफान फिर भी घर से बाहर का लड़का है। इसलिये मैंने राय जानने की कोशिश की थी। लेकिन अगर तुम नजमा के सिलसिले में भी यह जरूरी समझते हो तो मुझे कोई एतराज नहीं। हर दशा में मैं इन्तजाम शुरू करता हूँ। मेरी राय में तुम्हारी भावज और दुल्हन को अब एक साथ रहने की जरूरत है ताकि प्रबन्ध में आसानी हो।"

बेगम अहद ने कहा—"जी हाँ, अब या तो मैं भाभीजान को यहाँ बुला लूँगी या खुद वहाँ चली जाऊँगी।"

अब्दुल समद साहब ने इधर-उधर देख कर कहा—"आज तारा किधर गायब है ?"

अब्दुल अहद साहब ने उत्तर दिया—"नजमा और वह, दोनों अपनी सहेली रजिया के यहाँ गयी हुई हैं।"

अब्दुल समद साहब ने कुछ याद करते हुये कहा—"अरे मियाँ, खूब याद आया ; वह लड़का शरफ़ है न ! सुना है कि बड़ा मौलवी हो गया है। दाढ़ी वगैरह बढ़ा ली है, कुछ गंडे-ताबीज करने लगा है

और उस के यहाँ क़व्वालियाँ भी हुआ करती हैं।"

अब्दुल अहद साहब ने मुस्करा कर कहा—"कुछ खब्ती तो पहले से ही था। बचपन ही से बेवक़ूफ सा है। मुमकिन है अब दिमाग़ पर ज़्यादा असर हो गया हो।"

अब्दुल समद साहब ने कहा—"जी नहीं! उनकी वालदा को इस बात पर बड़ा नाज़ है कि उनके साहबज़ादे दरवेश हो गये हैं। अतएव कल वे मेरी बीबी से यानी तुम्हारी भावज से फरमा रही थीं कि शरफ़ पर देखो; ख़ुदा की क्या मेरबानी हुई है। अब हर वक्त वह है और अल्लाह-अल्लाह।"

बेगम अहद ने कहा—"वह तो नजमा के लिये उसका रिश्ता भी बड़े ज़ोर से लायी थीं!"

अब्दुल समद साहब ने कहा—"और अब तक इसी ज़िद पर हैं। मेरी समझ में तो यही बात नहीं आती कि माँ के दिमाग़ पर ज़्यादा असर है या बेटे के दिमाग़ पर! भई, इस लौंडे के दर्शन करने चाहियें। सुना है इसने ऐसी सूरत बनायी है कि हर तरह से मदारी मालूम होता है। यह मियाँ जमाल और इरफ़ान वग़ैरह ठहरे एक ही हज़रत। यह सब उस का तमाशा बनाये हुए हैं।

बेगम अहद ने कहा—"अभी तीन-चार दिन हुये हैं, उसने क़व्वाली का जल्सा किया था। उसमें यह सब गये थे। तारा तो मारे हँसी के वहाँ से बदहवास आयी थी।

अब्दुल समद साहब ने कहा—"यह सब मिल कर उस को कहीं का न रखेंगे। जमाल उसकी न जाने क्या गत बना डालेगा! और मुझे मालूम हुआ है कि इरफ़ान भी बहुत शरीर है। वह इन हज़रत को नहीं छोड़ेगा। शरफ़ साहब तो इस क़दर बेवकूफ हैं कि एक बार आँख की कमज़ोरी की वजह से मैं ख़ुद ख़त न लिख सकता था। उनसे एक ख़त लिखवा दिया। उस अल्लाह के बन्दे ने अजमेरी दरवाज़ा

'ऐन' से अजमेरी, दरवाज़ा लिख दिया। अचानक नजमा की नज़र पड़ गई। अब बताईये कि जो शख्स 'ऐन' से अजमेरी दरवाज़ा लिखे; उसकी माँ नजमा के लिए उसका रिश्ता लाये और उसकी खाला इस रिश्ते का ज़रा भी बुरा न माने.....!"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"मैंने ज़िन्दगी भर में अगर कोई बात बर्दाश्त की है तो वह यह है। भावज की वजह से चुप रह गया, वर्ना इस रिश्ते के लिये तो वह जवाब देता कि वह भी याद करतीं!"

अब्दुल समद साहब ने कहा—"हमारी बड़ी बूढ़ियाँ अजीब-अजीब हकीमाना और अक्लमन्दी की बातें कहा करती थीं। उन्हीं की एक कहावत है कि जिस घर में बेटी होती है, ढेले आते ही हैं!"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"जी हाँ, मगर यह ढेला मेरे दिल पर लगा था। भावज की वजह से सह गया। वर्ना जी तो चाहता था कि मिजाज़ दुरुस्त कर दूँ!"

इस विषय को सहसा जमाल और तारा के आगमन ने समाप्त कर दिया। यह दोनों अब्दुल समद को आदर पूर्वक सलाम करते हुये उनके निकट आये, तो समद साहब ने तारा को अपने निकट बुला कर फिर वही 'छोटी-बड़ी आँख' वाला परिहास किया और तत्पश्चात् जमाल और तारा से कुछ देर तक बातचीत करने पर जमाल से कहा—"आप ज़रा बाहर तशरीफ़ ले जायें! मुझे अपनी बेटी से कुछ बातें करनी हैं।"

जमाल, खुदा जाने बाहर गया या घूम कर यह रहस्यभरी बात सुनने के लिये फिर कमरे के अन्दर चला गया। हाँ, उसके जाने के बाद तारा को यह काम सौंपा गया कि वह नजमा से जमाल के सम्बन्ध में पूछ-ताछ कर शीघ्र से शीघ्र सूचित करे कि उस को इस सम्बन्ध से कोई विरोध तो नहीं है। नमाज़ का समय होने के कारण मौलवी अब्दुल समद साहब अधिक देर न ठहर सके।

सोलह

****

तारा जिस समय नजमा के यहाँ पहुँची, वह अपने जनाना बग़ीचे में बागवानी कर रही थी। कुछ सब्जियें इसने खुद बोयी थीं और उनकी देख-भाल भी वह स्वयं ही करती थी। तारा को देख कर उसने बच्चों की तरह इतरा कर कहा—"देखिये जनाब! मेरे टमाटर कैसे लाजवाब हो गये हैं और मिर्चें भी देखिये!"

तारा ने इस खेती-बाड़ी के प्रति, नजमा को प्रसन्न करने के लिये अपनी रुचि प्रदर्शित की। इसलिये वह नजमा को वहाँ से टाल कर उद्यान के दूसरे भाग में ले गयी। और उसने साफ-साफ कह दिया—"मैं आज अपनें बुजुर्गों द्वारा भेजने के कारण तुम्हारे पास आयी हूँ ताकि जमाल से रिश्ते के सिलसिले में तुमसे 'हाँ' कहलवा कर उन लोगों को सूचित कर दूँ!"

नजमा ने मुस्करा कर कहा—"क्या हमारे बुजुर्गों ने यह भी कह दिया है कि सिर्फ़ 'हाँ' ही कहलवाना, 'नहीं' की कोई गुँजायश नहीं?"

तारा ने समझाते हुये कहा—"नहीं भई! मेरा मतलब यह है कि तुम्हारी राय से उनको आगाह करना है और ज़ाहिर है कि यह राय सिर्फ 'हाँ' ही हो सकती है।"

तारा जानती थी कि जो कुछ वह कह रही है; गलत है और नजमा इतनी आसानी से 'हाँ' कहने वाली नहीं है। बल्कि उसे 'हाँ'

से ज़्यादा 'नहीं' के आसार नज़र आ रहे थे। परन्तु वह आज सिर्फ़ राय मालूम करने के लिये ही नहीं ; अपितु लाड़ली बहन के सामने 'हाँ' कहलवाने के लिये मचलने भी आयी थी। उसे ज्ञात था कि नजमा उससे कितना स्नेह करती है। साथ ही वह यह भी जानती थी कि यदि उन दोनों के बीच अत्यधिक मतभेद न हुआ तो वह अवश्य अपनी ज़िद में सफल हो जायेगी। उसने जान-बूझ कर 'हाँ' शब्द का प्रयोग किया था, ताकि सीधे रूप से चर्चा चल सके।

नजमा पहले तो एकाएक गम्भीर हो कर बैठ गयी। तत्पश्चात् उसने तारा की आँखों में आँखें डाल कर मधुर भाव से कहना आरम्भ किया। "नन्हीं बहन ! तुमने मेरे पास आने के बजाय खुद ही जवाब क्यों न दे दिया कि बचपन से परवरिश पाने वाला यह ख्याल पूरा नहीं हो सकता।"

तारा ने उसके मुँह पर हाथ रखते हुये कहा—"भई अल्लाह, ऐसी बातें सुन-सुन कर और महसूस कर मैं न जाने अपने दिल को कितना कुढ़ा चुकी हूँ। क्या तुम यही चाहती हो कि मेरा दिल जिसे तुम ठेस लगाना नहीं चाहती ; सचमुच टूट कर रह जाये। मेरी बहन, अब मुझ में इतनी शक्ति नहीं है कि तुम से इस किस्म की बातें सुनूँ !"

नजमा का हृदय भी भर आया था, किन्तु वह तारा के हृदय की दुर्बलता से भिज्ञ थी। इसलिये वह आँसू पी, न जाने किस तरह मुस्कराने में सफल हो गयी और बड़े प्यार से बोली—'मेरी दुलारी ! क्या तुझे यह बताने की अब भी ज़रूरत है कि मुझे जमाल के बाद तुझ से.....ज़्यादा अज़ीज़ और कोई नहीं है !"

तारा ने उछल कर कहा—"बस-बस, मेरी अच्छी नजमा ! मैं यही तो कहलवाने आयी थी। जमाल गोया, तुम्हें सब से ज़्यादा अज़ीज़ है—फिर तो कोई बात ही नहीं रही !"

नजमा ने तारा के गाल पर एक हल्की चुटकी मार कर कहा—"भोली लड़की ! मेरे और जमाल के बीच यही तो एक खाई है कि हम एक-दूसरे को इतना चाहते हैं कि मुहब्बत खुद हमारे रास्ते में आ खड़ी हो गई है। मैं अगर जमाल को न चाहती तो मैं ज़रूर शादी के लिये तैयार हो जाती और उसकी ज़िन्दगी को बदमज़ा बनाती। लेकिन मैं इतनी खुदगर्ज़ नहीं हूँ कि अपने लिये जमाल को तबाह कर दूँ और उस के स्वच्छन्द जीवन की सारी स्वछन्दता लूट कर स्वयं मालामाल हो जाऊँ। मैं जानती हूँ कि वह मेरे लिये बड़ी से बड़ी कुर्बानी कर सकते हैं। वह क्लब की दिलचस्पियाँ तज देंगे, वह मेरी नमाज़ों को बकवास कहना छोड़ देंगे.....,"

तारा ने बात काट कर कहा—"तो फिर....."

नजमा ने उसी प्रवाह में कहा—"बात सुनो मेरी ! मुझे मालूम है कि जमाल सब कुछ छोड़ कर भी मेरे साथ खुश रहने की कोशिश कर सकते हैं और इस कोशिश में कामयाब भी हो सकते हैं, लेकिन मैं ऐसा नहीं चाहती। मैं जमाल को असंतुष्ट नहीं देखना चाहती ! मैं उनके जीवन को हर बनावट से दूर देखना चाहती हूँ। मैं कई बार कह चुकी हूँ और आज फिर कहती हूँ कि मैं उनकी सच्ची अधार्मिकता को झूठी रूढ़िवादिता से कहीं अच्छा समझती हूँ। अगर मैं उन से शादी न करूँ तो, वे सिर्फ मुझे छोड़ देंगे, लेकिन अगर मैं उनसे शादी कर लूँ तो उन्हें मजबूरी मे जाने क्या-क्या छोड़ना पड़ेगा। मेरी अच्छी बहन, मैं ऐसी मजबूरी की क़ायल नहीं और न ही कभी मैं जमाल को मजबूर देखना चाहती हूँ। तुम्हें इस सिलसिले में अब कुछ समझाने की ज़रूरत नहीं ! तुम मेरी तरफ से मेरे बुजुर्गों को समझाने में वकालत करना और उन्हें बता देना कि नजमा जमाल को अपने साथ ले कर डूबना नहीं चाहती, बल्कि जमाल को उभारने के लिये उसने अपनी जगह एक दूसरी लड़की सोच ली है। जमाल की शादी भी

होगी और बहुत जल्द होगी, मगर नजमा के साथ नहीं।"

तारा ने तेवर बदल कर कहा—"फिर किसके साथ ?"

नजमा ने उसी प्रकार गम्भीरता से कहा—"मेरे चुनाव पर तुम्हें चाहिये कि तुम फड़क उठो !"

तारा ने मुँह बना कर कहा—"खाक थोड़ी सी ! जमाल भाई के सिलसिले में तुम्हें छोड़ कर मुझे किसी चुनाव पर फड़कने की जरूरत नहीं है। होगी कोई बला ! मेरी जूती से !"

नजमा ने तारा के होंठ पर हाथ रख कर कहा—"अरे-अरे, अपनी बहुत ही प्यारी सहेली के बारे में तुम यह बातें कर रही हो ! तारा ! तुम्हारी भाभी और मेरी प्यारी भाभी मैबुल बनाई जायेगी !"

तारा ने विस्मय से कहा—"मै.....बुल.....?"

नजमा ने बधाई पाने की आशा से अपनी दृष्टि तारा की आकृति पर टिका कर कहा—"हाँ, मैबुल। दाद दो मेरे चुनाव की ! और तुम्हें यह जान कर और भी खुशी होगी कि जमाल भाई के लिये मैबुल के दिल में भी एक मुर्दा तमन्ना थी, जिसको मेरे कारण विलायत ही में जमाल भाई ने बेमौत मारा था। और उस दिन से इस शरीफ़ लड़की ने फिर कभी जमाल के लिये अपनी इच्छा प्रगट नहीं की। तुम्हें मालूम है कि खुद जमाल मैबुल के लिये कितनी ऊँची राय रखते हैं !"

तारा ने उसी बिस्मय भरे भाव से कहा—"यह तो ठीक है ! मगर मैबुल और जमाल भाई, यह दोनों कैसे राजी हो गये ?"

नजमा ने उसे समझाये हुये कहा—"मैबुल के फरिश्तों को भी यह खबर न थी कि यह होने वाला है, लेकिन न जाने उस को मैंने किस तरह यह बात सुनाई और उसी से उसे इस तरह माँगा कि वह कम से कम इन्कार न कर सकी। तारा, तुम सोच भी नहीं सकती, कि वह

बेचारी इस बात पर कितनी हैरान और परेशान हुई होगी कि या तो वह मेरा दिल तोड़ दे या अपने को मुझे सौंप दे।"

तारा अब तक विस्मित थी। उसने आकाश की ओर दृष्टि उठा कर कहा—"और जमाल भाई ?"

नजमा ने कहा—"उन से बात करने का अब तक मौका नहीं मिला। मैं जानती हूँ कि उन्हें राज़ी करना कोई आसान काम नहीं है। लेकिन तुम यह भी जानती हो कि मेरा कोई इरादा असफल होने के लिये नहीं बना है !"

तारा ने दाँत पीस कर कहा—"बड़ी नेपोलियन की खाला बनी है ! मैं अपनी और तुम्हारी जान एक कर दूँगी, लेकिन यह हरगिज़ न होने दूँगी, कभी नहीं—कयामत तक नहीं !" और फूट फूट कर रोने लगी।

उस के इस करुण रुदन पर नजमा सिटपिटा कर रह गई। तरह-तरह से उसे चुप करने और मनाने की कोशिश करती रही। आखिर, जब वह बड़ी कठिनाई से चुप हो गई तो उसे बहुत देर तक अत्यंत प्यार से समझाती रही। "देखो ! खुद मेरे लिये ही यह कितना सख्त इम्तिहाँ है ! मगर मैंने अपने को इसलिये तैयार कर रक्खा है कि मेरे और जमाल के बीच जो मुहब्बत है—वह परायेपन की शकल में न बदल जाय। और भलाई इसी में है कि हम दोनों सिर्फ बहन-भाई बन कर रहें। जहाँ तक प्रेम के एक कोमल भाव का सम्बन्ध है, वह तो प्रत्येक दशा में कायम रहता है।"

नजमा उस को समझाती चली जा रही थी, किन्तु वह उस समय कुछ भी समझने को तैयार न थी। आखिर, उसने एक प्रश्न सीधे सीधे किया। "अच्छा, यह बताओ कि फिर तुम्हारा क्या होगा ?"

नजमा अब स्वयं को संयत न कर सकी। अवरुद्ध स्वर में बोली—मैं.....मैं.....मैबुल और जमाल को खुश देख कर ज़िन्दा रहूँगी।"

यह कह कर वह अपने पर नियंत्रण नहीं पा सकी और तारा ने जिस समय उस के गले से लग कर सिसकियें लेनी शुरू की तो नजमा भी बिलख-बिलख कर रो रही थी। परन्तु इस रुदन के पश्चात भी उसने तारा को अंतिम उत्तर यही दिया—"मेरी और जमाल की शादी तो नामुमकिन है। इस तरफ से मेरे जवाब को पत्थर की लकीर समझ कर कोई और बात करो।

अखिर, दोनों एक-दूसरे को समझाने में असफल रहीं और नजमा की ओर से 'नहीं' उत्तर लेकर तारा कुछ रुष्ट सी, परन्तु सही मायनों में टूटा हृदय लिये नजमा के यहाँ से रवाना हुई।

सत्रह

******

नजमा के यहाँ से निवृत्त हो कर तारा एक हारे हुए जुआरी की तरह, अपने घर जाने के लिये मोटर पर सवार हो कुछ ही आगे बढ़ पाई थी कि उसे इरफान अपनी मोटर-साइकिल पर नजमा के मकान की तरफ आता दिखाई दिया। अतः तारा ने घर लौटने का विचार त्याग दिया। गाड़ी रोक, नीचे उतरी और इरफान के समीप पहुँच कर बोली—

"आप अपनी मोटर साइकिल यहीं छोड़ दीजिये और ज़रा मेरे साथ चलिये !"

इरफान ने परेशानी से कहा—"खैरियत तो है ?"

तारा सन्तोष से बोली—"खैरियत तो है। मुझे आप से कुछ बातें करनी हैं !"

इरफान के लिये यह पहला अवसर था कि तारा ने स्वयं उससे बात करने का विचार व्यक्त किया था, अन्यथा अब तक इरफान स्वयं छेड़-छेड़ कर, टोक-टोक कर उस से बातें किया करता था। अतः वह समझ गया था कि बात कुछ विशेषता लिये हुए ही है। यही कारण था कि उस के हाथ-पैर फूल रहे थे। किसी तरह मोटर-साइकिल उससे गिरती-गिरती बची और अखिर, ज्यों-त्यों मोटर-साइकिल को नजमा की ड्योढ़ी में छोड़ स्वयं तारा की कार में आ कर बैठ गया।

तारा ने ड्राईवर से कहा—"दिलकुशा गार्डन !"

मोटर स्टार्ट होने के बाद इरफान ने तारा से पूछा, "आखिर, बात क्या है ?"

तारा ने कहा —"मैं नजमा आपा (बहन) के पास गयी थी।"

इरफान बोला—"वह तो मुझे भी मालूम है कि आप वहीं से लौट रही थीं। आखिर, हुआ क्या ?'

तारा ने नैराश्यपूर्ण स्वर में व्यक्त किया। "नजमा आपा के पास मुझे भेजा गया था कि जमाल भाई से शादी के सिलसिले में उनकी राय मालूम करूँ। उन्होंने कतई इनकार कर दिया है "

इरफान ने कहा—"मुझे मालूम था कि वह इन्कार करेंगी। और इस समय दरअसल मैं भी इसी मामले में उन से बातचीत करने जा रहा था।"

तारा ने कहा—"सिर्फ यही नहीं ; बल्कि आप को यह जान कर हैरत होगी कि वह जमाल भाई का रिश्ता मैबुल से पक्का करने की कोशिश कर रही हैं। यहाँ तक कि वह मैबुल को भी राजी कर चुकी हैं !"

इरफान ने एकदम चौंक कर कहा—मैबुल से..... ?"

तारा ने कहा—"जी हाँ, मैबुल से और देख लीजियेगा कि वह जिस तरह मैबुल को राजी कर चुकी हैं उसी तरह जमाल भाई को भी ऐसे शिकंजे में कस कर उन से बात करेंगी कि वह भी इन्कार न कर सकेंगे।"

इरफान ने कहा—"यह नामुमकिन है। जमाल को थोड़ा बहुत मैंने भी पढ़ा है। वह जमाल को इस काम के लिये हरगिज तैयार नहीं कर सकतीं। अलबत्ता, मुझे इस से भी खतरनाक नतीजे का अंदेशा है कि अगर नजमा अपनी ज़िद पर अड़ी रहीं तो, ख़ुदा न

ख्वास्ता कोई संगीन किस्म की 'ट्रेजेडी' न हो जाय !"

तारा ने कहा—"इस से बढ़ कर और क्या ट्रेजेडी होगी कि दो ज़िन्दगियाँ नष्ट हो रही हैं !"

इरफ़ान ने कहा—"और वह भी बिना कारण, महज़ ज़रा से उसूल पर। मैं तो इस मामले में नजमा के दिमाग़ के फितूर का हाथ समझ रहा हूँ। न यह मज़हबियत है, न यह उसूल—बल्कि सच पूछिये तो सनक है।"

तारा ने कहा—"जो कुछ भी हो लेकिन नजमा आपा का समझाना मुमकिन नहीं ! और जमाल भाई सब-कुछ सह सकते हैं, मगर इस सिलसिले में ज़रा सा भी झूठ न बोल सकेंगे।"

इरफ़ान ने कहा—"अगर आप राय दें तो मै भी नजमा से बात कर लूँ !"

तारा ने निराश से कहा—"आप को अधिकार है, मगर मुझे किसी अच्छे नतीजे की उम्मीद नहीं !"

इरफ़ान ने ड्राईवर से कहा—"बड़े मौलवी साहब के यहाँ वापिस चलो !"

तारा ने कहा—"मेरे आँसुओं से जो काम न निकला, अगर वह आपके शब्दों से हो गया तो मै आप को जादूगर समझूँगी।"

इरफ़ान ने कहा—"बहरहाल, कोशिश तो करूँगा। हालाँ कि मुझे खुद ही बहुत ज्यादा उम्मीद नहीं है।"

तारा ने इरफ़ान को नजमा के मकान पर यह कह कर छोड़ दिया—"जो कुछ आप को मालूम हो, उसके बारे में मुझे वापसी में सूचित करते जाइयेगा। मैं घर को ही लौट रही हूँ।"

इरफ़ान अपने मस्तिष्क में उन शब्दों को सँजो रहा था, जो

उसे नजमा के समक्ष दोहराने थे। यद्यपि स्वयं उस का मस्तिष्क कार्य नहीं करता था कि वह कौन सा रास्ता ढूँढ निकाले। इसी प्रकार वह इन्हीं विचारों में उलझा नजमा के पास पहुँच गया; जो इस बाढ़ में अपने को बहा कर अभी-अभी किनारे ही लगी थी। नजमा ने इरफान को देख कर समझने और प्रसन्न होने का सफल प्रयास किया, परन्तु इरफान ने उसकी सुर्ख आँखों से सारी स्थिति भाँप ली और सीध रूप से बातचीत करने के बजाय उसने पहुँचते ही कहा—"सुनिये जनाब! तक़ल्लुफ़-ब-तक़ल्लुफ़ मैं आप के यहाँ मेहमान बन बन कर आया हूँ! चाहिये तो यह कि आप डोली के किराये के तौर पर मुझे पेट्रोल भी दें, मगर मैं पेट्रोल माफ कर के इस शर्त पर केवल एक पुर-तक़ल्लुफ़ चाय माँगता हूँ कि आप मेरे साथ रहें और चाय खुद-ब-खुद आ जाय।"

नजमा ने कहा—"आप अलादीन का चिराग़ साथ लाये हैं?"

इरफान ने कहा—"क्या मतलब.....?"

नजमा ने कहा—"उस को घिस कर दूत से कह देती कि 'यहाँ से नहीं हिलूँगी, तुम फौरन चाय लाओ।"

इरफान ने एक कुर्सी पर अपने को गिराते हुये कहा—"अल्लाह रखे; आप के यहाँ नौकर हैं। किसी को आवाज़ दे दीजिये। सब तावेदार हैं, चाय आ जायेगी। आप के हलक में ही अलादीन का चिराग़ है।"

नजमा ने मुस्कराते हुये कहा—"मैं हलक फाड़ कर चीखन से तो रही! हाँ, इतनी इजाज़त जरूर चाहती हूँ कि सिर्फ चार कदम बढ़ कर किसी को बुला लूँ और चाय के लिये कह दूँ।"

इरफान ने बादशाही अंदाज़ से कहा—"मंजूर है।"

नजमा ने नौकरानी को चाय के सम्बन्ध में आवश्यक आदेश दे कर इरफान के पास आ कर कहा—"लीजिये! बस, इतनी सी बात

थी जिसे आप अफसाना बनाये हुये थे !"

इरफान ने कहा—"नजमा बहन ! मेरा इरादा है कि मैं नमाज़ शुरू कर दूँ।"

नजमा ने शरारत से कहा—"क्यों, क्या कसूर हुआ है नमाज़ से ?"

इरफान बोला—"लीजिये ! आप तो लगीं leg-pulling (खींचा तानी) करने ! और मैं गम्भीरता से नमाज़ पढ़ने के बारे में सोच रहा हूं।"

नजमा ने कहा—"क्यों अपना बुरा चाहने लगे हो ? नमाज़ पढ़ने के बाद क्या तुम्हें उम्मीद रहेगी कि जमाल भाई तुम्हें अपना बहनोई बना लेंगे !"

जमाल का ही जिक्र तो वह छेड़ना चाहता था। अतः वह फौरन ही बोला—"मेरी राय में आप जमाल को हक़ीकत से ज्यादा बेमज़हब समझती हैं। हालाँ कि मेरे विचार से उन का रोग इलाज के क़ाबिल है। क्यों न हम सब मिल कर इस बात की कोशिश करें कि उन में मजहबी रूह फूँकी जाय !"

नजमा ने परिहास के भाव से कहा—"आप में शायद ऐसी योग्यता हो, लेकिन मैं तो इसका दावा नहीं करती। यह भी कोई फुटबाल है कि उसमें हवा फूँकी जाय और वह लगे उछलने ! यह तो वही बात हुई कि व्यक्ति पाठशाला का मुँह देखते ही प्रकाण्ड विद्वान बन जाय !"

इरफान ने कहा—"लीजिये, आप तो कविता करने लगीं ! मेरा मतलब तो यह था कि जमाल को तर्क-वितर्क से मजहबी रास्ते पर लाया जाय ! "

नजमा ने कहा—"माफ कीजियेगा। मेरे ख्याल में तर्क-वितर्क उन लोगों पर सफल हो सकता है जो दिल से सीधे मार्ग की खोज में हों,

परन्तु किसी वजह से उन्होंने ग़लत रास्ता अख्तियार कर लिया हो और जिनको दुनिया के किसी धर्म से कोई लगाव न हो, बल्कि जो धर्म के अस्तित्व को ही बकवास समझते हों। और जिनके मस्तिष्क में दुनियाँ भर के धर्मों के अस्तित्व के विरुद्ध पक्की दलीलें मौजूद हों, उनके साथ तर्क सफल नहीं हो सकता।"

इरफान ने कहा—"मैं यह मानने को तैयार नहीं हूँ। दलीलों ने कट्टर से कट्टर नास्तिकों को मुँह के बल गिराया है। आप का विचार यदि सही होता तो आज कोई मज़हब इतना कामयाब ही न होता।"

नजमा ने कहा—"आप मानें या न मानें, लेकिन जब धर्म और अधर्म में कोई अन्तर ही नहीं रह जाता और धर्म के अस्तित्व के लिये मन में मज़ाक उड़ाने का विचार पैदा होता है तो नास्तिक तर्क-वितर्क का जवाब क़हक़हों की शक्ल में देता है। मैं आप को मना नहीं करती, लेकिन जमाल भाई अगर दलील से आस्तिक हो गये तो मैं उनकी आस्तिकता को भी उतना ही अविश्वस्त समझूँगी, जितना कि इस नास्तिकता को; जिसे छोड़ कर वह सिर्फ समझाने-बुझाने से ही मज़हब को अपनाने लगेंगे।"

इरफान ने कहा—"इस का मतलब तो यह हुआ कि तर्क-वितर्क के सिद्धान्त से ही आपका मतभेद है।"

नजमा ने कहा—"आप फिर ग़लत समझे! मैं अभी कह चुकी हूँ कि तर्क-वितर्क सिर्फ उन लोगों के लिए अहमियत रखता है, जो मज़हब में थोड़ी सी भी दिलचस्पी रखते हों। चाहें वह कोई सा भी मज़हब हो। मज़हब में दिलचस्पी रखने वाले अगर ईमानदारी के साथ असलियत की तलाश में हों और सिर्फ बाप-दादा के मज़हब को ही असलियत नहीं समझते; बल्कि अपने सिद्धान्तों पर आलोचनात्मक दृष्टि डालने के लिये भी तैयार हों—तो उनके लिये तक-वितर्क

अहमियत रखता है और साथ ही आवश्यक भी है। दूसरी किस्म के वह हैं जो मज़हबी तो हैं, मगर इसलिये मजहब पर क़ायम हैं कि बाप मुसलमान थे—लिहाजा वह भी मुहम्मद अयूब के बेटे मुहम्मद याकूब बन कर मुसलमान बने हुये हैं, लेकिन मज़हब के नियमों से उन्हें कोई सरोकार नहीं; इन लोगों पर तर्क-वितर्क का प्रभाव कठिनाई से पड़ता है। लेकिन तीसरी किस्म जो आजकल पैदा हुई है, इसने मज़हब पर आलोचनात्मक दृष्टि डाली है और जिसने दलीलें दे कर मज़हब को ढकोसला और इबादत (पूजा) को बकवास बताया है और अधर्म को धर्म मान कर वह धर्म के सिद्धान्तों के ही विरुद्ध है; ऐसे लोगों पर तर्क-वितर्क का प्रभाव असम्भव है और इन्हीं लोगों में जमाल भाई भी हैं।"

इरफान ने कहा—"अच्छा, चाय बनाइये ! मैं जब तक गाजर का हलुआ खाता हूँ। जो उसूलन मुझे खा लेना चाहिये। ताकि मै दिमाग़ को तरो-ताज़ा कर के आप से वह बहस शुरू करूँ जिसमें आप फ़िलहाल हार सकें !"

नजमा ने हँस कर चाय बनाते हुये कहा—"इसमें हारने-जीतने की बात नहीं इरफ़ान साहब ! अगर मैं जमाल भाई की मज़हब की बेगानगी को सिर्फ एक भूल समझती तो अब तक कभी का उन्हें सीधे रास्ते पर ला चुकी होती। लेकिन वह पढ़े-लिखे और सूझ-बूझ रखते हुये भी अज्ञान बने हुये हैं। मज़हब को समझ-बूझ कर नासमझ बने हुये हैं और खुदा जाने, कितना सोच-विचारने के बाद वह इस नतीजे पर पहुचे हैं कि यह सब बकवास है; गोया अविश्वास ही उनका विश्वास है। वह तो मेरा बहुत ख्याल करते हैं कि मेरे सामने कुछ नहीं कहते, वर्ना वह खुदा और रसूल की शान में इन्ताही (अत्यधिक) 'गुस्ताखी' तक को ठीक या जायज़ समझते हैं। आप ने उनका वह मज़मून नहीं पढ़ा जो मैगज़ीन 'तरक़्क़ी' में छपा है। और जिसम

उन्होंने अपनी ठोस दलीलों द्वारा धर्म के अस्तित्व को इन्सान के दिमाग़ का फ़ितूर बताया है ! हालाँ कि जिस 'सोशलिज्म' को वह धर्म से दूर मानते हुये भी सामने लाये हैं—वह दिमाग़ी फ़ितूर की बुरी से बुरी मिसाल है। यानी नास्तिक बनते जाते हैं और नास्तिकता को ही धर्म समझते हैं। ख़ैर, कुछ भी हो। वह अपने मज़हब में मुझे उस जगह नज़र आते हैं जहाँ से मुझे उनकी वापसी की कोई उम्मीद नहीं।"

इरफ़ान ने कहा—"अच्छा, इस ज़िक्र को छोड़िये ! आप यह बताइये कि आप के दिल में जमाल के लिये कितनी जगह है ?"

नजमा ने ढीठ बन कर कहा—"जितनी एक संकीर्ण हृदय में सम्भव है।"

इरफ़ान ने कहा—"यानी, अगर जमाल ख़ुदा न ख़ास्ता काने हो जायें, तो....."

नजमा बोली—"तो भी मैं यही कहूँगी कि आँख की रोशनी रहने या न रहने से मेरे दिल में उनकी तरफ से कोई फ़र्क़ नहीं आयेगा।"

इरफ़ान ने कहा—"अगर बदनसीबी से वह कोढ़ी होते तो.....?"

नजमा ने कहा—"आप बहस को क्यों बढ़ा रहे हैं ? आखिर में आप को यही कहना है न कि मैं उनकी अधार्मिकता को भी ऐसा ही रोग समझ कर उन्हें क़बूल कर लूँ ! इरफ़ान साहब, यह बात नहीं है—बल्कि हालात कुछ और ही हैं। मैं अपने में मज़हब का कोढ़ समझ कर अपने को उनके योग्य नहीं समझती और मैं यह सहन नहीं कर सकती कि वह मेरे लिये अपनी ज़िन्दगी ही तबाह कर लें।"

इरफ़ान ने कहा—"इस में ज़िन्दगी की तबाही की क्या बात है ! आप को शायद यह मालूम नहीं कि 'सिविल मैरिज' का तरीक़ा भी मौजूद है। दो विभिन्न धर्मों के पति-पत्नि आपस में विवाह करते

हैं और अपने-अपने धर्म पर क़ायम रह कर अपनी ज़िन्दगी बसर करते हैं !"

नजमा ने कहा—"करते होंगे। मगर मैं यह नहीं समझ सकी कि मज़हब की दीवार बीच में होने पर दो दिल क्यों कर एक हो सकते हैं !"

इरफ़ान ने कहा—"अब तो आप असलियत को मानने से भी इन्कार करने लगीं। हज़ारों मिसालें आपके सामने इस तरह की पेश की जा सकती हैं कि मियाँ का मज़हब कुछ और, बीबी का मजहब कुछ और—ज़िन्दगी मज़े में गुजर रही है।"

नजमा ने कहा—"माफ कीजियेगा, वह मियाँ-बीवी दोनों अपने-अपने मज़हब से बेजार हैं। या उनके दिमाग़ में मज़हब का कोई अस्तित्व ही नहीं होता, बल्कि सोसायटी के दबाव से वह नाम मात्र को अपने पूर्वजों के धर्म के पाबन्द रहते हैं। लिहाजा, उन दोनों में कभी मत-भेद नहीं होता। लेकिन दोनों में से एक का भी मज़हब की तरफ़ खिंचाव बढ़ गया तो तलाक का दरवाज़ा खटखटाया जाता है। मगर मैं आप को यक़ीन दिलाती हूँ कि मैं नुमायशी या रस्मी तौर पर मुसलमान नहीं हूँ; बल्कि व्यक्तिगत रूप से सच्ची मुसलमान हूँ। और जमाल भाई के बारे में भी सुन लीजिये कि वह मज़हब की तरफ से शौकिया बेदीन (विमुख) नहीं हुये हैं; बल्कि बेदीनी को एक सिद्धान्त, एक उद्देश्य या धर्म बना चुके हैं।"

इरफ़ान ने कहा—"अच्छा, अब आप ही बताइये कि समझौते की कोई सूरत मुमकिन है ?"

नजमा ने कहा—"जी हाँ, सिर्फ एक !"

इरफ़ान उछल कर बैठ गया। "खुदा के लिये बताईये न ! मैं उस इकलौती सूरत को ले कर इस बेल को मँढ़े चढ़ाना चाहता हूँ।"

नजमा ने हँस कर कहा—"वह सूरत सिर्फ यह है और वह समझौता सिर्फ इस तरह हो सकता है कि मैं जमाल भाई की चहेती बहन और वह मेरे अज़ीज़ तरीन भाई बने रहें

इरफान फिर हाथ-पैर ढीले कर कुर्सी पर पड़ा, बोला—"सुबहान अल्लाह ! जहाँ से चले थे फिर वहीं लौट आये ! गोया आप यह तय कर चुकी हैं कि अपने साथ जमाल भाई की ज़िन्दगी भी तबाह कर देंगी !"

नजमा ने कहा—"जी नहीं, जमाल की ज़िन्दगी को तबाही से बचाने की पूरी ज़िम्मेवारी मुझ पर छोड़िये। मैं उनकी ज़िन्दगी को खुशगवार बनाने की पूरी तरकीबें समझ चुकी हूँ और अब बहुत जल्द अमल करने का वक्त आ रहा है।"

यह कह कर उस ने मैबुल और जमाल के रिश्ते के सम्बन्ध में इरफान को बहुत-कुछ समझा कर उसे सब हालात विस्तार-पूर्वक बता दिये और उसे हर तरह विश्वास दिलाने की कोशिश कि इन दोनों का जीवन प्रत्येक रूप से पूरी तरह सफल रहेगा। मैबुल निहायत शरीफ़ लड़की है और अपने हृदय में जमाल के लिये कुछ छुटी कामनायें भी रखती है और स्वयं जमाल की दृष्टि में यदि कोई उपयुक्त पत्नी सिद्ध हो सकती है तो वह मैबुल ही है।

खुदा जाने, इरफान को नजमा की इस बात पर विश्वास भी हुआ या नहीं और नजमा की बातों से वह सन्तुष्ट भी हुआ या नहीं। लेकिन इतना तो नजमा ने भी अनुभव किया कि इरफान बुरी तरह पराजित हो कर वहाँ से लौट रहा है और उसे नजमा से शिकायत हो या न हो, परन्तु असफलता की छाप उसकी आकृति द्वारा स्पष्ट रूप में झलक रही थी। नजमा ने प्रगट रूप में उसे हर तरह खुशी-खरम वापिस करने की कोशिश की, लेकिन वह स्वयं जानती थी कि वह अपने प्रयत्न में सफल नहीं हो पायी है।

अठारह

*"******

तारा और इरफ़ान में पहले दो-एक दिन खिचड़ी पकती रही कि यह शोकमय समाचार बुज़ुर्गों तक पहुँचाया जाय या नहीं ! किन्तु बाद में यह तय हुआ कि इस के अतिरिक्त और चारा ही क्या है कि नजमा की राय ज्यों-की-त्यों पेश कर दी जाय। अतएव जिस समय मौलवी अब्दुल समद साहब और मौलवी अब्दुल अहद साहब पर यह वज्रपात किया गया है उस समय की कल्पना वही सज्जन कर सकते हैं जिनके ईश्वर रखे ; ऐसे बुजुर्ग हों जो स्वयं को अपने आत्मीयों या अज़ीज़ों का अभिभावक समझते हुये यह बात कभी नहीं सोचते कि उनके अज़ीज़ भी दिलो-दिमाग़ रखते हैं और जो जीवन वह बिता रहे हैं, वह इन का थोड़ा-बहुत वैयक्तिक जीवन भी है जिसके बारे में वह इन बुज़ुर्गों से ज़्यादा ही समझते हैं। उन बुज़ुर्गों से ज़्यादा—जिन्हें आजीवन उनका साथ नहीं देना है, अपितु उन से और उन की दुनिया से मुँह मोड़ कर चल देना है।

प्रत्येक दशा में—तारा ने जिस समय यह खबर पहुँचाई है, किसी के तो पाँव के नीचे की ज़मीन खिसक गई और किसी के हाथों के तोते उड़ गये। कोई मुँह खोल कर रह गया और किसी के मुँह से वह विस्मयजनक चीख निकल गई, जो प्रायः परिहास करने के लिये प्रयोग में लायी जाती है।

मौलवी अब्दुल समद साहब के फरिश्तों को भी यह वहम न था कि नजमा इस दिलेरी के साथ रूखा सा जवाब दे देगी। वह बेचारे

उस समय 'वज़ीफा' पढ़ रहे थे। यह सुनते ही इनकी माला का फिरना बन्द हो गया, बेमतलब ही इनके ओठ फरफराये, कुछ खँखारे, कुछ अपने को संयत करनें का प्रयत्न किया, परन्तु उनके इस प्रयत्न से ही बहकने अनुमान हो गया। अन्त में बहुत देर के विचित्र से मौन के पश्चात मौलवी अब्दल अहद साहब से, जो इस समय ज़मीन पर बत्तख के रूप में विद्यमान थे; कहा—"सुन लिया आपने मियाँ अहद !"

अब्दुल अहद साहब भी अपने विचार सागर से निकल कर बाहर आये चौंक कर बोले—"जी ! क्या फरमाया ?"

अब्दुल समद साहब ने कहा—"अपना सर ! जी चाहता है कि इस वक्त अपनी और इन साहबजादी की जान एक कर दूँ। काश यह खुराफात की जड़ पैदा ही न होती। सवाल यह है...यानी मैं पूछता यह हूँ कि .....कि.....कि ज़रा पानी मँगाओ किसी से !"

तारा तत्क्षण ही पानी लेने चली गयी तो अब्दुल अहद साहब ने कहा—"भाईजान ! आप आखिर, इस क़दर नाराज़ क्यों हैं ? यह तो....."

मौलवी अब्दुल साहद साहब ने चीख कर कहा—"यानी गोया, मतलब यह है कि यह नाराज़गी की कोई बात ही नहीं है ! इतनी बड़ी बात, इस क़दर सख्त बात और तुम.....तुम.....तुम.....ले आओ बेटी पानी, और जा कर अपना काम करो !"

तारा पानी दे कर चली गयी तो मौलवी अब्दुल अहद साहब ने सँभल-सँभल कर कहा—"मेरे विचार से नजमा ने सचाई और सच्ची जुर्रत से काम लिया है।"

अब्दुल समद साहब से पानी भी न पिया गया। कुछ हलक में गया होगा किन्तु अधिकांश कुर्ते पर टपक रहा था; तभी गड़बड़ा कर बोले—

"भई ! मैं अपना सिर पीट लूँगा, यानी क्वाँरी लड़की और शादी के लिये कहे कि मुझे पसन्द नहीं !"

अब्दुल अहद साहब को हँसी आ गयी, बोले—"भाईजान ! ऐसी बात क्वाँरी लड़की ही तो कह सकती है। शादीशुदा को क्या जरूरत पड़ी है कि वह शादी होने के बाद शादी के बारे में अपनी राय दे ! दूसरे, नजमा से जब पूछा गया तो उसने अपनी सच्ची राय दे दी। राय का मतलब सिर्फ यही तो नहीं है कि इक़रार (स्वीकार) किया जाय—इन्कार किया ही न जाय।"

अब्दुल समद साहब कुढ़ कर कहने लगे —"तुम्हीं ने इस लड़की का सत्यानाश किया है ! अगर तुम्हारी शै उसे न मिलती तो ऐसी जुर्रत उसमें कभी भी पैदा न होती ! उसमें बग़ावत की रूह फूँकने वाले तुम्हीं हो ! मैं उस अभागी को ऐसा नहीं समझता था....."

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"कि वह ऐसी सच्ची और ईमानदार होगी।

अब्दुल समद साहब ने कहा—"मियाँ अहद ! तुम अपनी सीमा से बाहर हो रहे हो। आज से पहले मैंने तुम्हें कभी ऐसी गुफ़्तगू करते नहीं सुना और न ही मैं इस का आदी हूँ!"

अब्दुल अहद साहब ने गर्दन झुका कर कहा—"मैं सेवक हूँ आपका और अगर कोई गुस्ताख़ी हुई है तो माफी चाहता हूँ। लेकिन यह अर्ज़ ज़रूर करूँगा कि नजमा के लिये अपनी राय ख़राब करने से पहले आप तस्वीर के दोनों रुखों को देख लें ! जमाल के बारे में मैं आप से कई बार कह चुका हूँ कि उसने अपने आप को हरगिज़ नजमा के क़ाबिल नहीं रखा है। दोनों में ज़मीन-आसमान का फ़र्क पैदा हो चुका है। वह ख़ालिस हिन्दुस्तानी है, जब कि यह साहब अपना हिन्दुस्तानी होना भूले बैठे हैं। वह धरम-करम की पाबन्द और यह उसी शिद्दत से नमाज़-रोज़े के विरोधी हैं।"

अब्दुल समद साहब ने बात काट कर कहा—"नमाज़ और रोजे को क्यों बदनाम कर रहे हो ? नमाज़-रोज़े की पाबन्दी के माने, क्या यह है कि बुजुर्गों से बग़ावत की जाय ! बेशरमी और बेहयाई लाद ली जाय !"

अब अब्दुल अहद साहब ने ज़रा दबंग हो कर कहा—"भाईजान, उसने कोई बग़ावत नहीं की ! और जहाँ तक शर्मो-हया का ताल्लुक़ है मैंने उस से ज्यादा शर्मीली और लजीली लड़की अपनी उम्र में नहीं देखी। उस से राय माँगी गई थी। वह सच्ची है, लिहाज़ा सच बोल दिया। उसकी मन में सच्चाई और ईमानदारी के अलावा और कुछ नहीं है।"

अब्दुल समद साहब ने पहलू बदल कर और मुँह से झाग उगलते हुये कहा—"मगर यह यानी...यानी कुछ भी नहीं... ! अगर उसने जमाल के साथ शादी करने से इन्कार किया है, तब मुझे उससे कोई वास्ता नहीं। मैं अब उस की शादी कहीं और नहीं कर सकता और न ही उसकी वजह से तारा की शादी में देर कर सकता हूँ। तारा की शादी की तारीख फौरन तय होगी ! आज ही, इसी वक्त ! और मेरे सामने अब नजमा का ज़िक्र न किया जाय। क्या समझे ! म पूछ रहा हूँ क्या समझे !"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"ठीक कहते हैं आप !"

अब्दुल समद साहब इस समय क्रोध में पागल हो रहे थे। दुख अब्दुल अहद साहब को भी था। मगर नजमा की बात पर नहीं—बल्कि जमाल की बातों पर। बेगम अब्दुल अहद को जैसे साँप सूँघ गया था। गुमसुम बैठी हुयी थी। आखिर, अब्दुल समद साहब ने उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। "दुल्हन ! तुम जल्द से जल्द कब तारा की शादी के लिये तैयार हो सकती हो ? मैं चाहता हूँ, फौरन तैयारी की जाय और बहुत जल्द कोई तारीख नियत हो।"

बेगम अब्दुल अहद ने डरते-डरते कहा—"मैं तो हर तरह तैयार हूँ। जब आप मुनासिब समझें !"

अब्दुल समद साहब ने कहा—"बस.....तो बस.....यानी बस ! मेरा मतलब यह है कि निहायत सादगी और शरई तरीके के साथ आने वाले जुमे को तारा की शादी करदी जाय। मैं बग़ावत की उस हवा से उतरा हूँ जो इस नालायक लड़की ने चलाई है। अब के जुमे को, आज है गोया.....गोया कल थी जुमेरात (बृहस्पतिवार) यानी आज भी जुमा हुआ, तो बस अगले जुमे का दिन ठीक रहेगा। क्या कहते हो अहद ?"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"ठीक है।"

अब्दुल समद साहब ने कहा—"बड़ी बनी है परहेज़गार की बच्ची ! बस, अब की जुमा ! मैं इरफ़ान की खाला को आज ही सूचित करता हूँ। निहायत सादगी से शादी, इस के बाद बस, खाना ! जमाल में सौ ऐब हैं ! अब देखना, उससे बेहतर लड़का इन साहबज़ादी को कहाँ से मिलता है ! यह सब तुम्हारा ही नाश मारा हुआ है। अब सिर पर हाथ रख कर...यानी हाथ पर सिर रख कर रोओ..... ! गुस्ताख.....बदबख़्त .....काश, इस दिन के लिए ज़िन्दा ही न रहता या नजमा पैदा ही न होती.....तो बस...जुमा...।"

अब्दुल समद साहब इसी तरह बड़बड़ाते हुये वहाँ से रवाना हो गये। उन के बाहर निकालने के बाद ही बेग़म अब्दुल अहद ने कहा —"मैंने कहा, सुनते हैं आप ! इस वक्त आप भी अपने भाई साहब के साथ चले जाइये और नजमा को साथ लेते आइये। न जाने गुस्से में भाई साहब उसके साथ कैसा सलूक करें ?"

अब्दुल अहद साहब ने उत्तर दिया—"न समझें, न बूझें, खाँ-मा-खाँ का गुस्सा करते हैं। म अभी जा कर नजमा को ले आता हूँ।"

बेगम साहबा बोलीं—"और, क्या वाकई अब के जुमा को ?"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"वाकई अब के जुमे को। जानती हो कि उनके मुँह से निकला हुआ हर लफ्ज़ पत्थर की लकीर होता है। अगर कोई मतभेद था तो उन के सामने ही कहा होता !"

बेगम साहिबा ने कहा—"मतभेद की बात नहीं ! मैं तो यह कह रही थी कि जुमा को अगर शादी करनी है तो दिन ही कौन से रह गये हैं ! नजमा के अजावा भाभी को लेते आयें तो अच्छा है।"

अब्दुल अहद साहब ने जाने की तैयारी करते हुये कहा—"नजमा को तो मैं साथ ही लेता आऊंगा ! भाभी का इंतज़ार करने बैठ गया तो शायद खुद भी न आ सकूँगा। उन का पानदान ठीक होगा, घर भर में शोर मचाने के लिए खोयी हुई कुंजी ढूँढी जायेगी, नौकरों से हिसाब-किताब होगा, धोबी को देने के लिए कपड़े बटोरे जायेंगे, छः-सात रोज़ के लिए घी तोला जायेगा, आटा निकाला जायेगा, मुर्गियों का दाना निकलेगा, घरौंची की मरम्मत के बारे में नौकरों को बुला कर लैक्चर शुरू होगा। और जब वह इन तमाम सीढ़ियों से निबट लेंगी तो मालूम होगा कि कुंजियों को किसी कमरे में छोड़ कर अपने आप बन्द होने वाला ताला लगा दिया है। लिहाजा, फिर मिस्त्री ढूँढे जायेंगे और आखिरी शक्ल यह होगी कि मेरी भाई साहेब से मुठभेड़ हो जायेगी और नजमा का जिक्र ऐसे छिड़ जायेगा कि मुझे अपनी और नजमा की जान बचानी मुश्किल हो जायेगी। लिहाज़ा, मैं भाभी जान को इस वक्त तो लाने से रहा, मगर नजमा को ज़रूर ले आऊँगा !"

बेगम ने हँसते हुए कहा—"तोबा है। आप तो ऐसा नक्शा खींचते हैं जैसे सब कुछ आप के सामने ही हो रहा हो। अच्छा, तो आप उन

से कह दीजियेगा कि वह सुबह ज़रूर आजायें। सब कुछ ठीक है, मगर फिर भी वक्त पर बहुत सी चीज़ें याद आती हैं। इरफान के कपड़ों के लिये मैं जमाल से कह देती हूँ। वह खुद इन्तज़ाम कर देगा।"

अब्दुल अहद साहब ने जाते हुए कहा—"जमाल साहब को अपने मनोरंजन बल्कि तौबा, प्रोग्राम से अगर छुट्टी मिलेगी तो शायद वह कुछ हाथ बटा दें, वर्ना कपड़ों के सिलसिले में तो यह करो कि मैं कल ही इरफान को 'चैक' भेज दूँगा कि वह अपनी मर्ज़ी के कपड़े बनवाले। इस से अच्छी सूरत और क्या हो सकती है! वह जैसे चाहेगा, बनवा लेगा।"

यह कहते हुये मौलवी अब्दुल अहद साहब बाहर निकल गये।

उन्नीस

****

शरफ़ साहब को जिस समय यह समाचार मिला कि जुमे के दिन मौलवी अब्दुल अहद साहब के यहाँ उत्सव है तो वह मूर्छित होने से बाल-बाल बचे। अपनी तमाम ढकोसलेबाज़ी और टोने-टोटके उन्हें निराधार दीखने लगे और इस समय वह अर्द्ध-मूर्छित अवश्य हो चले थे। वो तो कहिए, कुशल हुई कि ठीक उसी समय इरफान आ पहुँचा। उस ने आते ही बता दिया कि नजमा और जमाल की सगाई में कुछ गड़बड़ी पैदा हो गई है और यह उत्सव केवल उसके और तारा के विवाह के उपलक्ष में आयोजित किया जा रहा है। तब उस पीर ने इतमीनान की साँस ली और अपनी प्रार्थना पर मन-ही-मन झूम कर उस ने फरमाया—"वह तो होनी ही थी गड़बड़। जमाल साहब को तो बड़ा धक्का लगा होगा!"

इरफान ने कहा—"पूछिये नहीं! मगर एक बात है कि अब तो मैं भी दिल से आप का क़ायल हो गया। न जाने कौन सा मन्त्र फूँका है आपने कि खुद नजमा ने ही इन्कार कर दिया।"

शरफ़ ने इरफान की गम्भीर शरारत के उत्तर में वास्तविक गम्भीरता से कहा—"अभी हुआ क्या है इरफान मियाँ! अभी तो सिर्फ मैंने वह करिश्मा दिखाया है कि 'जादू वो है जो सिर पर चढ़ कर बोले' वाली मिसाल सामने आयी है। अभी तो आप यह करिश्मा भी देखेंगे कि—

जज़्बाये दिल जो सलामत है तो इन्शा अल्लाह,
कच्चे धागे में चले आयेंगे सरकार बँधे।"

इरफान ने सूखा मुँह बना कर कहा—"वो तो है ही ! और मेरा किस्सा भी ऐसा चटपट तय हुआ कि क्या अर्ज़ करूँ !"

शरफ़ ने कहा—"तुम ने क्या मेरी कम दुवायें हासिल की हैं ! तुम्हारी कसम, अपनी अठोर तपस्याओं मे न जाने कितनी बार तुम्हारा ध्यान कर चुका हूं। अगर मौलवी अब्दुल अहद या मौलवी अब्दुल समद साहब यह चाहते भी कि तारा की शादी तुम से न करें, तो भी कामयाब न होते।"

इरफान ने कहा—"बेशक-बेशक ! बल्कि मुझे तो यहाँ तक मालूम हुआ है कि तारा के वालिद और उसके चचा दोनों शुरू-शुरू में राज़ी न थे। आख़िरी दिन जब तारीख तय हो रही थी उस वक्त भी बड़ी बहस हुई है।"

शरफ़ ने कुछ सोचते हुये पूछा—"यह किस दिन का ज़िक्र है ?"

इरफान ने कहा—"पिछले जुमे का ज़िक्र है।"

शरफ़ ने कहा—"पिछले जुमे का न ! ठीक है, ठीक है। इरफान मियाँ ! उस दिन मुझे ऐसा मालूम हो रहा था, गोया मैं उस पहलवान की तरह पसीने से लथ-पथ हूँ जो कुश्ती लड़ने के बाद चूर-चूर हो जाता है। मुझ पर ज़िन्दगी में ऐसा सख्त वक्त और कभी नहीं गुजरा।"

इरफान ने हँसी पर बड़ी कठिनाई से नियंत्रण पाते हुये कहा—"चुनाचे वाक़ई आपने अपनी बदकिस्मती से कुश्ती लड़कर उसे चित कर दिया और आप ही क़ामयाब रहे।"

शरफ़ ने आँखें मूँद कर कहा—"यह सब उस की देन है। इला-ल्लाह... ।"

इरफान ने भी सच्चे भक्त की नाईं नमन किया और उस स्थिति पर पहुँच गया कि मूर्खों पर दया करनी ही चाहिये। अर्थात यहाँ तो यह दशा थी कि हमारी बिल्ली और हमी से म्याऊँ! इरफान ही की बताई हुई तरकीब यानी यह सब ढोंग उसी के राय देने पर शरफ़ ने रचा था, और अब उसी पर टोने-टोटकों का सिक्का जमाया जा रहा था। परंतु इरफान की गम्भीरता या गम्भीरता का अभिनय भी देखने योग्य था। क्या मजाल जो चेहरे पर हँसी का कोई चिन्ह प्रगट हो। उस ने उसी गम्भीरता से कहा—"मगर एक बात से मैं आप को भी आगाह किये देता हूँ कि आप खुद बहुत जल्द, बहुत सख्त झमेले में फँसने वाले हैं!"

शरफ़ ने चौंक कर कहा—"यानी वह क्या?"

इरफान ने कहा—"किस्सा दरअसल यह है कि नजमा तो खैर, आप की है ही और आप की हो कर रहेगी, लेकिन बेचारी रज़िया का खून मुफ्त में हो रहा है।"

शरफ़ ने हैरानी से कहा—"रज़िया का खून? यानी वही रज़िया न जो नजमा और तारा की सहेली नाहिद के अलावा एक दूसरी लड़की है। बड़ी-बड़ी आँखों वाली और लम्बे बालों वाली!"

इरफान बोला—"जी हाँ, वही। उस गरीब का खुदा ही मालिक है।"

शरफ़ ने इरफान के निकट आते हुये कहा—"क्यों, आखिर बात क्या है? आखिर मुझे समझाओ तो सही!"

इरफान ने शरारत से कहा—"बस, अब रहने भी दीजिये। कम से कम मुझ से आप को इस तरह नहीं छुपाना चाहिये था। और हद यह है कि इस वक्त भी आप कैसे अन्जान बन रहे हैं!"

शरफ़ ने इरफान का हाथ पकड़ कर कहा—"भई, तुम्हारी ही कसम जो मुझे कुछ भी मालूम हो! आखिर बात क्या है?"

इरफान ने कहा—"ताज्जुब है कि इतनी बड़ी बात और आप को खबर तक नहीं ! सब तो यही समझ रहे थे कि आप सिर्फ सब कुछ ही नहीं जानते ; बल्कि एक हद तक आप से सब को यह शिकायत थी कि आप उस बेचारी से ऐसा रूखा बर्ताव क्यों कर रहे है ! वह तो केवल आपके लिये दुनियाँ की हर चीज़ छोड़ने को तैयार है ; बल्कि यह कहिये की छोड़ चुकी है। उस की शादी एक बहुत अच्छी जगह ठहर रही थी, लेकिन उस ने यह कह कर इन्कार कर दिया कि शरफ़ साहब मेरे नहीं होते तो ना सही—मगर मैं उन के सिवाय किसी और की नहीं हो सकती !"

शरफ़ ने आँखें फाड़ कर कहा—"भई, कमाल है ! यानी मेरे फरिश्तों को भी इल्म नहीं। इतना तो मैंने भी अन्दाज़ा किया था कि वह मेरी तरफ देखती बहुत थी, लेकिन मैंने इस बात को कभी अहमियत नहीं दी।"

इरफान ने कहा—"कल जब मैं उस के यहाँ गया तो विचित्र दृश्य था। अपनी फुलवारी के एक कोने में वह अपना वायलिन लिये बैठी थी, बाल खुले हुए थे, आँखें कुछ भिगी हुई थीं और बिल्कुल एक जोगन बनी हुई कोई गज़ल गा रहीं थी जिस का मैं सिर्फ यह शेर सुन सका—

जिसे दर्दे-दिल की खबर भी नहीं है,
वही दर्दे-दिल की दवा जानता है।"

शरफ़ ने ध्यान से सुन कर कहा —"क्या...? क्या...? क्या...? ज़रा फिर पढ़ना !"

इरफान ने फिर अवरुद्ध कंठ से कहा—"जिसे दर्दे दिल की खबर भी नहीं है, वही दर्दे-दिल की दवा जानता है।"

शरफ़ ने झूम कर कहा—"भई, शेर है अच्छा ! मगर खुदा का

कसम, मुझे रज़िया के बारे में इस बात का वहम भी न था। अच्छा, तो फिर क्या हुआ ?"

इरफान ने कहा—"होता क्या ? बस, अब वह है और आप का ख्याल है। उस दिन उस ने सुना कि आप के यहाँ कव्वाली की महफिल है। सब ने चाहा कि वह भी आये मगर उस ने यह कह टाल दिया कि जब मुझ से छिपा कर आप सब को बुलाया गया है तो मैं क्यों जाऊँ, और ऐसी जगह मैं जा भी कैसे सकती हूँ जहाँ के ख्याल से ही मेरी आँखों में आँसू आने लगते हैं।"

शरफ ने चौंधिया कर कहा—"अरे भई, यह तुम ने क्या किस्सा सुना दिया ! मुझे तो ऐसा मालूम हो रहा है, जैसे मैं कोई सपना देख रहा हूँ और यह सब कुछ तुम सपने में ही कह रहे हो। खैर, अब सवाल यह है आखिर, मैं क्या करूँ। एक तरफ नजमा का ख्याल है और दूसरी तरफ अब तुमने यह नया गुल खिला दिया !"

इरफान ने कहा—"मैंने गुल खिलाया है या खुद आप का खिलाया हुआ गुल रज़िया गरीब के लिये काँटे बो रहा है !"

शरफ़ ने कहा—"तो फिर मुझे बताओ, मैं क्या करूँ ? मैं तुम्हारी बताई तरकीबों पर हमेशा चलता हूँ ?"

इरफान ने कहा—"मेरी एक राय है। और वह यह है कि आप अपना मौजूदा हुलिया हरगिज़ न बदलें। बिल्कुल इसी भेस को बनाये रहें। इसलिये कि अगर रज़िया को आप की तरफ से कोई चीज़ अलग कर सकती है तो वह है आपका मौजूदा हुलिया। आपकी इस दाढ़ी, इस लिबास, इस मुँडे हुये सिर और इन सुरमई आँखों से वह खुश नहीं है। अगर आपका कहीं वह पोशाक या हुलिया होता जो कुछ दिन पहले था, तो वह अब तक कभी की आप के कदमों पर गिर कर मुहब्बत की भीख माँग चुकी होती।"

शरफ़ ने कुछ सोचते हुए कहा—"यह तो ठीक है, लेकिन मुहब्बत हुलिये-पोशाक को कब देखती है ?"

इरफान ने कहा—"अब जुमे के दिन आप का और उसका शायद सामना हो जाय, वर्ना हफ्ते (शनिवार) के दिन मैं सब दोस्तों को लंच पर और इसके बाद शाम को सिर्फ अपनी इस जमायत को चाय पर दावत दे रहा हूँ। उस वक्त जरूर आपका उससे सामना होगा। आप खुद अन्दाज़ा कर लीजियेगा कि रज़िया की खामोश निगाहें आप से क्या कहती हैं। आप कुछ कहियेगा नहीं, सिर्फ अन्दाज़ा करते रहियेगा !"

शरफ़ ने कहा—"यह भी तुमने अजीब बात सुनाई। मेरी तो अक्ल हैरान है कि आखिर, यह माजरा क्या है !"

इरफान ने कहा—"इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है। बात यह है कि एक आकर्षण तो आप में यकीनन है। आप ने अन्दाज़ा किया होगा कि मैबुल भी लोट-पोट हो गई थी। वो तो समझिये, खैरियत यह हुई आप ने फौरन ही यह हुलिया अपना लिया वर्ना अब तक हालात न जाने क्या से क्या हो चुके होते !"

शरफ़ इस समय अत्यन्त गम्भीर बना हुआ था और न जाने किन विचारों में खोया हुआ था। इरफान को मालूम था कि शरफ़ किस विचार में उलझा आ है। इसलिए उसने यही उचित समझा कि इन हजरत को इसी उधेड़-बुन में व्यस्त छोड़ कर प्रस्थान किया जायें ताकि यह स्वयं ही सुगमता पूर्वक उस परिणाम पर पहुँच जायें जिस पर वह पहुँचाना चाहता था। अतएव उसने इन पीर साहब से विदा लते हुए शादी, लंच और टी-पार्टी में पधारने के लिए वचन लिया और चलता बना।

बीस

***

तारा और इरफान की शादी वास्तव में धूम-धड़ल्ले से नहीं हुई। न बाजा न गाजा, न अन्दर डुमनियाँ न बाहर भाँड़ ! सादगी के साथ विवाह हुआ और छुहारे उछल गये।

इस शादी से भी अधिक ध्यान देने वाली बात तो यह थी कि शरफ़ साहब की दाढ़ी गायब थी, तहमद के स्थान पर चूड़ीदार पायजामा था। लम्बे कुर्ते के स्थान पर शेरवानी थी। हाँ, मुँड़े हुये सिर पर वह विवश थे। अतः उन्होंने सिर पर एक लम्बा रेशमी रूमाल लपेटा हुआ था और सिगरेट पी रहे थे। अचानक इस परिवर्तन पर इरफान के अतिरिक्त सभी को आश्चर्य था। किन्तु इरफान ने चुपके से जमाल को सारी घटना बता दी और यह भी कह दिया कि इनका दिल रज़िया की तरफ उछाला जा चुका है।

जमाल द्वारा यह समाचार शीघ्र से शीघ्र नजमा और मैबुल से गुजर कर तारा तक पहुँच गया और अन्त में यही तय हुआ है कि इरफान ने जो ख़तरनाक खेल खेला है उसके लिए रज़िया को पहले से सतर्क कर दिया जाय, अन्यथा संभव है कि रज़िया बुरा मान जाय। चुनाचे बाहर तो शादी के पश्चात लोग भोजन करने में संलग्न थे। अन्दर भी कान पड़ी आवाज़ सुनाई न देती थी, किन्तु दुल्हन के कमरे की इजाजत किसी को न थी; ताकि वह स्वच्छदन्ता पूर्वक उठ-बैठ सके।

इस कमरे में मैबुल, डैनियल, रज़िया, नाहिद और नजमा के

अतिरिक्त कोई अन्य दुल्हन का साज-शृंगार करने वाला न था। मैबुल ने हँसी से लोट-पोट होते हुए कहा—"तारा ! यह तुम्हारा साहब बड़ा ही नटखट है। मैं जो इसे सदैव Naughty boy (शरारती लड़का) कहा करती हूँ, वह कुछ ग़लत थोड़ा ही कहती हूँ।"

नजमा ने हँस कर कहा—"सचमुच, यह तो हद ही है शरारत की ! लेकिन कहीं ऐसा न हो कि हमारी 'रजू' बुरा मान जाय।"

रज़िया ने जो दुल्हन के हारों से खेल रही थी, चौंक कर कहा—"क्या मेरा उपनाम है रजू ? यानी यह मेरा ज़िक्र था !"

नजमा ने कहा—"जी हाँ, गुस्ताखी तो हुई कि बिना लाइसेंस लिए आप का शुभ उपनाम हमारे मुँह से निकल गया।"

मैबुल ने कहा—"अरे, छोड़ो इस शरारत को ! इस बेचारी को बता दो कि इरफान ने क्या हरकत की है।"

रजिया ने भौंचक्का होकर कहा—"क्या ? भई, बताओ न !"

नजमा ने उसे समझाते हुए कहा—"शरफ़ को जानती हो न ? वही हमारा बेवकूफ रिश्तेदार।"

रज़िया ने कहा—"वही, तुम्हारा अक्लमंद उम्मीदवार !"

नजमा ने कहा—हाँ-हाँ, वही गधा। उसको पहले तो इरफान ने यह बताया कि नजमा को जमाल से इसलिये नफरत है कि वह अँग्रेजी वेश-भूषा में रहता है। नजमा ठहरी एक मज़हबी किस्म की लड़की ! वह तो किसी मज़हबी किस्म के आदमी की तरफ खिंच सकती है। नतीजा यह हुआ कि इरफान ने उस गरीब का सिर तक मुँड़वा दिया, दाढ़ी बढ़वा दी, यहाँ तक कि शरफ़ झाड़-फूँक करने लगा। अब इरफान साहब ने उसकी शादी के सिलसिले में यह हरकत की है कि उसको समझा दिया कि रज़िया आपके लिए मरी जा रही है।"

रजिया ने गड़बड़ा कर कहा—"कौन है.....! अल्लाह न करे कि मेरा घोड़े पर दम न निकले।"

मबुल ने कहा—"सुनो तो सही ! बड़े मज़े की बात है।"

रज़िया कुछ कहना चाहती थी कि नजमा ने उसे चुप कर कहना आरम्भ किया, "तो इरफान ने शरफ़ को खूब अच्छी तरह यकीन दिलाया कि 'नजमा तो खैर, आपकी है ही; मगर रज़िया ग़रीब का खून मुफ्त में हुआ।' वह खद हैरान था कि यह क्या किस्सा है। लेकिन इरफान को तो तुम जानती ही हो कि किस बला का चतुर है। उसने शरफ़ साहब को हर तरह का यकीन दिलाया कि—रज़िया वाक़ई मरी जा रही है। ग़नीमत यही है कि आपने यह पीरों जैसा हुलिया बना रखा है, जिससे रज़िया की तबियत मेल नहीं खाती। आप इस हुलिया को हरगिज़ नहीं छोड़ियेगा, वर्ना वह ग़रीब तो कहीं की भी नहीं रहेगी।"

रज़िया ने घबराकर कहा—"हाय अल्लाह, बड़े शरीर हैं इरफान भाई ! मुझे मिल तो जायें....."

मैंबुल ने कहा—"अरी, सुन तो सही.....!"

रज़िया ने कहा—'तो भई, इसका नतीज़ा यह हुआ कि उस बेवकूफ ने दाढ़ी मुँड़वा दी।"

तारा से अब न रहा गया—"मुँड़वा दी दाढ़ी ?"

रज़िया ने कहा—"तहमद की जगह चूड़ीदार पायजामा है, लम्बे कुर्त की जगह शेरवानी। अलबत्ता, सिर मुँड़ा हुआ है। इससे बेचारा मजबूर था। लिहाज़ा, लम्बा रूमाल सिर पर लपेट लिया है और सिगरेट पी रहा है।"

तारा अचम्भित हो कर बोली—"तोबा है !"

रज़िया ने मुँह बिचका कर कहा—"बड़ी आयी तोबा वाली ! यह तुम्हारे दूल्हा शरीफ़ ने मुझे बेकार क्यों निशाना बनाया है !"

नजमा ने कहा—"मगर, कमाल यह है कि यह शरफ़ इरफान के इशारों पर नाचता खूब है।"

रज़िया बोली—"मुझे यह तो बताओ, अब होगा क्या ?"

तारा ने कहा—"तुम तो बावली हो ।"

नजमा कहने लगी—"होगा यह कि अब शरफ़ को और भी बेवकूफ बनाया जायेगा । तुम बस, चुप रहना और चुपके-चुपके सब तमाशा देखना । मज़ा तो कल आयेगा टी-पार्टी में, जब हम साथ होंगे ।"

रज़िया ने कहा—"न बहन, अब मैं टी-पार्टी में नहीं जा सकती ।"

नाहिद बोली—"चल हट ! हाय अफसोस, इरफान भाई ने भी किस गधी का नाम लिया है । मैं न हुई—शरफ़ को ऐसा बेवकूफ बनाती कि वह भी याद करता ।"

रज़िया ने हाथ जोड़कर कहा—"तो मेरी इस बीमारी को बहन तुम लेलो ! मैं गधी बनना मंजूर करती हूँ, लेकिन शरफ़ के साथ इस मज़ाक में भी सम्मिलित होना सहन नहीं करूँगी ।"

नजमा ने कहा—"तुम कैसी बच्चों जैसी बातें कर रही हो ? तुमको इस शरारत में कोई खास हिस्सा थोड़ा ही लेना है । बस, तुम खामोशी से तमाशा देखती रहो ।"

तारा ने कहा—"भई, मेरा दिल तो चाहता है कि किसी तरह मैं भी शरफ़ का हुलिया देख लेती ।"

मैबुल ने कहा—"यह कौन सी मुश्किल बात है ! इस खिड़की से सब कुछ देखा जा सकता है । सामने ही तो सब बैठे हैं ।"

तारा ने कहा—"पहले यह दरवाजा बंद कर दो ताकि कोई इस तरफ से न आ जाय ।"

नाहिद ने दौड़ कर दरवाजा बंद कर दिया और यह सब लड़कियाँ समूह के रूप में खिड़की के चारों तरफ जमा हो गयीं । खिड़की के सामने ही मर्दाना जमघट था । लोग खाने-पीने पर बैठ चुके थे। दूल्हे के एक ओर जमाल बैठा था और दूसरी तरफ वह सज्जन विराजमान

थे जिनसे नाहिद की मंगनी तय हो चुकी थी। जमाल की बगल में ही शरफ साहब विद्यमान थे और छुरी और काँटे को हाथ में लिये हुए उसके प्रयोग की विधि पर ध्यान दे रहे थे। यह लड़कियाँ एक-एक कर इस दृश्य को देखती थीं और हँसी के मारे लोट-पोट हुई जा रही थीं। आज तो नजमा का गाम्भीर्य भी समाप्त हो चला था और वह उन्मुक्त हो खिलखिला रही थी। अन्त में नाहिद ने तारा से कहा—'यह तुम किधर देख रही हो? आयी तो थी शरफ़ साहब को देखने, अब घूर रही हो इरफान भाई को!"

तारा ने कहा—"जी नहीं, बल्कि मैं आपके होने वाले पति को देख रही हूँ और गौर कर रही हूँ कि यह किस चक्की का पिसा खाते हैं।

नाहिद ने कहा—"बहन, मुझे तुम लोगों की तरह दुबले-पतले और मुरदार मर्द पसन्द नहीं! देखो, कैसा पहाड़ का पहाड़ बैठा हुआ है। मेरा होने वाला पति ऐसा मालूम होता है जैसे अब्बुल अहबन का वली अहद बहादुर (उत्तराधिकारी) बैठा हुआ है।

नजमा ने हँसते हुये नाहिद की पीठ पर एक घूँसा मार कर कहा—"सचमुच, तू बड़ी बेशर्म है। यह अपने मंगेतर के बारे में चर्चा की जा रही है!"

मैबुल ने कहा—"मेरा तो दम निकला जा रहा है शरफ़ को देख-देख कर। ऐसी सूरत का एक आदमी एक बार मेरे पास आकर कह रहा था कि कन्नौज का इत्र खरीद लो।"

तारा ने कहा—"ना बहन, ऐसा न कहो! रजिया बुरा मान जायेगी।"

रजिया ने कहा—"खाक थोड़ी सी। मुर्दे पर फिटकार तो देखो, कैसी बरस रही है। जहन्नुम में जाये!"

नाहिद ने कहा—"कुछ भी हो, मगर प्रेमी तो सूरत से ही मालूम पड़ रहा है।"

नजमा ने कहा—"कुछ भी हो, यह ग़रीब भूखा ज़रूर रह जायेगा। कभी इस हाथ में छूरी पकड़ता है कभी उस में।"

मैबुल ने कहा—"देखो-देखो ! इरफ़ान ने उसके हाथ से छुरी काँटा छीन लिया।"

रज़िया ने कहा—"बेकार छीना। मरने देते भूखा।"

तारा बोली—"नहीं ! हमारे यहाँ खिला-पिला कर कुर्बानी होती है।"

यह लड़कियाँ यह बातें कर रही थीं कि दरवाज़ा बाहर से खट-खटाया गया। और सब से पहले तारा लपक कर, दुल्हन बन कर और अपने फूल समेट कर बैठ गयी। तत्पश्चात जब नाहिद ने द्वार खोला तो इरफ़ान की खाला यानी तारा की सास ने कहा—"भई, अगर इजाज़त दो तो हम भी अपनी बहू का मुँह देख लें ?"

मैबुल ने कहा—"ठहर जाइये। पहले हम आप की बहू की सास को देख लें।"

खाला ने कहा—"चलो हटो ! अब यह लड़कियाँ मुझ से भी हँसी करने लगीं। बेटा, अब मुझे क्या देखोगी। मैं तो बस, इसी दिन के सहारे जी रही थी कि इरफ़ान की चांद सी दुल्हन घर में लाऊँ और इस के सिवाय मुझे ज़िन्दगी की कोई तमन्ना न थी। अल्लाह का शुक्र है कि उस ने मेरी सुन ली।"

नजमा ने कहा—"ख़ाला, आप तो ऐसे कह रही हैं, जैसे तारा को आप ने कभी देखा ही नहीं !"

खाला ने आगे बढ़ कर कहा—बेटा, मैंने तारा को देखा तो हमेशा है मगर आज अपने इरफ़ान की दुल्हन बने देखने आयी हूँ।"

यह कह कर तारा का घूँघट उलट कर उन्होंने उसकी बलायें लेलीं।

नजमा और मैबुल ने देखा कि उस समय बड़ी बी की आँखों में आँसू थे और न जानें किन विचारों नें उन में ऐसी हलचल पैदा कर दी थी कि वह वहाँ अधिक देर तक न ठहर पायीं। तारा और इरफान को आशीष देती हुई वे रवाना हो गयीं। परन्तु अब इस गोष्ठी में बेतकल्लुफी पैदा होनी इसलिये सम्भव न थी कि खानें का प्रबन्ध होना आरम्भ हो चुका था। दूसरे, अतिथि बराबर दुल्हन के पास आ-जा रहे थे और इस शान्तिमय भाग में भी वही चीख-पुकार पैदा होने लगी जो अब तक गृह के शेष भाग में विद्यमान थी। आखिर, खानें के लिये थोड़ी सी शान्ति हुई। परन्तु भोजन के बाद ही विदाई के प्रबन्ध होने लगे। बहुत सी स्त्रियों का आग्रह था कि रस्मों के लिए दूल्हे को अन्दर बुलाया जाय, परन्तु दूल्हे को केवल 'सलाम कराई' के लिये भेजा गया। अतः वह हज़ार रुपया थोड़ी सी देर में बटोर कर चले गये, और उन के जाने के पश्चात ही तारा को भी विदा कर पालकी में बैठा दिया गया। किन्तु इस विदाई के समय लेश मात्र भी रोना-धोना नहीं हुआ, जो कि लड़की के विवाह में अवश्य होना चाहिये।

इक्कीस

****

विवाह के दूसरे दिन इरफान की ओर से जो 'लंच' था उसे उर्दू में 'दावते-वलीमा' कहते हैं। इस शुभ अवसर पर मर्दाना और ज़नाना महफिलें अलग-अलग थीं। इसलिये कि वहाँ पर केवल सम्बन्धी ही नहीं मित्रगण भी निमंत्रित थे। बाहर लगभग सब वही लोग थे, जो विवाह के अवसर पर नज़र आ रहे थे। खैर, और सब से क्या लेना ; शरफ़ साहब भी उपस्थित थे। और आज फिर बने-सँवरे, दाढ़ी की एक-एक खूँट निकाली गई थी। चेहरा दर्पण की नाईं दमक रहा था। हाँ, मुँड़े हुये सिर के कारण उनका भेष कुछ बेनुक़ा सा था। आज पता नहीं किस मसखरे ने आप को मशविरा दिया था कि रेशमी रूमाल के स्थान पर जैपुरी पगड़ी बाँध कर तशरीफ लाये थे।

अतः उन्हें देखते ही जमाल ने इरफान से पूछा—"क्या गाने का इन्तज़ाम भी है ?"

इरफान समझ तो गया, लेकिन उसने शरफ़ को समझाने के लिये पूछा—"नहीं तो ! क्यों ? तुम्हें यह शंका कैसे हुई ?"

जमाल ने निश्चिंत हो कर कहा—"कुछ नहीं। मुझे साजिन्दे का शुबहा हुआ था।"

शरफ़ ने इरफान को हँसता हुआ देख कर समझ लिया कि यह छींटा उस पर मारा गया है। जल कर बोला—"जी हाँ, आप को तो अब साजिन्दे नज़र आयेंगे ही। जो दुनिया की आँखों में बसी हुई है

बल्कि.....बल्कि.....मुझे यह कहना चाहिये कि बिल्ली को ख्वाब में भी छींछड़े नज़र आते हैं।"

जमाल ने ज़रा सा झुक कर कहा—"मुझे बिल्ली बनना मन्जूर है, जनाब छींछड़े साहब !"

इरफान ने कहा—"गोया आप इस वक्त लंच में इस ग़रीब को खाना चाहते हैं ! यह ग़लत है। शरफ़ भाई, तुम इधर मेरे पास बैठो ! वहाँ जमाल से तुम्हें ख़तरा है।"

शरफ़ क्रोधित हो, बोला—"आप अपने घर पर बुला कर ज़लील कराना चाहते हैं। गोया आप के लिये यह कोई बात ही नहीं हुई है कि मुझे साज़िन्दा तक कह दिया गया है।"

जमाल ने उसके निकट आते हुये कहा—"यानी आप बुरा मान गये ! लाहौल-विला-क़ुव्वत ! क्यों टूटे हुये दिल को तोड़ते हो शरफ़ भाई ! अगर तुम्हें यह बात बुरी लगी है तो हमें भी पचास बार साज़िन्दा कह दो। मगर खुदा के लिये ख़फा न हो।"

शरफ़ ने उसी प्रकार कुपित हो कर कहा—"जी हाँ, मैं बराबर यह अन्दाज़ा कर रहा हूँ कि आप मुझे बेहद ज़लील समझते हैं। अरे भई, जब हम तुम्हारे कोट-पतलून को अँग्रेज़ों का दान नहीं कहते तो तुम....."

इरफान ने एक ऊँचा कहकहा लगाकर कहा—"बहुत खूब, बहुत खूब ! भई, आज शरफ़ भी कह गये कि अँग्रेज़ों का दान ! ऐसा कहा है कि धोये न छूटे।"

जमाल ने भी कहा—"शरफ़ भई ! खुदा बुरी नज़र से बचाये। बहुत अच्छी कही ! अब आप कभी-कभी ज़रूर ख़फा हो लिया कीजिये, मगर राज़ी भी हो जाया कीजिये।"

शरफ़ ने मज़ा किरकिरा करते हुये कहा—'अँग्रेज़ों का दान तो है ही। और यह जो पगड़ी है जनाब ! इसको हमारे बुज़ुर्ग खास-खास मौकों पर बाँधा करते थे।"

जमाल ने कहा—"यही, शादी-ब्याह के मौकों पर न ?"

शरफ़ ने कहा—"जी हाँ, हर खास मौकों पर।"

जमाल ने कहा—"जब कभी भी मुजरे (नाच-गाने) की ज़रूरत पेश आ जाये !

शरफ़ ने कहा—"फिर वही ! भई, सख्त बेग़ैरत हो।"

यह कह कर शरफ़ साहब खुद हँस दिये और इरफान ने भी इस हँसी की दाद देते हुये शरफ़ को गले से लगा लिया। कहने लगा—"क्या कहने शरफ़ भाई ! बड़ा उदार दिल है तुम्हारा। मैं तो हरगिज़ इतनी जल्दी माफ न करता।"

किन्तु शरफ़ अब भी हँसते ही चले जा रहे थे। इस तरफ तो यह जमाव था और उधर घर के अन्दर औरतों की खच-पच से गुजर कर कमरे में जहाँ दुल्हन थी, एक दूसरी कान्फ्रेन्स बन्द कमरे में इस तरह हो रही थी जैसे कान्फ्रेंन्स की "सबजैक्ट कमेटी" की गुप्त सभा हो रही हो ताकि प्रेस वाले कोई सुनी-अनसुनी न ले उड़ें।

तारा इस समय दुल्हन के उन कीमती लाल वस्त्रों में सुसज्जित नहीं थी जिनमें अच्छी-खासी औरत बगची नज़र आती थी या इन्सानी कद की बीर-बहूटी। वह फालसी रंग की कीमती साड़ी पहने, सिर के बालों में उसी रंग का फीता बाँधे, हल्के-हल्के जेवर पहने और कलाई पर वह घड़ी बाँधे बैठी थी जो उसे इरफान ने पहली भेंट-स्वरूप दी थी।

मैबुल, डैनियल, नजमा और रज़िया उसे घेरे हुई थीं। मैबुल ने घड़ी देखते हुये कहा—"देखा इस नाटी ब्वाय को ! इस ने घड़ी सिर्फ

इसलिये दी है कि उसकी जुदाई की घड़ियाँ गिनती रहा करे।"

नजमा ने हैरत से कहा—"अब तो मैबुल, तुम मुहावरेदार मज़ाक करने लगी हो!"

नाहिद ने मैबुल से कहा—"सलाम करो जल्दी से! उस्ताद तारीफ कर रहे हैं।"

नजमा ने कहा—"नहीं, वाकई ग़ौर तो करो, यह कमबख्त कितनी अच्छी उर्दू बोलने लगी है! और और धीरे-धीरे भाषा पर कितना अधिकार पाती जा रही है!"

नाहिद ने मैबुल से फिर कहा—"हाथ जोड़ कर कहो कि—सब आप की संगति का असर है, वर्ना मैं किस काबिल हूँ!"

नजमा ने नाहिद से सम्बोधित हो कहा—"अच्छा, तो गोया आप मुझे बनाने की कोशिश फरमा रही हैं?"

नाहिद ने कहा—"जी हाँ, और आपके इन शब्दों ने मुझे अपनी कोशिश में कामयाब भी कर दिया है। मगर एक बात है कि शादी के बाद तारा बहुत रंजीदा हो गई है।"

रज़िया ने गंभीरता से कहा—"बात यह है कि अब हम लोग इन के सामने की लड़कियाँ हैं। हमारे सामने यह क्यों बोलें?"

मैबुल बोली—"दूसरे, यह भी है कि जिस से इन का पाला पड़ा है उससे यह तेज़ी और शरारत में तो बाज़ी ले नहीं सकती; अलबत्ता, अपनी गम्भीरता से ही रुआब जमाने की कोशिश करेंगी।"

नजमा कहने लगी—"मगर हम लोगों का क्या कसूर है जो हम ग़रीबों पर रुआब जमाया जा रहा है!"

तारा ने कहना आरम्भ किया—"यानी आप भी कह रही हैं! जो कि गाम्भीर्य और बुढ़ापे का भंडार है।"

रज़िया ने कहा—"तब तो तुम्हारा गाम्भीर्य और भी पक्की तरह साबित हो गया।"

तारा ने रज़िया से कहा—"तू तो ज़रा ठहर जा, शाम को पता चलेगा। जब वह तेरा जान लेवा आशिके-नाशाद भी सामने होगा। उस वक्त पूछूँगी तेरा मिजाजे शरीफ !"

डैनियल इस प्रकार मौन बैठी थी जैसे ऊँघ रही हो। नाहिद ने उस पर अपने वाक् प्रहारों द्वारा आक्रमण किया, "ज़रा इन्हें भी देखिये ! जागी है रात भर तारा, ऊँघ रही हैं आप !"

डैनियल प्रत्युत्तर में बोली—"तारे का काम ही जागना है और जब तारा निकल आये तो हमें ऊँघना ही चाहिये।"

नजमा कहने लगी—"सुन लिया ! शेर कह गयी हैं शेर !"

रज़िया ने कहा—"ऐ सुबहान अल्लाह, मुकर्रर इर्शाद !"

नाहिद ने कहा—"नहीं, वाकई बहुत अच्छी बात कही है। बात कभी-कभी करती हैं, मगर जब कभी करती हैं तो ऐसी ही वज़नी।"

तारा ने कहा—"नाहिद को तो जब से अपना वज़नी मंगेतर नज़र आया है, हर बात में तराज़ू-बाट ले कर दौड़ती है।"

मैबुल बोली—"और हाँ, इस की शरारत देखी तुम ने नजमा ! इस डैनियल की बच्ची ने कल तारा को क्या उपहार दिया था !"

नजमा ने कहा—"नहीं। मैं तो ऐसी गड़बड़ में फँसी कि किसी का भी उपहार नहीं देख सकी। क्या दिया है इसने ?"

मैबुल ने हँसते हुये कहा—"प्रैम्बुलेटर। (बच्चागाड़ी) है।

रज़िया ने क़हक़हा लगा कर कहा—"बहुत खूब, बहुत ही अच्छी चीज़। सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ने का सामान !"

डैनियल ने कहा—"कुछ दिनों बाद आखिर बच्चा-गाड़ी ख़रीदनी ही पड़ती है। मैंने कहा, लाओ अभी से देदो।"

नाहिद ने कहा—"और मैबुल, तुमने क्या दिया है ?"

डैनियल बोली—"बिजली की इस्त्री।"

रज़िया कहने लगी—"ताकि मियाँ के चेहरे की सलवटें ठीक करती रहें।"

मैबुल ने कहा—"उसके चेहरे पर सलवटें पड़ती ही नहीं। वह तो चिकना घड़ा है। रज़िया! तुमने क्या चीज़ दी थी दुपट्टे में बंद कर के?"

नाहिद ने कहा—"इयर-रिंग थे। मैंने तो एक अँगूठी दी है जिस पर एक तारा बना है। और उस के अंदर लिखा है इरफ़ान।"

डैनियल ने कहा—"नजमा का उपहार सब से अनोखा होगा। तुमने क्या दिया था, नजमा?"

नजमा ने कहा—"मेरे पास तारा की एक तस्वीर थी जब यह तीन साल की थी, बैठी हुई दूध पी रही थी कि बिल्ली ने प्याली में मुँह डाल कर जो कहा-'फू' तो सारा दूध उड़ कर इस के मुँह पर गिरा। *जमाल भाई ने उसी वक्त यह तस्वीर खींच ली थी। मैंने उसी तस्वीर* का 'एनलार्जमेंट' एक सुनहरे फ्रेम में दिया है।"

मैबुल ने कहा—"और फिर कहती है—मैं अँग्रेज़ नहीं हूँ! ख़ालिस अँग्रेज़ों की किस्म का तोहफ़ा है यह!"

रज़िया ने कहा—"मालूम नहीं, जमाल भाई ने अपनी चहेती बहन को क्या उपहार दिया!"

नजमा ने कहा—"उन का तोहफ़ा सब से ज़्यादा प्यारा और निहायत जज़बाती है। उन्होंने अपने पहले मुक़द्दमे के मेहनताना का चैक इस के नाम 'इन्डोर्स' कर दिया है। और शरफ़ ने जो कुछ दिया है उस का तो जवाब ही नहीं!"

सब के सब नजमा को उत्सुक दृष्टि से देखने लगे। आख़िर, ख़ुद तारा ने पूछा—"अब बता भी दो किसी तरह!"

नजमा ने हँसते हुये कहा—"तलसमे-हो-शरबा (धार्मिक पुस्तकों)

का मुकम्मिल दफ्तर !"

नाहिद ने कहा—"इस में हँसने की कौन सी बात है ? आदमी है समझदार ! उसने सोचा होगा—जब पति बाहर सैर-सपाटे में रहें तो नयी-नवेली-दुल्हन सिर्फ इसी तरह वक्त काट सकती है कि 'तलसमे-हो-शरबा' पढ़ा करे।"

यह लोग इन्हीं बातों में निमग्न थे कि बंद कमरे का द्वार खट-खटाया गया। आखिर, सब संभल कर और सब से ज्यादा तारा संभल कर बैठ गयी, तो नाहिद ने द्वार खोल दिया। इरफान की खाला ने कमरे में प्रवेश करते हुये कहा—"भई, तुम लोग इजाजत दो तो एक रस्म होती है मुँह दिखाई की ; वह शुरू कर दी जाय !"

मैंबुल ने कहा—"खाला यह तो फायदे की बात है जरूर शुरू कीजिये।"

इरफान की खाला ने अतिथियों को इस तरफ बुला लिया और स्वयं दुल्हन के पास बैठ गयी। एक-एक स्त्री आती, मुँह उठा कर दुल्हन को देखती और अपनी हैसियत के अनुसार कोई नक़द और कोई जेवर दे कर उठ जाती। थोड़ी ही देर में तारा के सामने रुपयों और जेवरों के ढेर लग गये और अन्त में एक घंटे के बाद जब यह रस्म समाप्त हुई तो इरफान की खाला ने एक-एक जेवर नजमा के हवाले किया और रुपये भी बटोर कर उसे देते हुये कहा—"लो बेटी, यह तिजोरी की कुंजी है। फिलहाल, सब यूँ ही रख दो ! फिर देखा जायेगा ! अब खाने में आखिर, कहाँ तक देर की जाय ! एक बजने को है।"

नजमा ने उठ कर सब चीजें तिजोरी में बंद कर दी और तदोपरांत भोजन का प्रबन्ध आरम्भ हो गया। इरफान की खाला ने इन सब लड़कियों के खाने की व्यवस्था इसी कमरे में कर दी, ताकि दुल्हन भी स्वच्छन्दता से खा-पी सके।

दोपहर के बाद तक इरफान के यहाँ से अनावश्यक अतिथि विदा

हो गये। अलबत्ता, इन लड़कियों को रोक लिया गया था ताकि दूसरी बार पुनः चाय पर आने के कष्ट से बच जायें। अब शिष्टाचारों का अंत हो चला था और इरफान का टी-पार्टी से अभिप्राय भी यही था कि बेतकल्लुफी पैदा हो सके। परंतु तारा स्वाभाविक रूप से दुल्हन बनी हुयी थी।

इरफान की खाला बड़ी समझदार बृद्धा थीं। उन्हे ज्ञात था कि यह पार्टी बेतकल्लुफ दोस्तों की है जो स्वजन भी हैं। अत इन बच्चों को बेतकल्लुफी का पूरा अवसर देना चाहिये। चुनाचे उन्होने चाय का प्रबन्ध खुद अपनी कोठी के साथ वाली एक खाली कोठी के उपवन में करा दिया जिस से उनके शेष अतिथियों को इस बेतकल्लुफ गोष्ठी से बाधा न पहुँचे।

जमाल कुछ थका हुआ सा था। लिहाज़ा, वह इरफान के कमरे मे थोड़ी देर के लिए लेट गया और शरफ़ इरफान साहब से एक घंटे की आज्ञा ले कर चले गये।

अब इरफान ने अंदर से मैबुल को बुलाकर कहा—"हुजूरे सरकार! हमें मालूम है कि आप की सहेली की शादी है, मगर मैं भी तो आखिर, सहेला हूँ! हम ग़रीबों से इतना दुराव कि तीन दिन से दर्शन ही नहीं हुये आपके!"

मैबुल ने कहा—"तुम्हारी आँखों में किसी और के दर्शन की गुंजायश क्या अभी तक बाकी है?"

इरफान बोला—"अच्छा, अब बातें न बनाइये। इधर आइये मेरे साथ, ज़रा मेरा हाथ बँटाइये!"

यह कह कर वह मैबुल को साथ ले उसी कोठी में चला गया, जहाँ चाय का प्रबन्ध किया गया था और नौकर से कहता गया—"जमाल मियाँ उठ बैठें तो उन्हें भी उसी कोठी में भेज देना! अब तीन बज रहे हैं। थोड़ी देर में अंदर भी नजमा बीबी से कह देना कि सब को ले कर आयें।"

इरफान को इस नयी कोठी में किसी इन्तज़ाम की ज़रूरत न थी वहाँ प्रबन्धक पहले से ही उपस्थित थे जो हर चीज़ को सलीके से लगा रहे थे। इरफान ने जाते ही एक नौकर से कहा—"दो कुर्सियाँ इस तरफ हौज के पास डाल दो।" और खुद वहीं बैठकर सारे प्रबन्ध से अलग थलग हो, न जाने मैबुल से किस वार्ता में व्यस्त हो गया। यहाँ तक कि उसे न तो वक्त का अनुमान हुआ और न ही किसी के आने का आभास हुआ।

इस पूरी पार्टी ने आकर सहसा इन दोनों को चौंका दिया। डैनियल ने आते ही कहा—"हम लोग हाज़िर हो सकते हैं ?"

इरफान ने शीघ्रता से उठकर बनावटी रूप से अपने शरीर में लोच पैदा करते हुए कहा—"तशरीफ लाइये ! और हमारी ख़ास मेहमान साहिबा कहाँ हैं ?"

डैनियल प्रत्युत्तर में बोली—"कौन, नजमा ?"

इरफान ने कहा—"नहीं साहब। तारा! तारा !!"

तारा बेचारी कुछ झेंप सी गयी, तो नजमा ने कहा—"इरफान तुम बड़े बेशर्म हो। कम से कम यह तो सोचा होता कि तुम्हारी न सही, लेकिन तारा की एक बुजुर्ग मैं यहाँ मौजूद हूँ।"

जमाल ने कहा—"और दूसरा बुजुर्ग मैं !"

इरफ़ान बोला—"और हम सब के बुजुर्ग शरफ़ साहब।"

शरफ़ ने गोया संजीदगी से कहा—"नहीं, कोई हर्ज नहीं।"

इरफ़ान ने कहा—"देखा आपने ! इजाज़त मिल गई। अच्छा, जनाब शरफ़ साहब ! यह आप इसलिए तशरीफ ले गये थे कि लिबास-तकदीर आज़मा के आयें। ज़रा देखियेगा, जमाल भाई ! यह लाल शेरवानी न तो इन्होंने शादी वाले दिन पहनी, न ही आज लंच वाली शेरवानी ऐसी थी। आखिर, इस प्राईवेट बैठक में यह सबसे ज्यादा क़ीमती लिबास क्यों ?"

शरफ़ ने नम्रता से कहा—"क्या कीमती लिबास है! कुछ भी नहीं। सामने यही पड़ी हुई थी, मैंने कहा—लाओ, यही सही!"

जमाल बोला—"यह सिद्धान्त तो आपका हर मामले में है, लाओ यही सही।"

शरफ़ बेचारे तो खैर, इस बात का महत्त्व क्या समझते; किन्तु इरफान और तारा ने बहुत आनन्द लिया। इस समय शरफ़ साहब ऐनक भी लगाये हुय थे; यद्यपि ऐनक आप कभी नहीं लगाते। किन्तु कदाचित आप को यह भ्रम हुआ होगा कि ऐनक भी सौंदर्य में वृद्धि करने की एक वस्तु है। सुनहरी कमानी की ऐनक के अन्दर आपकी दृष्टि रज़िया को अपना केन्द्र बनाये हुई थी और वह कमबख्त मरी जा रही थी। किन्तु अन्य लड़कियों की नाईं उसे भी बेसाख्ता हँसी आ रही थी।

आखिर, इरफान ने सीधे-सीधे यह प्रश्न कर ही दिया, "शरफ़ भाई! यह आपके यकायक बदल जाने का राज समझ मे न आया। मैं आप को जिस रात अच्छा-खासा छोड़ आया था उसी के दूसरे दिन यह रंग देखा।"

जमाल कहने लगा—"दुनियाँ रंग-रँगीली बाबा, दुनियाँ रंग-रँगीली।"

शरफ़ ने कहा—"जी नहीं, यह बात नहीं है बल्कि मुझे पहले वही हुक्म था और अब यह आदेश मिला है।"

इरफान बोला—"हाँलाकि मैंने आप से इसी सिलसिले में कोई और बात भी अर्ज़ की थी।"

शरफ़ ने कहा—"मगर मैं आदेश से मजबूर था। और अब तो मुझे अपने उसी रंग में वापिस आना है जिसमे हमेशा रहता था।

जमाल ने कहा—"यह भी एक दर्जा होता है इरफान साहब! फकीर दुनियाँ को छोड़ता है और फिर दुनिया उसे छोड़ती है और

आख़िर में फ़क़ीरी भी उसे छोड़ देती है। यह बारी-बारी से अलग-अलग क़िस्म की चीज़ें हैं।"

शरफ़ ने कहा—'खैर, यह बहुत गहरी बातें हैं। इन्हें आप नहीं समझ सकते। बहरहाल, मैं अपने असली रंग में आने पर मजबूर हूँ।"

मैबुल ने कहना आरम्भ किया, "मगर हम को तो आज तक यही नहीं मालूम हो सका कि आपका असली रंग कौन सा है।"

इस बात पर एक गगनभेदी ठहाका लगाया गया और इरफ़ान ने चाय की प्याली हाथ में ले कर खड़े होते हुए कहा—"मैबुल का जामे सेहत !"

सब ने खड़े होकर एक-एक घूँट पिया।

जमाल ने कहा—"मैबुल ! काश, तुम्हें मालूम होता कि तुमने कितनी बड़ी बात कह दी है !"

इरफ़ान रज़िया की ओर सूखे मेवे बढ़ाते हुए कहा—"आप भी तो कुछ खाइये !"

रज़िया ने झेंप कर तश्तरी ले ली और इरफ़ान ने शरफ़ की तरफ देखा तो वह हजरत उसे देखकर खुद ही मुस्कराने लगे। नज़मा का इस दृश्य पर दम निकलने लगा और तारा यदि दुल्हन न होती तो वास्तव में हँसी के मारे कलाबाज़ी खा जाती। परन्तु शरफ़ ने इन में से किसी को न देखा। वह केवल रज़िया को मौन, उसकी रहस्यमयी लज्जा और उसके संकोच को देख कर गद्गद् हो रहा था। आख़िर, आप से न रहा गया और इरफ़ान से संबोधित हो आप ने कहा—"इरफ़ान साहब ! इस वक्त खुदा जाने क्यों—एक शेर किसी का याद आ गया।"

जमाल ने कहा—"इस शेर को आप पुलिस के हवाले कर सकते हैं जो इस मौके पर आपके ज़हन में उभर आया।"

इरफान ने कहा—"खैर, खैर—सुनिये तो सही वह शेर ! जी हाँ, इर्शाद (सुनाइये)।"

शरफ़ ने कहा—"कहता है ज़ालिम—

नज़र जो बजाहिर चुरायी गयी है—'बजाहिर' पर ग़ौर कीजियेगा !'

जमाल ने कहा—"अच्छा किया आपने जो कह दिया, वर्ना हम लोग शायद 'गयी है' पर ग़ौर करने लगते !"

इरफान ने कहा—"अरे भई, सुनो तो सही ! जी, नज़र जो बजाहिर चुरायी गयी है.....!"

शरफ़ ने आँखें मूँद कर कहा—

"नज़र जो बजाहिर चुरायी गयी है।
इसी में लगावट भी पायी गयी है ॥"

रज़िया के मुँह में थी चाय; उसे जो हँसी आयी तो प्याली हाथ से छूट पड़ी और दुल्हन बनने पर भी तारा जो खिलखिलायी तो आँधी पड़ गयी नजमा के ऊपर। और सबों की भी हँसी के मारे बुरी दशा थी। केवल इरफान गम्भीरता से झूम-झूम कर शेर रटे जा रहा था—

"नज़र जो बजाहिर चुरायी गयी है।
इसी में लगावट भी पायी गयी है ॥"

आख़िर, शरफ ने स्वयं ही कहा—"देखिये ! इसमें 'बजाहिर' का लफ्ज़ कितना बड़ा नगीना है !"

इरफान ने कहा—"बेशक-बेशक ! मगर यह शेर आपको इस वक्त याद आया ; इसको कहते हैं दिमाग़ की तेज़ी और मौके की सूझ-बूझ !"

जमाल ने कहा—"इस लाल शेरवानी के मेल से अगर आप लाल बुझक्कड भी कह दें तो कोई हर्ज़ नहीं है।"

इरफान ने कहा—"अजी आप नहीं समझ सकते कि हम में और शरफ़ भाई में कितनी गहरी बातें हो गईं।"

शरफ़ ने अपनी कुर्सी से उठकर इरफान से हाथ मिलाया और पुनः अपनी कुर्सी पर आ विराजे। सब उनकी हरकतों पर हँस रहे थे। किन्तु जो हाल रज़िया का था, वह वर्णन नहीं किया जा सकता। बेचारी हँस भी रही थी और शरमा भी रही थी। अन्त में शरफ़ ने उसकी ख़ाली प्याली अपनी तरफ़ खींच कर चाय बनाते हुये कहा—"आप की चाय तो गिर गई थी। लाइये, मैं बना दूँ!"

रज़िया बोली—"जी नहीं, मुझे यों ही नींद नहीं आती..."

इरफान ज़ोर से खँखारे। शरफ़ ने हँसकर उसका अभिप्राय समझा। बाकी सब मुस्कराये, परन्तु शरफ़ ने इस साधारण सी बात को 'अपील' समझ कर कहा—"नींद आप बिला बजह उड़ाये हुए हैं और यह कह कर दूसरों के होश उड़ाये देती हैं।"

जमाल ने कहा—"क्या कहने हैं शरफ़ भाई! बहुत शायराना बात कर रहे हैं आप!"

इरफान ने कहा—"तो आप सुन ही क्यों रहे हैं? इनको बात कर लेने दीजिये।"

रज़िया ने उठते हुये कहा—"अब मैं इजाज़त चाहती हूँ।"

सब के सब खिलखिला पड़े।

नजमा ने कहा—"बैठती क्यों नहीं हो! यूँ तो मरी जाती थी, अब बेचारी बन रही है।"

रज़िया ने नजमा को घूरकर कहा—"वाह.....!"

वास्तव में नजमा से किसी को भी आशा न थी कि वह इस हास-परिहास में इतना मुख्य भाग लेगी। उसके इस वाक्य ने तो जैसे बात को पूर्ण रूप दे दिया। शरफ़ की आँखों में चमक आ गई और इरफान तो इतना प्रफुल्लित हुआ कि क्या कहने!

शरफ़ ने चाय की प्याली रज़िया की तरफ बढ़ाते हुये कहा—"मेरे कहने से यह तो पी ही लीजिये !"

जमाल गुनगुनाने लगा—"ज़हर दे, इस पर यह ताकीद कि पीना होगा ।"

रज़िया ने लजाकर चाय की प्याली लेली और शीघ्रता से पी गयी। अब दिन छिप रहा था और सब थिके हुये थे—अतः गोष्ठी भंग कर दी गयी।

———·———

तेईस

****

तारा के विवाह के हंगामों के पश्चात जब तनिक शान्तिमय वातावरण बना और जीवन ने अपना दैनिक रूप धारण कर लिया तो नजमा को पुनः जमाल की चिन्ता ने ग्रस्त करना आरम्भ कर दिया। उसे ज्ञात था कि उसके बुजुर्ग उससे कितने रुष्ट हैं। इतना बड़ा उत्सव हो गया किन्तु मौलवी अब्दुल समद साहब ने एक बार भी भूल कर उससे बात न की। हाँला कि होना यह चाहिये था कि पहले की नाईं नजमा ही के द्वारा सारे प्रबन्ध कराये। नजमा को खुद अहसास था कि जब भी वह इनके सामने जाती है, उन्हें एक प्रकार का कष्ट होता है। अस्तु वह स्वयं मुँह छिपा-छिपा कर फिरने लगी। वह अपने वालिद की अप्रसन्नता से दुखी तो बहुत थी, किन्तु जो बाधायें उसके समक्ष थीं—उन्हें देखते हुये नजमा को इन परीक्षाओं का सामना करना भी चाहिये था। अतएव, वह फिलहाल इन तमाम बातों को भूल कर चाहती थी कि अपने उद्देश्य की सफलता के लिए संघर्ष करना आरम्भ कर दे। इसलिये उसने बहुत सोच-विचार कर जमाल को एक पत्र लिखा—

"जमाल भाई,

तस्लीम।

आप मेरा यह पत्र देख कर जरूर हैरान होंगे। किन्तु यह खत ऐलान है मेरी उस कमजोरी का कि मैं जो बातें आप से मुँह पर नहीं

कह सकती थी, उन्हें आप तक पहुँचाने का यही ज़रिया है। आप को शायद मालूम हो चुका होगा कि मेरे और आपके बुज़र्गों ने हम दोनों के विषय में जो प्रोग्राम बना रखा था, वह मैंने अपने सीने पर पत्थर रख कर नामुमकिन बना दिया है; जिसका नतीजा सिर्फ तारा की शादी की सूरत मे हमारे सामने आ चुका है।

मैं इस वक्त इस लम्बी दास्तान को नहीं छेड़ना चाहती कि यह जो कुछ हुआ है—क्यों हुआ है! विशेषकर ऐसी हालत में जब कि आप को भी मालूम है कि हम दोनों एक-दूसरे के साथ किसी किस्म की बेईमानी नहीं कर सकते। लिहाजा, ईमानदारी के साथ सचाई को माध्यम बना कर चुप रह जाना ही उचित समझा गया। लेकिन इसके यह अर्थ नहीं हैं कि मेरे दिल में आप के लिये जो स्थान था, वह छोटा हो गया है। मैं इस सिलसिले में यकीन दिलाने की कोशिश करके आपके एतबार पर शक नहीं करना चाहती। अलबत्ता, यह बात एक बार फिर कहती हूँ कि मैं आप की थी और अब किसी की भी नहीं हूँ—यहाँ तक कि आप की भी नहीं! मगर मैं अपनी मुहब्बत के खून करने के तौर पर आप से एक चीज़ माँगती हूँ। मुझे आप पर अब भी इतना अधिकार है कि मुझे माँगने की कोई ज़रूरत नहीं, मगर मैं आपकी उदारता की परीक्षा लेना चाहती हूँ और मुझे यह देखना है कि आप इस नजमा को—जिसे ज़िन्दगी भर अपना समझा है; क्या कुछ दे सकते हैं!

मैंने आप से कभी कुछ नहीं माँगा और न ही इस सवाल के लिये या कभी दूसरे सवाल के लिये हाथ फैलाऊँगी। अगर आप इसे मेरी मुहब्बत की भीख समझ कर आँचल भर देंगे तो मैं इसी को सब-कुछ समझूँगी। मेरा सवाल आपको बाद में मालूम होगा, पहले आप वचन दीजिये कि वह चीज़ चाहे आप को कितनी अज़ीज़ क्यों न हो; आप मुझे ज़रूर देंगे।

आप के जवाब का राह में
नजमा।"

जमाल इस पत्र का देख विस्मय में डूब गया। इतना अज्ञान तो वह था नहीं कि इस पत्र का विषय न समझता, किन्तु उसने भूल कर भी न सोचा था कि नजमा उसका विवाह मैंबुल से कराना चाहेगी। वह केवल यही समझे था कि नजमा उसके समक्ष कहीं अन्यत्र विवाह करने का प्रस्ताव रखेगी और वह उसे उसी दिशा पर लाकर पराजित कर देगा और वचन दे देगा कि—'जिस दिन तुम्हारी शादी हो जायेगी, उसके बाद मैं वायदा करता हूँ कि खुद भी शादी कर लूँगा।'

अतएव उसने नजमा को पत्र का उत्तर दिया—

"नजमा!

तुम मुझे अज़ाज़ थीं, अज़ीज़ हो और अज़ीज़ रहोगी। जिस बात का तुमने हवाला दिया है, इससे परिस्थितियाँ बदल सकती हैं—मन की भावनायें नहीं! तुम मुझसे जो कुछ माँगना चाहती हो, ज़रूर माँगो। अगर तुम अपना कर्त्तव्य छोड़कर मुझे ही मजबूर कर रही हो कि मैं तुम्हें कुछ दूँ—तो भी मुझे इसलिये उज्र नहीं हो सकता कि मुझसे बग़ैर पूछे भी तुम वही कर सकती हो। वृथा में उत्तर माँग कर क्या करोगी! मगर मैं चाहता हूँ कि तुम पत्र-व्यवहार न करो, बल्कि मुझ से मिल कर वह बात कह दो जो लिखना चाहती हो।

जमाल।"

नजमा ने जमाल का उत्तर प्राप्त करने के पश्चात अपने को ढीठ बना कर यह निश्चय कर लिया कि वह भविष्य में जमाल को पत्र न लिखेगी और ज़बानी ही बातचीत करेगी। अस्तु, वह एक दिन इसी इरादे से सीधी जमाल के क्लब पहुँची और जमाल को शोफर द्वारा बुलवा कर अपने साथ ले लिया और उसी उद्यान में जहाँ तारा

और इफ़ान ने आजीवन साथ रहने की प्रतीज्ञा की थी; यह दोनों अपनी मुहब्बत को दफ़नाने चले गये।

जमाल ने चर्चा स्वयं आरम्भ की। बोला—"मुझे मालूम है नजमा, तुम जो कुछ कहने वाली हो। मैं इस सिलसिले में तुम्हें सिर्फ एक बात बता देना चाहता हूँ कि....."

नजमा ने उसकी बात काट कर कहा—"देखिये! मुझे अगर आप पर इतना हक भी नहीं है कि मैं बिना शर्त के आप से कुछ माँग सकूँ तो बातचीत करनी बेकार है। आप मेरी ज़िन्दगी को हमेशा-हमेशा के लिए मौत की सूरत में ख़ामोशी के साथ बदल दीजिये, वर्ना मुझ से बिना शर्त के वादा कीजिये कि मैं जो कुछ कहूँगी—आप करेंगे!"

जमाल ने कहा—"मगर इसमें बिना शर्त का वायदा क्यों?"

नजमा बोली—"अगर आपने जिरह से काम लिया और जो कुछ मैं माँग रही हूँ उससे इन्कार किया तो मैं आप को यक़ीन दिलाती हूँ कि आप को खुद इतना अफ़सोस होगा जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। आप को अन्दाज़ा होना चाहिये कि मैं अपने दिल को किस क़दर नाज़ुक बना कर इस वक्त आप से कुछ माँगने आयी हूँ। अपनी मुहब्बत की क़ीमत के तौर पर या महज़ भीख के तौर पर!"

जमाल ने कहा—"नजमा, तुम तो जज़बात में बहने लगीं।"

नजमा का दिल भर आया, अवरुद्ध कंठ से बोली—"जमाल! खुदा के लिए मुझ पर रहम करो। म सिर्फ एक सवाल लेकर आयी हूँ। तुम्हें अपनी नजमा का ही वास्ता, इसे रद्द न कर देना; वर्ना नजमा फिर कहीं की न रहेगी!" यह कह कर उसने सचमुच इस तरह आँचल पसारा कि जमाल स्वयं पर संयम पाने में सफल न हो सका और उसने नजमा को सँभालने के लिए कहा—

"मैंने दिया, सब-कुछ दे दिया। खुदा के वास्ते तुम होश में रहो।

मैं वायदा करता हूँ कि जो कुछ कहोगी—वही करूँगा। लो, अब आँसू रोको, पागल लड़की!"

नजमा ने कृतज्ञतापूर्वक कहा—"जमाल भाई! आप ने मुझे खरीद लिया। मेरे विश्वास की लाज रख ली। अब मैं बिल्कुल बेफिक्र हूँ। मेरी मुहब्बत नाकाम नहीं रही। आपका वायदा मेरी दम तोड़ने वाली मुहब्बत के हक में जिन्दगी साबित हुआ।"

जमाल ने सन्तोष की उसास लेते हुए कहा—"मैं आनाकानी कर भी कैसे सकता हूँ? तुम्हारे आँसुओं की उपेक्षा करना कम से कम मेरे बस की बात नहीं है।"

नजमा कहने लगी—"खैर, छोड़िये मेरे आँसुओं को, और अब हंसिये मेरे साथ। इस वक्त मेरा दिल झूम रहा है। मेरा प्रेम मेरी आशाओं का मुँह चूम रहा है। आपने मुझे सब कुछ दे दिया। मेरी मुहब्बत के खून का मुझे फल मिल गया।"

और फिर वह कहने लगी—"अब मुझे चाँद सी एक भाभी मिल गयी। मेरी अच्छी मैबुल!"

जमाल ने दंग होकर कहा—"मैबुल.....?"

नजमा ने कहा—"जी हाँ, मैबुल! मेरी भाभी जान मैबुल! मिसेज़ जमाल!! मिसेज़ मैबुल जमाल!!!"

जमाल ने कहा—"अगर तुम्हारी नजमा तुम्हारे लिए यह चाह सकती है, तो यही सही।"

नजमा ने उसके मुँह पर हाथ रख कर कहा—"अब अगर मगर कुछ नहीं! मैं मैबुल से उसको और आपको आप से माँग चुकी हूँ। आप दोनों अपने-अपने अधिकार मुझे दे चुके हैं। उसके बाद किसी 'अगर' या किसी 'मगर' की कोई गुंजायश नहीं!"

जमाल ने हैरत से कहा—"लेकिन एक बात तो सुनो नजमा!"

चौबीस

****

ठीक उस समय जब कि नजमा और जमाल के बीच यह वार्ता चल रही थी; तारा और इरफान मबुल के यहाँ उससे कानाफूसी करने में व्यस्त थे और यह तीनों अत्यन्त प्रसन्न नज़र आ रहे थे। पता नहीं, ये तीनों किस परिणाम पर पहुँच चुके थे किन्तु ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कोई बहुत बड़ा किला जीत कर बैठे हों। सबसे अधिक प्रसन्न इरफान था और बार बार यही कहता था—"बस, यही एक तरकीब है।"

आखिर मैबुल कुछ विचारते हुये बोली—"मगर, यह खबर हम तीनों के अलावा किसी और को न मालूम हो। वर्ना यह खबर नजमा तक ज़रूर पहुँच जायेगी। और फिर तुम जानते हो कि नजमा कितने पक्के इरादों की लड़की है।"

इरफान ने कहा—"अजी तोबा कीजिये। इस खबर को फैला कर हमें अपना बना-बनाया खेल थोड़ा ही बिगाड़ना है। लेकिन अब आप रवानगी में जल्दी कीजिये।"

मैबुल ने कहा—"इससे ज्यादा जल्दी और क्या हो सकती है कि मैं आज ही देहरादून एक्सप्रेस से रवाना हो जाऊँगी और मेरे जाने के बाद मेरे पत्र नजमा, रजिया, नाहिद, जमाल और डैनियल को मिलेंगे।"

तारा बोली—"लेकिन तुम इन पत्रों में ज़िक्र न करना कि तुम कहाँ जा रही हो, वर्ना नजमा तुम्हें छोड़ने वाली नहीं है।"

मैबुल ने कहा—"हरगिज नहीं। अलबत्ता एक अफ़सोस है कि एक तो मैं सब से बिछुड़ रही हूँ। दूसरे तुम लोगों को खत भी न लिख सकूंगी।"

इरफान ने कहा—"क्यों, खत लिखने में क्या हर्ज है? मेरे पते पर तुम बराबर खत भेजना और मैं और तारा तुम को बराबर खत लिखते रहेंगे। इसी तरह सबकी कुशलता मालूम होती रहेगी। तुम तो गोया नजमा और जमाल ही से छिप रही हो।"

मैबुल ने कहा—"क्या कहूँ, इरफान! मेरा दिल किसी तरह नहीं चाहता कि मैं इस भरी महफ़िल से इस तरह अलग हो जाऊँ। लेकिन इसके सिवाय कोई चारा भी तो नहीं है। खुदा करे, इसी सूरत से नजमा और जमाल के बीच की खाई किसी तरह भर जाय और मेरी यह कुरबानी सफल हो।"

इरफान बोला—"खैर, यह बात इतनी आसान तो नहीं है। मगर तुम्हारे यहाँ रहने से यह होता कि नजमा जबर्दस्ती कर इस सिलसिले की तमाम उम्मीदों को बहुत जल्द तोड़ देती। अब, कम से कम इन लोगों को अपने फैसलों पर गौर करने का मौका तो मिलेगा।"

तारा ने कहा—"या कम से कम वह जमाल भाई को किसी दूसरे के सिर तो नहीं मढ़ सकेगी।"

मैबुल ने कहा—"अच्छा, अब तो मेरा हाथ बँटाओ। मेरा सारा सामान यूँ ही पड़ा है, उसे दुरुस्त कराओ। मैं अकेली क्या-क्या कर सकती हूँ!"

तारा और इरफान दोनों, मैबुल का सामान ठीक कराने में लग गये। इरफान ने अपना कोट उतार दिया और एक-एक चीज करीने से रखने लगा। जो सामान मैबुल के साथ जाने वाला था उसे वह बताती जाती थी और जो यहाँ बन्द होने वाला था, उसे इरफान सावधानी से आलमारियों में रख कर ताला लगा देता था।

तारा ने इस अरसे में 'आपा' को बुला कर आवश्यक आदेश दे दिये थे कि—'कोई भी मिस साहब से मिलने आये तो कह देना कि वह बाहर हैं और हम लोग इस वक्त खाना यहीं खायेंगे।'

इरफान ने मैबुल के सूटकेस व्यवस्थित किये, बिस्तर बाँधने का सारा सामान एक स्थान पर एकत्रित किया, जूते तक सँभाल कर रखे—यहाँ तक कि उसकी व्यवस्था देख कर मैबुल ने कहा—"इरफान! बोलो, क्या तनख्वाह लोगे? तुम तो बहुत अच्छे प्रबन्धक हो! अगर ऐसा आदमी किसी को मिल जाये तो अपनी खुशी का ठिकाना न रहे।"

इरफान ने कहा—"मैं बड़ी खुशी से नौकरी कर लेता, मगर आजकल एक जगह नौकर हूँ।"

यह कह कह वह तारा की ओर देख कर मुस्कराया।

तारा ने कहा—"मैबुल! अगर तुम्हें सचमुच में नौकर की जरूरत है तो मैं अपने आका (स्वामी) को बरखास्त कर सकती हूँ।"

मैबुल ने झेंपकर कहा—"तुम्हारे आका तुम्हें मुबारक रहें। मगर ऐसा शौहर मिलने पर क्या तुम्हें सचमुच नाज़ नहीं?"

तारा बोली—"ख़ाक थोड़ी! यहाँ अपनी योग्यता दिखा रहे रहे हैं, वर्ना घर पर तो कोट एक तरफ उछाल दिया जाता है टोपी एक तरफ। पतलून कुर्सी पर पड़ी है तो टाई तख्त पर है। कालर मसहरी पर है तो मोजों में से एक गुसलखाने में और दूसरा ड्राईंग रूम में। कल एक पैर का जूता ढूँढा जा रहा था, फिर खुद ही याद आया कि बिल्ली को मारने के लिए उछाला गया था। लिहाजा, वह सहन में मिला।"

इरफान ने कहा—"मैबुल! तुम इन बातों पर भला, कैसे यक़ीन कर सकती हो! जो शख्स इतनी होशियारी से तुम्हारा सामान ठीक

कर रहा हो, वह भला ऐसा बद्तमीज़ क्यों कर हो सकता है !"

तारा ने कहा—"ज़रा देखना मेरी बहन, ज़रा देखना ! सबूत सामने ही है। आप साहब ने अपना कोट उतार कर कहाँ डाला है। वह रहा सोफे के नीचे और जेब में घड़ी भी है, खैरियत से।"

इरफान ने कहा—"भई खुदा के लिए तुम अपने खालू अब्बा (मौसा) की दी हुई यह घड़ी ले लो। इस घड़ी ने मेरी जान आफत में डाल दी है। मुझ हर वक्त टोका जाता है कि—'जेब सीधी रखो, घड़ी गिर जायेगी। नौ बजे घड़ी में चाबी दो। कोट कंध पर न डालो, जेब में घड़ी है। कोट न उछालना घड़ी टूट जायेगी।' घड़ी न हुई—मुसीबत हो गई। जब एक आदमी आसानी से अपनी चीज़ को तोड़-फोड़ भा न सके तो लानत है उसकी ज़िन्दगी पर !"

तारा बोली—"सुन लिया मैबुल तुमने ! गोया घड़ी का तोड़ना इनका फर्ज़ है। तीन-चार सौ की घड़ी है। अगर मैं इसके लिए सावधानी बरतने को कहती हूँ तो आप को आज़ादी में खलल पड़ता है। मेरा क्या है, आप तोड़ डालिये इसे !"

मैबुल कहने लगी—"इरफान ! शादी के बाद तो तुम अपनी यह चुलबुल हरकतें खत्म कर दो ! तुम आखिर, कब तक (naughty boy) बने रहोगे।"

इरफान ने उत्तर दिया, "भई, इन्साफ से काम ले कर कहो कि जब इनके खालू जान या खालू अब्बा साहब ने मुझे 'सलाम कराई' में यह घड़ी इनायत फरमायी थी, उस वक्त मुझसे यह गारंटी तो ली नहीं थी कि मैं इसे तोड़ने का भी हक नहीं रखता। अब वे मुझे एक चीज़ दे चुके। उनकी बला से मैं उसे तोड़ूँ या रक्खूं। यह कोई उनकी अमानत तो है नहीं और न ही श्रीमती तारा जी की 'मुँह दिखाई' की कोई चीज़ है। साहब, हमने सलाम किया, हमें दुआ के बजाय घड़ी मिल

गयी। चलिये किस्सा खत्म हो गया! अब घड़ी को हथकड़ी की तरह इस्तेमाल करो। ज़रा सी घड़ी के लिए अपनी आज़ादी को तज दो। सुबहान अल्लाह.....!"

तारा ने हँस कर कहा—"अच्छा, साहब ! आप शौक से घड़ी तोड़िये। आपकी आज़ादी में यह घड़ी अब रोड़ा न अटकायेगी। मैं इसे आपकी जेब से निकाल कर रख लूँगी।"

इरफान ने कहा—"बेहतर है ! तो मैं आपके खालू अब्बा से जाकर कहूँगा कि मेरा सलाम वापिस दीजिये, आपकी भानजी साहिबा ने घड़ी छीन ली है।"

मैबुल हँस कर बोली—"तुम दोनों बच्चे लड़े ही जाओगे या मेरा काम भी करोगे ! देखो, यह गाउन इस सूटकेस में रखो। और तारा ! तुम मेज़ से सब चीज़ें समेट कर इस आलमारी में बन्द कर दो। अभी सारे घर को बंद करना है और वक्त देखो, कितना कम रह गया है।"

तत्पश्चात यह सब पुनः कार्य में व्यस्त हो गये और थोड़ी ही देर में साथ ले जाने का सारा सामान ठीक करके घर का सारा सामान बाक़ायदा बंद कर दिया गया। तब तीनों ने साथ बैठ कर भोजन किया और भोजन से निवृत्त होते ही इरफान को बैंक रवाना कर दिया ताकि कुछ रुपये निकाल ले और बाकी को मसूरी 'ट्रांसफर' करा दे।

इरफान ने यह कार्य भी शीघ्र ही निबटा दिया। यहाँ तक कि मध्याह्न के बाद की चाय के पश्चात यह तीनों और 'आपा' स्टेशन की तरफ रवाना हो गये।

घर पर आपा के पति को जो मैबुल का विश्वस्त था; उसे छोड़ दिया गया। ताकि वह घर की और कुत्तों की निगरानी करता रहे लेकिन वह भी उन्हें स्टेशन तक छोड़ने आया था।

स्टेशन पहुँच कर तारा ने सीट 'रिजर्व' कराने के लिए इरफान को भेजा और स्वयं मैबुल के साथ प्लेटफार्म पर टहलती रही।

अब तक तारा भी नजमा की तरह बुर्के में रहा करती थी, परन्तु आज यह पहला अवसर था कि वह बिना बुर्के के मैबुल के साथ प्लेट-फार्म पर टहल रही थी। आपा (नौकरानी) सामान के साथ बैठी अपने पति से वियोग होने के कारण इस प्रकार का करुण-क्रन्दन कर रही थी, जैसे फौज में भर्ती होकर हिन्दुस्तान से बाहर जा रही हो।

इरफान टिकट ले कर सीट की व्यवस्था करने के पश्चात जब लौटा तो तारा और मैबुल तराजू पर अपना-अपना वज़न करवा रही थीं। इरफान ने आते ही कहा—

"आप बेकार अपने को तोल रही हैं। इस टिकट से आप बगैर तोले हुए सफर कर सकती हैं। वज़न होना चाहिये था आपके सामान का। घबराहट में खुद खड़ी हो गयीं तराजू पर!"

मैबुल ने कहा—"तारा का वज़न भी देखा! लो, यह टिकट भी देखो। कैसी हल्की-फुल्की दुल्हन मिली है तुमको!"

इरफान बोला—"और मैं कौन सा रुस्तमे-हिन्द हूँ! अच्छा तशरीफ लाइये। 'स्टार्टर' डाउन हो चुका है। आपा भी अपने शौहर से गले मिल चुकी हैं।"

यह तीनों हँसते हुये आगे बढ़े। मैबुल का सामान करीने से ट्रेन में रखा जा चुका था। सीटी बजते ही मैबुल ने तारा के भाल का चुम्बन लिया और तारा ने भी उसका क्रियात्मक उत्तर दिया।

इरफान ने कहा—"और हम....."

ट्रेन रवाना हो गयी, रूमाल हिलते रह गये।

———

पच्चीस

****

मैबुल के अचानक प्रस्थान और अदृश्य होने पर कौन ऐसा था, जो हैरान न हुआ हो। रज़िया और नाहिद, जमाल और नजमा और दिखावे के लिए इरफान और तारा—सब ही को हैरत थी। जितने ही मुँह थे उतनी ही बातें। डैनियल का यह विचार था कि मैबुल के एक आत्मीय लाहौर में हैं। उनके यहाँ न जाने कोई बीमार है या कोई ऐसी ही दुर्घटना हुई है कि वह बिना सूचित किये चली गयी। जमाल का ख्याल था कि मैबुल जान-बूझ कर टल गयी है ताकि नजमा के और मेरे बीच में रोड़ा बनने से बच जाये। किन्तु नजमा को आरम्भ में ही यही ख्याल रहा कि मैबुल को यहाँ से टालने में स्वयं जमाल का हाथ है। लेकिन जब जमाल ने स्वयं उसे बताया कि—मैं कम से कम बेईमान तो नहीं कि तुमको इस तरह धोखा देता ; तो नजमा ने विश्वास कर लिया कि मैबुल का और कोई बस नहीं चला तो वह स्वयं ही यहाँ से ओझल हो गयी। मगर उसका इस तरह जाना भी नजमा के संकल्प को विचलित नहीं कर सका। वह अब तक इसी चिन्ता में थी कि मैबुल का कहीं से पता चलाया जाये। इसने आपा के पति से तरह-तरह की पूछताछ की, मैबुल के पत्रों की राह देखी, मैबुल के उन आत्मीयों को तार किये जो लाहौर में थे—किन्तु अब तक उसे कोई सफलता नहीं प्राप्त हुई।

आखिर, खुद मैबुल का पत्र इरफान के पास आया जिसमें एक

पर्चा तारा के नाम भी था और साथ ही नजमा के नाम भी एक पत्र था।

"दुलारी नजमा !

तुमसे आज्ञा लिए बिना मैं अचानक विदा हो गयी। इसका कारण तुम इसलिये समझ गई होगी कि तुम खुद क़यामत की समझदार हो। और अब भी तुम्हें यह नहीं बता सकती कि मैं कहाँ हूँ। अलबत्ता मेरा पता तुम्हें उस वक्त मालूम हो जायेगा जब मैं किसी अख़बार में यह पढ़ लूँगी कि तुम जमाल की हो गई हो। मुझे उम्मीद है कि तुम मुझे इसके लिए माफ कर दोगी। मैंने आख़िरी नतीजा निकाला है कि मैं वहाँ रह कर तुम से जीत न सकूँगी और यह सहन न कर सकती थी कि तुम्हारा जमाल—मेरा कहलाये। खुदा, तुम्हें खुद तुम्हारी ज़िद से बचाये और खुदा करे मैं तुमसे फिर मिल सकूँ। मैं कभी-कभी तुम्हें ख़त लिखती रहूँगी लेकिन तुम्हारे पत्र पाने से वंचित रहूँगी। यह बात तुम्हें बताना चाहती हूँ कि मैं बहुत जल्द ही ऐसा जीवन अपनाने वाली हूँ कि तुम जमाल से मेरा सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास न कर सकोगी।

मैबुल।"

नजमा ने इस पत्र को देखते ही इरफान से पुनः आग्रह किया कि वह लिफाफा दिखाये। इरफान जानता था कि उसके समक्ष यह माँग व्यक्त की जायेगी। इसलिए वह एक दूसरे लिफाफे में यह पत्र रख लाया था। इस पर पता टाइप किया हुआ था और मोहरें कुछ बिगड़ी हुई सी थीं, कुछ धुँधली-धुँधली सी थीं। नजमा ने यह समझने का लाख प्रयत्न किया कि यह पत्र कहाँ से आया है, किन्तु उसे कुछ पता न लग सका। इरफान और तारा भी उसी प्रकार विस्मित रहे।

तारा और इरफान के नाम जो पत्र था, उससे भी कोई सुराग नहीं मिलता था और नजमा को इस से सम्बन्धित तमाम प्रयत्नों में अविरल असफलतायें मिल रही थीं जिनका प्रभाव उसकी आकृति

पर स्पष्ट था। वह जैसे मानसिक उलझनों से ग्रस्त थी। उसके अपने संकल्पों में या तो असफलता मिलती ही नहीं थी; अगर मिलती थी तो बुरी तरह प्रभावित करती थी। इस सम्बन्ध में मैबुल ने उसे जो पराजय दी था वह उसके धैर्य की परीक्षा ले रही थी। इस पर भी उसने अब तक अपना साहस नहीं खोया था। वह बराबर इस चिन्ता में थी कि किसी न किसी तरह मैबुल का पता जरूर लगायेगी। जमाल से वह स्पष्ट रूप में कह चुकी थी कि मैबुल का पता लगाने में अगर उसने बराबर का साथ न दिया तो वह उसको इस अपराध पर न सही; अपराध छिपाने वाला अपराधी अवश्य समझेगी।

जमाल स्वयं नजमा की परेशानी से चिन्तित था, किन्तु कर ही क्या सकता था। इरफान और तारा भी दिखावे के लिए प्रयत्न कर रहे थे। आखिर, एक दिन सोचते-सोचते नजमा ने ही स्वयं यह रास्ता निकाला कि डाकखाने से मैबुल का पता मालूम किया जाये। मैबुल ने अवश्य ही पोस्ट-आफिस को सूचित किया होगा कि उसकी डाक कहाँ भेजी जाय। अतः उस कार्य पर उसने जमाल को नियुक्त कर दिया। और उसे पूर्ण विश्वास था कि अब मैबुल उससे छिपी नहीं रह सकती। अस्तु, सचमुच में वैसा ही हुआ। उसे डाकखाने से जमाल के एक मित्र द्वारा मैबुल का पूरा पता मिल गया।

जमाल चाहता तो स्वयं अपनी जान बचाने के लिए पते को गायब कर सकता था, लेकिन वह नजमा से कोई चालाकी नहीं कर [illegible] था। इसलिये उसने जब वह पता नजमा को लाकर दिया; [illegible] ल गया हो। उस ने [illegible] मैबुल को यह

आखिर आपको इस मोर्चे में भी हार मिली। मैं तुमसे यह शिकायत नहीं करती कि तुमने बगैर कहे-सुने क्यों जाना चाहा। लेकिन यह शिकायत ज़रूर है कि तुमने अपने वचन से डिगने का एक असफल प्रयत्न किया है। परन्तु क्योंकि तुम इस प्रयास में असफल रही हो —इसलिये फौरन ही वापिस आओ और अपने आप को मेरे हवाले कर दो! ताकि मैं तुम्हें किसी और के हवाले कर सकूँ।

मसूरी की ऊँचाइयों पर अपनी बात की ऊँचाई का भी ख्याल रखो और अपने वचन को तोड़ने की कोशिश न करो। अच्छा, मैं वचन देती हूँ कि तुम्हारी वापसी पर इस सिलसिले में तुमसे कोई गिला-शिकवा न होगा। अब मुझे पत्र दो कि कब आ रही हो।

तुम्हारी
नजमा।"

यह पत्र लिखने के पश्चात नजमा ने जमाल के अतिरिक्त तारा इरफान, नाहिद, रज़िया और डैनियल सब को जमा कर लिया और सबको मैबुल के इस प्रकार विचित्र रूप से मिलने की घटना सुना दी। प्रगट में तो इस समाचार से सब ही प्रसन्न थे, परन्तु इरफान की प्रसन्नता में किसी सीमा तक घबराहट भी मिश्रित थी। उसके चेहरे का रंग एक दम उड़ गया जिसे केवल तारा अनुभव कर सकी। और रंग उड़ जाने की बात भी थी। उसका बना-बनाया किला ढह पड़ा था। अब वह जानता था कि नजमा मैबुल को अवश्य गिरफ्तार कर लेगी और अन्त में वही होकर रहेगा जो नजमा चाहती है। वह इन्हीं विचारों में उलझा हुआ था [illegible]

"सुन रहे हैं अ[illegible]
विभाग में जग[illegible]

रज़िया बोली—"आप के पुलिस विभाग में चले जाने से एक फ़ायदा यह भी होगा कि शरफ़ को जल्दी ही गिरफ्तार करा सकेंगी।"

जमाल ने हँस कर कहा—"यह तो शरफ़ खार से खाये बैठी हैं। वह बिचारा जान छिड़के और यह उसे गिरफ्तार कराने के चक्कर में हैं।"

रज़िया ने कुढ़ कर कहा—"खुदा की मार उस पर और उसकी छिड़की हुई जान पर। मुझे तो वह सूरत से ही ऐसा खबीस नज़र आता है कि मेरा ख्याल यह है कि उसे कभी न कभी सज़ा होगी जरूर!"

इरफ़ान ने कहा—"गोया यह सज़ा कम है कि उसकी मुहब्बत तक संजीदा नहीं समझी जाती। किन-किन तैयारियों से बेचारा आशिक बना फिरता है और यहाँ उसके इश्क को भी तमाशा समझा जा रहा है।"

नजमा ने अपनी चिन्ता से चौंक कर कहा—"मैं यह कहती हूँ कि मैबुल ने अगर मसूरी से कहीं और जाने का इरादा तो किया यह उसकी बच्चों जैसी दूसरी ग़लती होगी।"

नाहिद कहने लगी—"मेरी राय तो यह है कि खत भेजना ही ग़लत है। बजाय खत के किसी को खुद ही जाना चाहिये था।"

नजमा ने कहा—"मैंने यह सोचा था कि जमाल भाई को रवाना कर दिया जाय, मगर फिर मुझे यह ख्याल भी साथ आया कि मैबुल अब मुझसे ज्यादा सरकशी न कर सकेगी। इस पराजय के बाद वह बहादुरी से हार मान लेगी और चली आयेगी।"

रज़िया ने कहा—"मुझे इसमें शक है।"

नजमा ने कहा—"इरफ़ान! तुम क्यों गूँगे बने हो? कुछ बोलो न!"

इरफ़ान ने मुँह बनाकर कहा—"मैं कभी कोई बात बिना सोचे-विचारे नहीं कहता।"

नजमा ने कहा—"अक्खा...ह...यह कब से?"

डैनियल तत्परता से बोली—"जब से इनकी शादी हुई है। बीवी थोड़ा ही आयी है—अक्ल आयी है।"

इरफान ने कहा—"आप लोग मजाक कर रहे हैं जब कि मैं इस वक्त संजीदा हूँ। मेरी राय में अब इस खत के जवाब की राह देखनी चाहिये वर्ना इसके बाद नजमा साहिबा की खुफियागिरी सलामत रहे; मैबुल कहाँ जायेगी बचकर!"

तारा ने अर्थ भरी दृष्टि से इरफान को देखा, परन्तु इरफान इस समय यह बात किसी चालाकी से नहीं कह रहा था, अपितु उसके मस्तिष्क को ही कुछ और नहीं सूझ रहा था। सचमुच में ही वह कुछ हार सा गया था। इसी बीच में उसने यह भी सोचा कि जमाल को कुछ समझा-बुझा कर युद्ध का नक्शा ही बदल दिया जाये किन्तु यह तरकीब भी उसे कुछ जँची नहीं। दूसरी बात, कि वह तारा को संग ले स्वयं मसूरी चला जाये और वहाँ मैबुल को कुछ सिखा-पढ़ा कर वापिस आये और नजमा से कह दे कि मैबुल किसी और से 'इन्गेजमेंट' करने वाली है; यह भी कुछ यूँ ही सी तरकीब थी। संक्षेप में यह कि इस समय वह कुछ उलझ सा गया था। दूसरी ओर नजमा लगातार सोचती चली जा रही थी। अन्त में उसने सहसा चौंक कर कहा—

"जमाल भाई! मैंने फैसला कर लिया है। मैं किसी शक की गुंजायश बाकी नहीं रखना चाहती। आप आज और कल के बीच में खुद ही मसूरी तशरीफ ले जायें!"

जमाल बोला—"इतनी जल्दी?"

नजमा ने कहा—"देर से जाने का तो कोई फायदा ही नहीं। आपको जल्दी ही पहुँचना चाहिये। मैं इस खत को डाक से भेजने के बजाय आप के हाथों भेजूँगी। वहाँ पहुँचने पर मुझे फिर जल्दी नहीं है कि फौरन ही वापिस भी आजायें। देखिये न, आप नैनीताल जाने को कह रहे थे! वहाँ के बजाय मसूरी ही चले जाइये और खूब सैर कीजिये। अलबत्ता, मैं आप से मैबुल को लूँगी।"

नजमा की इस आज्ञा के बाद फिर जमाल के कुछ कहने-सुनने की की गुंजायश ही कहाँ थी! वह दूसरे दिन ही प्रस्थान कर गया।

छब्बीस

****

जमाल के रवाना होने के बाद नजमा पर तो एक सन्नाटे का आलम छाया हुआ था। किन्तु तारा और इरफान के कैम्प में खलबली मची हुई थी। नजमा को जो डिक्टेटर की सी शक्ति स्वयं ही प्राप्त हो गई थी वह इरफान के लिए बड़ी विचित्र थी। उसके विचार से नजमा की इसी अनाधिकार चेष्टा के कारण जमाल को ऐसी स्थिति में से गुजरना पड़ा था। सच तो यह है कि नजमा की इन मनमानी सरगर्मियों ने इस सोसायटी में उसके समर्थकों की संख्या कम करके—आलोचकों या उस पर टीका-टिप्पणी करने वालों की संख्या में वृद्धि कर दी थी। किसी और को क्या पड़ी थी कि वह जमाल की तरह नजमा के नाज-नखरे सहता, उसके प्रत्येक संकेत पर नाचता, उसके मुँह से निकले शब्द को सौभाग्य-सूचक समझ कर उसे क्रियान्वित रूप देता! एक सीमा तक सभी ने उसके चोंचले सहे परन्तु अब तो इरफान के कथनानुसार नजमा की यह सनक उन्माद के रूप में परिवर्तित हो रही थी। वह नजमा के मुँह पर कहने लगा—

"कुछ भी हासिल न हुआ जहद में नखवत के सिवा।"

परन्तु उस जालिम के कहने का ढंग ऐसा होता था कि कोई भी बुरा नहीं मान सकता था। फिर नजमा को तो तारा के कारण वह बहुत ही प्रिय था। वह अगर इरफान के व्यंग्य की कटुता को अनुभव भी करती थी तो यह समझ कर पी जाती थी कि इरफान शत्रुतावश नहीं वरन् मैत्री की भावनाओं के वशीभूत हो यह सब कह रहा है जो पराकाष्ठा पर पहुँच

कर शत्रुता का अनुरूप लगता है। इरफान का व्यवहार कुछ ऐसा हो गया था जैसे वह अब नजमा की दुविधा मे भागीदार नहीं बनना चाहता था। तारा कभी-कभी यह जिक्र छेड़ती भी थी तो वह खूबसूरती से टाल जाता था।

आज भी तारा ने जमाल को याद करते हुये कहा—"जब से भाई जान गये हैं कुछ अजीब सा सन्नाटा मालूम होता है। नजमा आपा भी खोई-खोई सी हैं।"

इरफान ने कहा—"ऊंह, आपकी नजमा आपा भी कोई इन्सान हैं। उन्हें तो आज-से-कम से कम सौ साल पहले पैदा होकर किसी नये मजहब का संदेशा सुनाना चाहिये था और अपनी प्रजा या पुजारियों से अपना कलमा पढ़वा कर चले जाना चाहिये था। खैर, छोड़ो इस जिक्र को। मुझे तो आज शरफ़ याद आ रहा है। या तो उसके यहाँ चलिये, वर्ना उसे ही यहाँ बुलवा लिया जाय।"

तारा ने जल कर कहा—"आपकी दिलचस्पी भी अजीबो-ग़रीब है। मुझे उस शख्स की हिमाक़तों पर हँसी जरूर आती है, मगर उनमें दिलचस्पी कभी पैदा नहीं हुई। हाँ, मैं उसकी हिमाकतों को पुराना मर्ज जरूर समझती हूँ। सच कहती हूँ, जब वह यहाँ आता है तो मैं अपने को बेवक़ूफ़ समझने लगती हूँ।"

इरफान ने कहा—"गोया यह तुम भी मानती हो कि उसमें भावुकता है। उसकी मौजूदगी में एक सच्ची बात का अहसास तुम्हें भी हो जाता है। है न!"

तारा ने ध्यानपूर्वक कहा—"वाह, बड़े आये मुझ बेवकूफ़ कहने वाले! आप खुद अपनी खबर तो लीजिये! शरफ़ से दिलचस्पी के मायने यह हैं कि चोर-चोर मौसेरे भाई! तुम खुद उसके जैसे हो।"

इरफान ने कहा—"बेवकूफ़ न होता तो तुमसे शादी क्यों करता!

जिससे मुहब्बत हो उससे शादी करना इन्सान की वह हिमाक़त है जिसे अक्लमन्दी कभी भी माफ नहीं कर सकती। इश्क को शादी की शक्ल में बदलने को मालूम नहीं, कानूनन जुर्म क्यों नहीं बना दिया जाता! अच्छा, मैं इस वक़्त रज़िया की तरफ से शरफ़ को यहीं बुलवा लेता हूँ।"

तारा ने कहा—"यह आप क्या ग़ज़ब कर रहे हैं! रज़िया के घर वालों को पता लग गया तो आफत मचा देंगे। किसी की क्वाँरी लड़की का नाम भी ऐसी मज़ाक के साथ नहीं लेना चाहिये।"

इरफान ने उसे कागज़ और कलम देते हुये कहा—"पागल हैं आप। पहले खत लिखिये, जो मैं बोलता हूँ। फिर इस समस्या पर खुल कर बातचीत करेंगे।"

तारा ने लिखने के लिए कहा—"बोलिये!"

इरफान ने खत बोलना शुरू किया—

"हैरान हूँ कि आप को किस नाम से सम्बोधित करूँ,

तस्लीम।

आप तो खैर, खुद क्या आते। मगर मैं इस वक़्त तारा के यहाँ जाने वाली हूँ। अगर कहीं व्यस्त न हों तो वहीं आजाइयेगा और मेरा यह पर्चा भी लेते आइयेगा और चुपके से मुझे ही वापिस कर दीजियेगा।

फ़कत,

पहचान पर है नाज़ तो पहचान जाईये।"

तारा ने पत्र लिख कर कहा—"सचमुच, खत तो बहुत अच्छा है। न तो यही पता चल सकता है किसके नाम लिखा है, न ही यह शुबहा हो सकता है कि किसने लिखा है। मगर लुत्फ़ तो जब आये कि रज़िया को बुलवाया जाय।"

इरफान ने कहा—"और नहीं तो, क्या रज़िया को छोड़ दिया जायेगा? यह तमाशा तो देखने लायक होगा कि शरफ़ यह पर्चा चुपके

से रज़िया को देगा और फिर रज़िया को यह शक होगा कि इस कमीने ने कोई प्रेम-पत्र लिखा है।"

तारा ने तालियाँ बजा कर प्रसन्नता से कहा—"अल्लाह जानता है, बड़े शरीर हैं आप! आखिर, आप कहानियाँ लिखनी क्यों नहीं शुरू कर देते?"

इरफान ने उसे कोई उत्तर देने की अपेक्षा एक आदमी को समझा-बुझा कर शरफ की तरफ़ रवाना किया और फिर शोफर से कहा कि गाड़ी ले कर जाये और रज़िया बीबी, नाहिद और डैनियल को ले आये। नजमा को उसने जान-बूझ कर नहीं बुलवाया, ताकि उसके कारण कहीं उस मनोरंजक गोष्ठी में अचानक विघ्न की लहर न दौड़ जाय। किन्तु जब तारा को यह ज्ञात हुआ तो वह बहुत बिगड़ी और उसने तत्क्षण ही नजमा को टेलीफान कर दिया कि—'अगर एक लाजवाब तमाशा देखना चाहती हो तो फौरन ही चली आओ।'

संयोगवश नजमा ही सब से पहले पहुँची और उसे जब तारा ने इरफान की शरारत का हाल सुनाया तो वह हँसी से दुहरी हो गई, परन्तु इस पर भी उसे दिल खोल कर हँसने का अवसर नहीं मिला क्यों कि उसी क्षण ही रज़िया, नाहिद और डैनियल आ धमके थे। ये सब यह समझ कर आयी थीं कि कदाचित जमाल या मैबुल में से किसी का पत्र आया हो; किन्तु यहाँ आ कर विदित हुआ कि यों ही चित्त व्याकुल हो रहा था—इसलिये सब को बुलवा लिया।

अब डैनियल ने कहा—"इसी दिल घबराने की वजह से हमने तुमको यह खिलौना दे रखा है।"

इरफान ने कहा—'दे रखा है' पर सब लोग गौर कीजियेगा! गोया यह धमकी दे रही है कि यह खिलौना हमारा है, हम वापिस भी ले सकते हैं। 'दे रखा है' में कर्ज़ का पहलू भी निकलता है!"

सब के सब दरवाज़े की ओर देखने लगे, इसलिये कि शरफ़ साहब अपने सूट में अजीब तरह लिपटे हुये तशरीफ़ ला रहे थे। पहले तो जमाल ने आप को सूट पहना दिया था, किन्तु आज कदाचित किसी मनिहार से पहन कर आये थे। पतलून में बराबर की चूड़ियाँ पड़ी हुयी थीं और टाई के साथ बाक़ायदा कुश्ती लड़ी गई थी, तभी तो प्रतिशोध की भावना के वशीभूत हो कर टाई भी फाँसी के फन्दे की तरह उनका गला दबाये हुये थी और श्रीमान जी की आँखें बाहर निकली जान पड़ती थीं।

इरफान ने दौड़ कर उनकी टाई का फन्दा ढीला करते हुये कहा—"मुहब्बत के यह मायने नहीं कि आप देशी इश्क में विदेशी तरीक़े से खुदकशी कर लें। ऐसी सेवाओं के लिए हमारे मुल्क में संखिया, अफीम, ज़हरबाबी वग़ैरह बहुत सी चीजें हकीमों ने पहले से ही ढूँढ निकाली हैं।"

शरफ़ ने हँसते हुये कहा—"यह ज़रा ज़्यादा कसी गई थी।"

'ज़रा ज़्यादा कसी गई थी' वाक्य पर कौन बिना हँसे रह सकता था! लेकिन शरफ़ को हँसने से ज़्यादा रज़िया को देखने की चिन्ता थी। कारण यह कि आज वह रज़िया की मुखाकृति पर अंकित उन उद्गारों का अध्ययन करने आये थे जिनसे विवश हो रज़िया ने उन्हें पत्र लिख दिया था। अस्तु, वह इस निरीह लड़की की आकृति पर कुछ पढ़ भी रहे थे। आखिर, इरफान ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर कहा—

"और भी कुछ सुना आपने, शरफ़ साहब! जमाल साहब तशरीफ ले गये हैं मसूरी, साथ में मैबुल भी!"

शरफ़ बोले—"कब.....? यानी.....दोनों?"

इरफान ने कहा—"जी हाँ, पहले मैबुल साहिबा अचानक बिना

कुछ कहे ग़ायब हो गयीं। इसके बाद....."

शरफ़ ने बात काट कर कहा—"इसके बाद भला, जमाल साहब को कैसे चैन आ सकता था! शमा के बग़ैर परवाना क्यों कर रह सकता था!"

इरफान ने कहा—"अब इन लोगों को यक़ीन आ गया है कि आप जो कुछ कहते थे—सच था।"

शरफ़ ने कहा—"अगर मुझ से पूछिये तो यह सिर्फ तय हुई बातें थीं। मैबुल साहिबा ने पहले ही कहा होगा कि—यहाँ तुम्हारे बाप-चाचा हम दोनों का एक होना नहीं देख सकते....."

इरफान ने उनका वाक्य पूरा कर दिया, "लिहाजा, कहीं भाग चलें।"

शरफ़ ने मेज़ पर घूँसा मार कर कहा—"यह है! अब देख लीजियेगा कि मसूरी के किसी गिर्जे में उन दोनों की शादी हो जायेगी। अफसोस है, इस जमाल ने अपने को कहीं का न रखा।"

इरफान ने ठंडी साँस भर कर कहा—"नाक काट ली खानदान भर की।"

शरफ़ ने कहा—"मगर मेरी नज़रों की दाद दीजिये कि जो अब हुआ है उसे मैंने कितने दिन पहले देख लिया था।"

इरफान ने कहा—"हाँ साहब, आप आदमी हों या न हों मगर दूरबीन तो यक़ीनन हैं।"

इन लड़कियों को हँसी के लगातार दौरे पड़ रहे थे। लेकिन शरफ़ इस तरह की खिलखिलाहट पर बहुत ही कम ध्यान देते थे। उनका ध्यान इस समय या तो इरफान की ओर था या कभी-कभी रज़िया को देख लिया करते थे और चुपके-चुपके अपना हाथ छुपा कर उसी कागज़ की गोली बना रहे थे।

इरफान ने उन्हें अवसर देने के लिए तारा से कुछ बेकार की बातें आरम्भ कर दी और शरफ़ ने शुभ अवसर समझ कर वह कागज़ हाथ बढ़ाते हुये रज़िया के हाथ में जो देना चाहा तो वह अक्ल की दुश्मन एक दम 'उई' का स्वर बुलन्द कर बैठना छोड़ कर खड़ी हो गयी। इरफान ने कृत्रिम घबराहट से पूछा—

"क्या हुआ ? क्या बात है ?"

शरफ़ ने शीघ्रता से कहा—"कुछ नहीं, कुछ नहीं ! शायद कोई कीड़ा-वीड़ा था।"

तारा और नजमा का दम निकला जा रहा था। पेट में साँस नहीं समाती थी। आख़िर रज़िया ने ही सहम कर कहा—"आप को शर्म नहीं आती ?"

शरफ़ ने हकलाते हुये कहा—"ज...ज...जी, यानी...वो...मेरा मतलब...यह...कि...ख़ैर...ख़ैर...ख़ैर...।"

इरफान किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा बना रहा। रज़िया अब वास्तव में आक्रोश में बोली—"इरफान भाई ! यह देखिये कागज़ ! यह शख़्स यानी.....यह.....यह....."

इरफान ने कहा—"तुम्हारी मतलब है, शरफ़ साहब ?"

रज़िया ने क्रोध से लाल हो, कहा—"जी हाँ, यही हजरत मुझे चुपके से यह कागज़ देना चाहते थे। देखिये, इरफान भाई इसे ! अब मुझे इजाज़त दीजिये !"

शरफ़ ने कहा—"वो यानी.....यानी मेरी मतलब यह है कि मैं खुद इजाज़त चाहता हूँ।"

इरफान ने विस्मय से कहा—"मगर कुछ मालूम तो हो। आख़िर हो क्या गया ? मेरी समझ में तो कुछ आया नहीं !"

यह कहते हुए इरफान ने कागज़ हाथ में ले कर पढ़ना आरम्भ किया—

"हैरान हूँ कि आप को किस नाम से सम्बोधित करूँ,

तस्लीम ।

आप तो खैर, खुद क्या आते । मगर मैं इस वक्त तारा के यहाँ जाने वाली हूँ । अगर कहीं व्यस्त न हों तो वहीं आजाइयेगा और मेरा यह पर्चा भी साथ लेते आइयेगा और चुपके से मुझे ही वापिस कर दीजियेगा ।

फ़क़त

पहचान पर है नाज़ तो पहचान जाइये ।"

इरफान ने पर्चा पढ़ने के बाद प्रश्नसूचक दृष्टि से शरफ़ को देखा तो शरफ़ ने कहा—"चुनाचे, मैं चुपके से वापिस कर रहा था यह पर्चा !"

रज़िया ने चीख कर कहा—"ख़ामोश । मैंने तुम्हें लिखा था जो तुम वापिस कर रहे थे मुझे ?"

इरफान ने नाहिद की तरफ देखा, "तुमने तो... "

नाहिद ने जल कर कहा—"अल्लाह न करे, मैं लिखूँ ।"

इरफान ने पुनः पर्चे को ध्यानपूर्वक देखा और तारा से कहा—"तारा ! यह तुम्हारी लिखाई मालूम होती है ।"

तारा ने हँसी से अनियंत्रित हो कहा—"मेरा तो है ही । मुझे तो इस लतीफे पर इतनी हँसी आ रही है कि मैं कुछ कह भी नहीं सकती ।"

शरफ़ ने भौंचक्का हो कर कहा—"आपका पर्चा ?.....तो .....यानी... ..आपने चुपके से वापिस करने को क्यों लिखा था ?"

तारा ने उसी तरह कहा—"यानी देखने के लिये कि आपने किसे पहचाना है ।"

इरफान ने एक ज़ोरदार ठहाका लगाकर कहा—

"तुम बहुत ही शरीर हो तारा ! बिना वजह बेचारी रज़िया को इस क़दर दिमाग़ी तकलीफ हुई।"

शरफ़ ने रजिया के सामने खड़े हो कर कहा—'मैं हाथ जोड़कर यानी बहुत आज़िज़ी से....."

ताहिद ने वाक्य पूरा किया, "गोया.....मुआ...यानी फी... माँगता हूँ।"

रज़िया भी हँस पड़ी और अब शरफ़ की जान में जान आयी।

रज़िया ने हँसी पर नियंत्रण पाकर कहा—"आइन्दा आप पहचानने में ऐसी ग़लती न कीजियेगा।"

इरफान ने कहा—"भई, यह तुम्हारी ज़्यादती है। मैं अगर इनकी जगह होता तो मैं भी इस मौके पर तुम्हारा ही अन्दाजा लगाता।"

रज़िया ने कहा- "वाह इरफान भाई ! आप और भी कितना पैदा करते हैं !"

शरफ़ ने कहा -"बहरहाल, मैं बकसूर था। मगर मैं फिर भी माफी चाहता हूँ।"

डैनियल ने कहा—"अब ख़त्म भी कीजिये इस किस्से को। मैं तो समझी थी कि आप इतने बहादुर हैं कि यह ख़त आप ही का निकलेगा मगर आप तो दूसरे ही एक नाम पर माफियों के पुल बाँधते हैं।"

रज़िया ने कहा—"अगर इनका ख़त निकलता तो ?"

इरफान ने कहा—"तो आप को कोई एतराज़ न होता।"

रज़िया ने ठुनक कर कहा—"ऊँह।"

तारा ने कहा—"भई इस वक्त इसका दिल कमज़ोर हो रहा है। इसे फौरन ही चाय पिलायी जाय वर्ना लड़ ही बैठेगी।"

तत्पश्चात सब इसी प्रकार की चुहलें करते हुये चाय की मेज़ पर पहुँच गये।

सत्ताईस

****

जमाल ने मसूरी पहुँच कर मैबुल को आश्चर्य में डाल दिया। किन्तु मैबुल को देख कर वह स्वयं उससे भी अधिक आश्चर्य में पड़ गया। मैबुल इतने अल्प समय में अर्थात बीस-पच्चीस दिनों में इतनी बदल गई थी कि अल्लाह्-अकबर, इस ठंडे और स्वास्थ्यप्रद स्थान पर भी वह इतनी बुझ सी गई थी कि जमाल का उसे देखकर दम सा घुटने लगा। हर समय एक छोटे से पुस्तकालय में चारों तरफ किताबों की दीवारें उठाये वह इस तरह घिरी बैठी रहती थी जैसे वह स्वयं उनमें की ही एक पुस्तक हो। प्राय: वह जमाल को किसी न किसी मनोरन्जन में उलझा कर स्वयं अपने उसी किताबों वाले कमरे में गुम हो जाया करती थी।

पुस्तकों के प्रति ऐसी अभिरुची जमाल ने मैबुल में पहले कभी नहीं देखी थी। एक-आध दिन तो वह चुपचाप तमाशा देखता रहा कि प्रात: को किसी क्षण भी उसकी आंख खुले, वह मैबुल को उसी कमरे में देखता था। कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द होता था और रात्रि को भी जब जमाल उससे विदा ले, बिछौने पर जाता था तो वह इसी कमरे का रुख करती थी।

एक-आध बार जमाल ने यों ही सरसरी तौर पर उससे पूछा भी कि यह नया शौक उन्माद कब से बना है। परन्तु मैबुल ने परिहास के इस लक्ष्य को परिहास ही में टाल दिया। अब तो जमाल को यह शंका हो चली कि मैबुल कदाचित सारी रात उसी कमरे में

रहती है। किन्तु उसका ऐसा सोचना अपने आप ग़लत सिद्ध हुआ, क्यों कि रात को जब जमाल की आँख खुली तो उस कमरे में अंधकार था और मैबुल अपने बिछौने पर सोयी हुयी थी।

आखिर, एक दिन जब मैबुल किसी से मिलने गयी हुयी थी तो जमाल ने उसी कमरे में पहुँच कर नजमा के पत्र का उत्तर देने के लिए काग़ज़ वग़ैरह जो ढूँढने शुरू किये तो उसे मैबुल की मेज़ पर एक विचित्र वस्तु मिली। मेज़ पर एक ओर कलामे-मजीद के अँग्रेज़ी अनुवाद और अँग्रेज़ी आलोचनाओं के अतिरिक्त अनेकों पुस्तकें इस्लामी साहित्य की थीं, जिनमें स्थान-स्थान पर चिन्ह लगाये गये थे। दूसरी तरफ बाइबिल, तौरियत एवं रूसी-साहित्य की बहुत सी पुस्तकें तथा कुछ अन्य धर्मों की पुस्तकें सलीके से रखी हुई थीं। पुस्तकों के बीच में मसौदा (पाण्डुलिपि) था जो स्वयं मैबुल द्वारा लिखा गया था। जमाल ने उस को खोल कर जो देखा तो यह एक अच्छी पुस्तक बन चुकी थी। दो सौ से अधिक पृष्ठ अच्छे-ख़ासे बड़े साइज़ के लिख जा चुके थे और जो पृष्ठ सामने खुला हुआ था उस की क्रम संख्या थी दो सौ छियासठ और अध्याय के शीर्षक के स्थान पर लिखा था 'इस्लाम और सोशलिज़्म'।

जमाल ने कुछ ही पंक्तियाँ पढ़ी थीं कि वह शनैः-शनैः कुर्सी पर बैठ गया और इस पृष्ठ को पढ़ने के पश्चात उसे ऐसी उत्सुकता हुई कि पिछले भी सारे पृष्ठ पढ़ डाले। किन्तु उसे यह भय भी था कि कहीं मैबुल न इस बीच आ धमके। क्यों कि मैबुल उस से छिपा कर यह पुस्तक लिख रही थी। अतः उसकी आज्ञा के बिना उसकी पाण्डुलिपि को पढ़ना केवल अपराध ही नहीं था; वरन् यह भी संभव था कि मैबुल इस कार्य को अनुचित समझती। अतएव इस समय वह पाण्डुलिपि को ज्यों का त्यों छोड़ कर वहाँ से चला आया, किन्तु अब उसके मस्तिष्क में यह अभिलाषा प्रबल हो उठी कि किसी तरह पाण्डुलिपि पढ़ी जाय। अतः

उस दिन तो जमाल को अवसर न मिला, अलबत्ता, दूसरे दिन मैबुल उस से दो घंटे की आज्ञा ले बाहर गयी तो खुद उसने इस अवसर को उपयुक्त समझ पाण्डुलिपि को पढ़ना आरम्भ किया। वह पढ़ता जाता था कि उसकी आँखें, उसका मस्तिष्क, उसके हृदय और आत्मा में प्रकाश उत्पन्न होता जा रहा था।

मैबुल ने इस पुस्तक का नाम 'जुस्तज़' रखा था और उसका आरम्भ उसने एक कहानी की तरह किया था कि वह स्वयं किस सीमा तक ग़ैर-मज़हबी लड़की थी। विलायत से हिन्दुस्तान आने के बाद तक उसे अगर किसी सिद्धान्त पर विश्वास था और किसी धर्म को उसका हृदय स्वीकार करता था तो उसका यह सिद्धान्त, नियम या उद्देश्य कुछ भी कहिये; सोशलिज़्म का नशा था। जिस में वह डूब चुकी थी। और केवल ईसाईयत ही नहीं बरन् प्रत्येक धर्म के विरुद्ध उसके मन में घृणा के भाव थें। परन्तु नजमा से भेंट होने के पश्चात और नजमा के धार्मिक उपदेशों से और स्वयं नजमा के व्यक्तित्व से प्रभावित हो कर इस लड़की ने सारे धर्मों पर एक आलोचनात्मक दृष्टि फेंकी और नजमा ने इस्लामी साहित्य एकत्रित करने में उसकी सहायता की। यहाँ तक कि पहले उसने मनोरंजन के दृष्टिकोण से उस साहित्य का पढ़ा ताकि अपने सोशलिज़्म के सिद्धान्त के समक्ष उसकी धज्जियाँ उड़ाये और नजमा को विश्वास दिलाये कि वह भी किस वहम में मुब्तला है! किन्तु उस साहित्य को पढ़ने और प्राय. नजमा से तर्क करने और अपने सोशलिज़्म के सिद्धान्त को सामने रखने के बाद जब उसने गम्भीरता से विचार किया तो नजमा को पराजित करने, नजमा पर हँसने और नजमा को शर्मिन्दा करने की अपेक्षा वह स्वयं नजमा की कृतज्ञता से पानी पानी हो गयी थी। नजमा ने उसे एक भ्रान्ति से निकाल कर वास्तविकता का मार्ग दिखाया।

उस लड़की ने लिखा था—"नजमा ने मुझे वर्धगाँठ के उपलक्ष्य

में उपहार-स्वरूप संसार की वह सब से बड़ी पुस्तक दी जिस ने मेरे जीवन को सँवारने में मेरी पूरी सहायता की और उस किताब यानी कलामे-मजीद के अध्ययन उसका उद्देश्य, उसका लक्ष्य और उसके संकेतों को समझने की कोशिश करने के बाद मुझे मालूम हुआ कि मैं अब तक पथ-भ्रष्ट थी। अब अपने को पहचान पायी हूँ और अपने आपे में आने के बाद अब मेरी जिस वस्तु की खोज के प्रति जिज्ञासा बढ़ी वह वस्तु थी वास्तविकता इस जुस्तजू के लिये मैंने और अधिक साहित्य एकत्रित किया। नजमा से परामर्श लिये और उसने मुझे यह बताया कि कलामे-पाक में ही तुम अपने दिल का सुकून, अपनी खोज की मंज़िल और अपनी तलाश की आख़िरी हद तलाश करो—तुम को मिल जायेगी। किन्तु मैंने उस से यही कहा कि यह समझदारों के समझने की चीज़ है। पहले मुझे इसे समझने की योग्यता दूसरी किताबों द्वारा प्राप्त करनी है। अतएव, नजमा की बतायी हुई कुछ किताबें मैंने प्राप्त कीं। इस के बाद बहुत सा साहित्य अपने आप जमा किया और अन्त में मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची कि खुद समझने के बाद मुझे दूसरों को भी कुछ समझाना चाहिये। इसलिये यह परीक्षण मैं इस दुनियां की दृष्टि में पेश कर रही हूँ जिस के प्रति अभी कुछ दिन पहले तक मैं स्वयं उत्सुक थी।

इस भूमिका के बाद मैंबुल ने ऐसी-ऐसी दलीलें और ऐसे ठोस और अकाट्य प्रमाणों द्वारा इस्लाम धर्म पर प्रकाश डाला था। और अन्य धर्मों के अतिरिक्त सोशलिज़्म की तो ऐसी आलोचना की थी कि जमाल स्वयं विस्मित रह गया। सोशलिज़्म का वह स्थान जो अब तक उस की दृष्टि में कायम था—पाण्डुलिपि की प्रत्येक नये पृष्ठ के पढ़ने के बाद, महत्त्वहीन और मिथ्या-भ्रम सा प्रतीत होने लगा।

वह आधी पाण्डुलिपि पढ़ पाया होगा कि मैंबुल के प्रत्यावर्तन का समय निकट आ गया। इसलिये वह इस चोरी से हाथ उठा कर साहूकारों

की तरह बरामदे में आ कर धूप सेकने लगा।

दूसरे और तीसरे दिन उसने फिर उसी तरह की चारी की। आखिर चौथे दिन पाण्डुलिपि समाप्त कर जब वह बैठा तो आज भी पर्वत की ऊँचाई के समक्ष गहरे-गहरे गढ़े विद्यमान थे, जिनमें बादल रुई के लच्छों की तरह उड़े चले जा रहे थे। किन्तु जमाल को लग रहा था जैसे यह सब वह सिद्धान्त है जिन्हें वह अब तक पहाड़ समझे हुये था ; परन्तु वास्तव में वह सब थे रूई के लच्छे ही। इस पर भी आपत्ति यह कि समीप पहुँच कर देखो तो उनका कोई अस्तित्व भी नहीं। स्पर्श करने का प्रयास कीजिये तो कुछ हाथ न आये। अब उनकी समानता में मैबुल की दलील पर्वत की ऊँचाई का हासिल किये हुये उसके सामने मौजूद थीं।

वह इसी दुविधा में फँसा था कि मैबुल आ गई और जमाल को विवश हो कर उसके समक्ष अपने को संयत करना पड़ा। मैबुल ने आते ही पूछा—"तुमने खत लिखा ?"

जमाल ने कहा—"हाँ, लिख दिया !"

मैबुल ने कहा—"क्या लिखा है ?"

जमाल ने निश्चिंतता से कहा—"यही लिखा है कि कल हम लोगों ने वही किया जो तुम चाहती थी और अब लोग 'हनीमून' मनाने के लिए किसी एकान्त स्थान में जा रहे हैं !"

मैबुल ने हैरानी से कहा—"यह तो झूठ है !"

जमाल ने कहा—"मगर हमारी नीयत झूठ बोलने की नहीं है ! बल्कि नतीजे पर पहुँच कर यह एक दिलचस्प मजाक साबित होगा !"

मैबुल ने आग्रहपूर्वक कहा—"नहीं, हरगिज नहीं ! क्या तुम

समझते हो कि नजमा पर इसका असर नहीं होगा। नजमा के अलावा यह खबर तुम्हारे वालिद और बड़े अब्बा तक भी पहुँचेगी और वह सिर पीट लेंगे। तारा खफ़ा हो जायेगी, इरफान परेशान हो उठेगा! तुमने उस खत का क्या किया ?"

जमाल ने कहा—"अभी वह मेरे जहन में है।"

मैबुल ने साश्चर्य पूछा—"यानी..... ?"

जमाल बोला—"यानी यह कि मैं यही लिखने वाला हूँ। तुम नहीं जानती हो कि हम लोगों के लखनऊ पहुँचने के बाद जब सब के सब हमारा 'बायकाट' करेंगे। सिर्फ नजमा हमारा स्वागत करेगी, हर तरह से बेगानगी बरती जायेगी तब मुझे बड़ा लुत्फ आयेगा। और फिर जब यह हकीकत खुलेगी, उस वक्त औरों को भी लुत्फ आयेगा।"

मैबुल ने कहा—"लेकिन नजमा को फिर कितना सदमा होगा!"

जमाल ने कहा—"नहीं, मेरे ख्याल में अब उसे भी सदमा नहीं होगा। मुझे तो अब यह नज़र आ रहा है कि उसके सदमा करने के दिन गुज़र गये।"

मैबुल ने सहसा उछल कर कहा—"क्या तुम सच कह रहे हो जमाल ?"

जमाल ने उत्तर दिया—"मैं सच कह रहा हूँ कि म झूठ नहीं बोल रहा हूँ। मगर मुझे नजमा से यह शिकायत है कि उसने तुम्हें मुसलमान बना दिया और मुझ पर वह ध्यान नहीं दिया जो उसे देना चाहिये था।"

मैबुल ने विस्मय से कहा—"क्या मतलब ?"

जमाल ने कहा—"अब बनो नहीं मैबुल! नजमा नें तुम्हें उस ऊँचाई पर पहुँचाया है कि तुम मुझे बेवकूफ़ जरूर समझती हो

लेकिन 'जुस्तजू' के कुछ ही सफे पढ़ने के बाद मैं उभरने की कोशिश कर रहा हूँ !"

मैबुल ने कहा—"तुमने मेरा मसौदा क्यों पढ़ा ?"

जमाल गम्भीर हो, बोला—"मैंने नहीं पढ़ा ! उसे तो सारी दुनिया पढ़ेगी और अब हम दोनों मिल कर उस मसौदे को जल्द से जल्द खत्म कर देंगे ।"

मैबुल ने खुश हो कर कहा—"तब तुम बेशक नजमा के साथ यह खत वाला मजाक कर सकते हो !"

इन दोनों ने बैठ कर पत्र का विषय तैयार किया और अंत में वही पत्र नजमा को प्रेषित कर दिया । तत्पश्चात इन दोनों का मनोरंजन उस पाण्डुलिपि पर केन्द्रित हो गया, जिसे अब तक केवल मैबुल ही लिख रही थी ! अँग्रेजी में ही लिखना किताब को पर्याप्त न समझा गया वरन् यह तय हुआ कि इस पुस्तक के अँग्रेजी में छपने के पश्चात उर्दू अनुवाद भी जमाल ही से कराया जायेगा ।

आखिर चन्द दिनों में ही 'जस्तजू' की अँग्रेजी में पाण्डुलिपि तैयार हो गयी, जिस के लेखक मैबुल और जमाल दोनों थे और इस पुस्तक को समर्पित किया गया था —

नजमा के नाम ।

अठाइस

****

जिस समय नजमा के नाम जमाल का यह पत्र आया, उसकी विचित्र दशा थी। उसके आँसू भी निकल रहे थे कि आज उसके प्रेम की पराजय हुई थी, उसका हृदय भी हँस रहा था—कारण यह था कि उसने सिद्धान्तों पर, धर्म पर, उद्देश्य पर प्रेम जैसी वस्तु की आहुति दे दी थी। अन्त में वह बड़ी कठिनाई से इस दुविधा से घंटों के प्रयास के पश्चात छुटकारा पा सकी। और उसने सबसे पहला काम यह किया कि अपने यहाँ सबको एकत्रित करने की अपेक्षा स्वयं तारा के यहाँ जा बैठी।

इरफान और तारा बैठे चाय पी रहे थे कि नजमा ने वहाँ पहुँच कर वह पत्र उनके समक्ष प्रस्तुत कर दिया। उन दोनों ने साथ-साथ उस पत्र को पढ़ा और दोनों ने इकठ्ठे ही नजमा की आकृति पर अपना दृष्टि टिका दी जो मुस्करा रही थी।

नजमा ने अपने स्वर में प्रसन्नता का भाव उत्पन्न कर कहा—मैबुल, हमारी भाभी जान मैबुल !"

तारा ने क्रोधित हो कहा—"चुप रहो, नजमा आपा। यह सब तबाही तुम्हारी फैलायी हुई है। मगर मुझे जमाल भाई जान से यह उम्मीद इस पर भी न थी।"

इरफान पूर्णतया स्तब्ध था। आखिर, उसने बड़ी कठिनाई से कहा—"कम से कम जमाल भाई को यह ख्याल करना था कि उनके वालिद और बड़े अब्बा मौजूद हैं।"

नजमा बोली—"अब तो हर दशा में हम सब का काम यह है कि अब्बा मियाँ और बड़े अब्बा को किसी तरह राज़ी करें।"

तारा ने कहा—"राज़ी करना तो बाद की बात है। पहले यह सोचो कि किस में इतनी हिम्मत है कि यह ख़बर उन लोगों को सुनाये।"

इरफान ने कहा—"और इस खबर को छुपाना और भी ग़लत है। जो कुछ बकना-झकना चीखना-चिल्लाना है; वह अगर अभी ख़त्म हो जाय तो अच्छा है। इन लोगों के आने के बाद अगर एकदम से यह बिजली गिराई गयी तो न जाने बात किस हद तक बढ़ जायेगी।"

तारा ने कहा—"तो आप ही ख़बर सुनाइयेगा। हम में तो इतनी हिम्मत है नहीं कि वह खुशख़बरी लेकर उन तक जायें। और नजमा तो कह ही नहीं सकती। बड़े अब्बा यों ही इनसे जले बैठे हैं।"

इरफान ने कहा—"मैं इसकी तरकीब बताता हूँ। यह ख़बर पहले बड़ी अम्मा और अम्मी जान को सुनाई जाय। उनसे खुद ही बुजुर्गों तक पहुँच जायेगी। पहले तो हम लोग कुछ कहेंगे-सुनेंगे नहीं, मगर जब ज़रा गुस्सा ठंडा हो तो सिफारिशें शुरू कर देंगे।

तारा ने कहा—"सच पूछो तो मेरा दिल ही सिफारिशों को नहीं चाहता। मुझे उन दोनों पर और नजमा आपा पर ऐसा गुस्सा है कि मैं क्या कहूँ!"

नजमा ने तारा को गले से लगाते हुये कहा—"मेरी गुड़िया अब गुस्से को रहने दो। अब तो यह बात हो चुकी है। मगर मैं अब भी यही कहती हूँ कि यह बड़ी अच्छी जोड़ी है। और देख लेना, इन दोनों का घर जन्नत बना रहेगा!"

इरफान कहने लगा—"और ख़ुद जनाबे आला.....?"

नजमा ने प्रसंग बदल कर कहा—"तुम सब की ख़ुशी से क्या मैं

अलग हूँ ! जिसे मैबुल सा भाभी मिली, उससे बढ़कर खशी और किसे हासिल हो सकती है !"

इन लोगों के बीच यह वाद-विवाद चल रहा था कि इसी बीच तारा की वालदा अप्रत्याशित रूप से आ धमकीं। इन सब ने घबरा कर उस प्रसंग को छोड दिया और खड़े होकर उन्हें प्रणाम किया। वह आशीष देती हुई बैठ गईं तो नजमा ने कहा—

"चची अम्मा ! एक खुश खबरी सुनानी है, मगर पहले मिठाई का इन्तज़ाम कर लीजियेगा।"

वह बड़ी बूढ़ियों की तरह शुभ समाचारों से वंचित थीं। कहने लगीं—"अरे बेटा, हमारे नसीब में खुशखबरी कहाँ ! खुशखबरी ही सुनानी होती तो हमें पहले ही नसीबों का रोना क्या रुलवातीं। मगर इसमें तुम्हारी भी खता नहीं। जमाल था ही ऐसा कि तुम उसके साथ और उसकी बदौलत हम सबके साथ ऐसा सलूक करतीं।"

तारा की वालदा ने आज से पूर्व इतनी कठोर बातें कभी भी नजमा के मुँह पर नहीं कही थीं अतः नजमा को दुःख होना स्वाभाविक थी ; किन्तु उनकी शिकायत में भी स्नेह की जो पुट थी, उसे जल्द ही समझ कर नजमा बोली—"चची अम्मा, यह वक्त खुश होने का है ! आप की चाँद सी बहू आ चुकी है।"

तारा की वालदा ने चौंक कर कहा—"ऐं..... !.....किस की बहू ? कैसी बहू.....?"

इरफान ने मुस्कराते हुए कहा—"जमाल भाई ने मसूरी में मैबुल से शादी कर ली है !"

तारा की वालदा की आकृति का रंग उड़ गया—"भई, बूढ़ों से मज़ाक न किया करो ! जानते हो, मैं तुम्हारी माँ हूँ !"

तारा ने कहा—"सचमुच, अम्मीजान ! झूठ नहीं ! आज ही ख़त आया है। यह देखिये ख़त !"

तारा की वालदा ने काँपते हाथों से पत्र लेकर पढ़ा और स्तब्ध रह गईं। बहुत देर तक वह कुछ बोलने में असमर्थ रहीं। तत्पश्चात बहुत ही भरी हुई आवाज़ में बोलीं —"ग़ज़ब हो गया !"

इरफान ने कहा—"अम्मीजान ! अब आप ही ऐसी बातें कहेंगी तो फिर अब्बा जान और बड़े अब्बा न जाने क्या आफ़त मचा देंगे। अब तो जो कुछ होना था, हो गया। मेरे ख्याल में अब दोनों के गुस्से और नाराज़गी को दूर करने की कोशिश कीजिये।"

तारा की वालदा ने कहा—"मुझे उम्मीद न थी कि जमाल इस तरह मेरी उम्मीद का खून करेगा। इस ख़बर का जो असर उसके बाप और बाप से ज्यादा प्यार करने वाले बड़े अब्बा पर होगा ; उसका अन्दाज़ा मैं कर सकती हूँ। तुम लोग नहीं कर सकते।"

यह कहती हुई वह पत्र हाथ में लिए ही वापिस लौट गईं। और यह तीनों देखते ही रह गये। तदोपरान्त जो कुछ हुआ वह प्रकट है। दोनों घर शोकाकुल वातावरण तथा मरघट की सी शून्यता से भर गये।

जमाल के वालिद निर्णय कर चुके थे कि जमाल का मुँह जीवन-पर्यन्त न देखेंगे। नजमा के वालिद कुछ बोलने की अपेक्षा कुछ मौन थे और मन ही मन घुल रहे थे। केवल यही नहीं अपितु दो-तीन दिन खूब उधम मचा। मौलवी अब्दुल अहद साहब रोये और उनकी पत्नी भी रोयीं। मौलवी समद साहब ने नजमा पर अपना दबा हुआ क्रोध पुनः उभारा और अन्त में तीसरे दिन तो क़यामत ही हो गई जब मौलवी अब्दुल अहद साहब ने अपने बड़े भाई के पास आकर अपना रजिस्टर्ड वसियत नामा दिखाया जिसमें जमाल को एक-एक पाई से वंचित करके कुल सम्पत्ति तारा और नजमा के नाम कर दी गई थी।

मौलवी अब्दुल समद साहब ने उस कागज़ को देखकर पहली बार अपना मौन भंग किया। "यह हरगिज नहीं हो सकता! यानी मेरा मतलब यह है कि वाहियात है।"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"यह तो खैर, जो कुछ होना था हो गया है। अब मैं आपसे इजाज़त लेने आया हूँ कि मेरा इरादा हज्ज करने का है और मैं चाहता हूँ कि उस नामाकूल के आने से पहले ही चला जाऊँ, वरना भाई जान, मैं नहीं जानता कि मेरा क्या हाल होगा!"

अब्दुल समद साहब ने कहा—"वह तुमने एक शेर सुना है—

हंगामा है क्यों बरपा, शादी ही तो कर ली है,
डाका तो नहीं डाला, चोरी तो नहीं की है।"

अब्दुल अहद साहब की आँखों में आँसुओं की बाढ़ उमड़ पड़ी। रुद्ध कंठ से बोले—"भाईजान, मुझे इजाज़त दे दीजिये! मेरा यहाँ अब दिल बिल्कुल नहीं लग रहा है। और मुझे हृदय-गति के दौरे लगातार पड़ रहे हैं।"

अब्दुल समद साहब ने अपने भाई को गले से लगाकर कहा—"मियाँ अहद! मेरे होते हुए तुम्हें आखिर किसी किस्म का सदमा... यानी मतलब यह.....कि गोया फिक्र क्यों कर रहे हो? तुम समझते हो कि मुझे कम सदमा हुआ है! मगर मैं उनकी रज़ामन्दी में ही राजी हूँ। और साहबज़ादे की वापिसी की इन्तज़ार कर रहा हूँ। वह लड़की बड़ी नेक है, लेकिन जमाल को मज़हबी फर्क के ख्याल को भुलाना नहीं चाहिये था। इस पर भी गोया.....फिर...भी.....बहरहाल उसे आने दो!"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"म उसकी सूरत तक देखने का इच्छुक नहीं हूँ। उसने हम दोनों की इज़्ज़त में जो बट्टा लगाया है,

ऐसा कर चुकने पर वह अपनी मनहूस शक्ल मुझे दिखाने का कम से कम इरादा न करे !"

अब्दुल समद साहब ने अपने भाई को बहुत कुछ धैर्य बँधा कर शान्त किया और उस वसीयतनामा के सम्बन्ध में केवल यह कह दिया, "खैर यह ठीक है। इसके बदले यह हो सकता है कि मैं अपनी जायदाद की वसीयत जमाल के नाम कर दूँ, बशर्ते कि वह मसूरी से वापसी पर और इस शादी के बाद वाक़ई मुसलमान भी रहा हो। मैंने उसे कल ही तार दे दिया है कि फौरन मुझ से मिलो।"

अब्दुल अहद साहब ने कहा—"तार ! यह आपने क्या किया...?"

अब्दुल समद साहब ने बात काट कर कहा—"ऐसा करने ही में भलाई थी। फिलहाल, तुम खामोश रहो। अजान हो रही है शायद।"

उन्तीस

****

जमाल की ट्रेन जिस समय लखनऊ पहुँची, स्टेशन पर इरफान और तारा के अतिरिक्त बुर्के में नजमा भी थी। किन्तु सबसे पहले यही बुर्के वाली महिला आगे बढ़ी और एक हार मैबुल के गले में डाल दिया और उसे अपने कलेजे से लगा लिया। उनसे मिले तो इरफान तारा भी, किन्तु कुछ बझे-बुझे से।

इरफान ने सामान उतरवा कर जमाल से कहा—"मेरी राय यह है कि पहले सब भाभी के यहाँ चलें। वहाँ पहले प्रोग्राम तय कर लें। इसके बाद जो राय तय हो, उस पर अमल किया जाये।"

अत: सब के सब मैबुल के यहाँ आ गये। और सामान रखवा कर जब सब इतमीनान से बैठ गये तो इरफान ने यहाँ के सारे हालात, मौलवी साहब की वर्त्तमान दशा और इन दोनों घरों के वातावरण पर एक हल्का सा प्रकाश डालते हुए कहा—"फिलहाल, भलाई इसी में है कि आप अकेले अपना सामान लेकर बड़े मौलवी साहब के यहाँ चलें। वह आपकी इन्तज़ार में हैं। इसके बाद अगर स्थिति ठीक रही तो फिर भाभी को बुला लेंगे।"

मैबुल ने कहा—"यह ग़लत है। मैं भी इनके साथ चलूँगी। झगड़े की सारी जड़ तो मैं हूँ! मैं बड़े अब्बा को बताऊँगी कि इसमें मेरा बिल्कुल कसूर नहीं है। मुझे जबदस्ती बहू बना कर इन पर लादा

गया है। ग़लतफ़हमी और इल्म न हो की वजह के वह सारा कुसूर मेरा समझ रहे होंगे।"

तारा ने कहा—"नहीं मैबुल ! ऐ तोबा, भाभीजान ! यह बात नहीं बल्कि मुमकिन है कि वे इस वक्त जमाल भाई से अकेले में कोई बात करना चाहते हों।"

मैबुल ने कहा—"अकेले में क्या बात हो सकती है, यही ना कि मुझे छोड़ दें, अब भी अपने फैसले पर दोबारा नज़र डालें ! मुझे छोड़ें या मेरी वजह से बाकी सब को ! मैं इसी दिन और इन्हीं ख़यालात की वजह से अपनी जान बचा कर यहाँ से मुँह काला कर गयी थी। लेकिन मुझे घेरा गया। मेरा पीछा किया गया और मुझे गिरफ़्तार कर शादी के लिए मजबूर किया गया है। तो अब दुनिया की कोई ताकत मुझे इनसे अलग नहीं कर सकती।"

नजमा ने कहा—"यह तो क़यामत तक नहीं हो सकता। अगर इस किस्म की बातें सुनना भी जमाल भाई ने बर्दाश्त किया तो अच्छा न होगा।"

मैबुल ने कहा—"मगर मैं पूछती हूँ कि जब इस हंगामे की उम्मीद थी, इन स्थितियों से टक्कर लेने की आशा थी तो आख़िर यह चोरियाँ क्यों हो रही हैं ? मुझे इनके साथ क्यों नहीं भेजा जाता ? मैं भी तो सुनूँ कि वे बुजुर्ग जो अब सिर्फ इन्हीं के बुजुर्ग न रह कर मेरे भी कोई हैं ; आख़िर, मेरे बारे में क्या कहते हैं ! मैं भला अपनी पोजीशन क्यों न साफ करूँ !"

जमाल ने कहा—"मेरी राय यह है कि आज यह मुलाकात स्थगित कर, कल पर रखी जाय ताकि उन हालात की रोशनी में जिनका अब इल्म हुआ है ; मैं और मैबुल दोनों उन बुजुर्गों से मिलने को तैयार हो जायें—वर्ना ऐसी ही जल्दी है तो सिर्फ मैं ही मिल लूँ और मैबुल

तब उसके पास जायें जब वे इन्हें बहू मान कर ससुर की हैसियत से बुलवायें।"

मैबुल ने कहा—"बहू मान कर.....? यह भी खूब...अब तो बहू मानना ही पड़ेगा ! मैं खुद मनवाऊँगी। मैं उनसे जाकर कहूँगी कि—आदाब अर्ज़ । मैं कानूनी तौर पर आपकी बहू हूँ और आप मेरे खसम....."

जमाल ने कहा—"अच्छा-अच्छा, मैं चन्द मिनटों की इजाज़त चाहता हूँ। अभी हाज़िर हुआ।"

यह कह कर जमाल मैबुल के ड्रेसिंग रूम में चला गया और पहले तो स्नानागार से जा कर वज़ू किया। तत्पश्चात चारों ओर से कमरा बंद कर उसने नमाज़ पढ़ी। उसके लौटकर आने के पश्चात मैबुल भी थोड़ी देर के लिए टल गई तो इरफान ने कहा—"भाभी का जोक बिल्कुल सही है। उन्हें अब इस हालात में अपनी कमीहीन महसूस हो रही है। मगर इस वक्त अर्ज यही है कि आप अकेले चलें।"

तारा ने कहा—"भाईजान, माफ कीजियेगा ! अगर आप को ऐसा ही करना था तो भी एक से एक खूबसूरत सूरतें मौजूद थीं। आप पहले बुजुर्गों को तो समझा बुझा लेते..."

नजमा ने उसकी बात काट कर कहा—"कैसी बातें कर रही हो तारा ? हमारे बुजुर्ग इस किस्म की बातों को मानने के आदी न हीं हैं और यह भी उनकी बुजुर्गी है कि वह इस बात के इतने खिलाफ़ हैं। लेकिन चूँकि बजुर्ग हैं, इसलिए भलाई इसी में है कि सिर झुका कर उनकी बात सुनी जाय। लेकिन मैबुल की बात भी सही है।"

जमाल ने कहा—"तुम लोग यहीं ठहरो, मैं मैबुल को समझाये देता हूँ।"यह कह कर जमाल वहीं चला गया, जहाँ जुबैदा नमाज़ पढ़ रही थी।

जुबैदा कोई नया नाम नहीं है। यह मैबुल का ही इस्लामी नाम था, जो मसूरी में मौलवी फय्याज़ अली साहब ने मुस्लिम धर्म की अनुयायिनी बनाते हुए दिया था और जिसे जमाल ने भी पसंद किया था।

जमाल ने मैबुल के पास पहुचते ही कहा—वैल डन जुबैदा ! खुदा की कसम ऐसी सफल एक्टिंग की है कि मैं कल्पना भी नहीं कर सका था।"

मैबुल ने कहा—"यह सब आप की दुआ से है वर्ना मैं किस काबिल हूँ।"

जमाल ने कहा—"अब यह तो बताओ कि इस मज़ाक में हमारे बुजुर्ग लोग जो लपेटे में आगये है, उन्हें कैसे निकाला जाय ? जाहिर है कि उनसे तो कोई मज़ाक हो ही नहीं सकता।"

मैबुल ने कहा—"इसकी तो बहुत ही आसान सूरत है। वहाँ चले जाओ और बड़े अब्बा से कहना—मैं आप से एकान्त में बातचीत करना चाहता हूँ। इसके बाद उन्हें सब कुछ बता देना।"

जमाल बोला—"यही मैं भी सोच रहा था। तुम हर दशा में अपनी ऐक्टिंग जारी रखो और नमाज़ पढ़ चुकी हो तो आओ !"

यह दोनों जब बाहर आये तो जमाल स्वयं बोला—"लो भई इरफान ! मैंने इन्हें समझा दिया है। इन्हें बाद में बुला लिया जायेगा। फिलहाल, मैं चलता हूँ तुम्हारे साथ ! और मेरी राय तो यह है कि तारा और नजमा को भी यहीं छोड़ दो। अभी थोड़ी देर में हम लोग वापिस आजायेंगे ही। अगर मैबुल को बुलाया गया तो यह इनके साथ ही आजायेंगी।"

इरफान ने उसका समर्थन किया और तब दोनों ने वहाँ से प्रस्थान किया।

जिस समय इरफान जमाल के साथ पहुँचा, मौलवी अब्दुल समद

साहब उसी की राह देखते हुए बाहर टहल रहे थे। जमाल को देखते ही वक्ष से लगा लिया। हाँलाकि इस समय उनका हृदय टूटा हुआ था और उन्हें लग रहा था कि यह वस्तु अपनी थी और अब इस सीमा तक अपनी नही रही, जितना समझा जाता था। तत्पश्चात जमाल के कधे पर हाथ रख कर उसे अपनी मर्दाना बैठक मे लेकर चले गये।

इरफान ने स्वयं ही कहा—"मै जब तक अन्दर मिल आऊँ।"

इरफान के जाने और उन लोगो के बैठक म पहुँचने के बाद मौलवी अब्दुल समद साहब ने अत्यन्त नम्र शब्दों मे कहा—"बटे, यह ख़बर जो मैंने सुनी है, उस पर मुझ रज तो ज़रूर हुआ है मगर मैं तुमसे सिर्फ यह सुनना चाहता हूँ कि तुम अपने मजहब पर क़ायम हो और तुम्हारी शादी इस्लामी तरीके से हुई है।"

जमाल ने हँसकर कहा—"बडे अब्बा! मैंने कभी आपके सामने कोई गुस्ताखी नही की। मगर आज मैं यह चाहता हूँ कि आप मेरे एक खेल मे शामिल हो जायें!"

मौलवी साहब ने ध्यानपूर्वक उसकी ओर देखते हुए कहा—"यानी मेरा मतलब यह है.....कि क्या मतलब?"

जमाल उसी प्रकार हँस कर बोला—"आप इस राज को अभी भी कुछ दिनों तक खुलने न देंगे!"

मौलवी साहब ने कुछ न समझते हुये कहा—"किस राज को? यानी मेरा मतलब यह है कि किस बात को?"

जमाल ने कहा—"इसी बात को बड़े अब्बा, कि मेरी शादी नहीं हुई है।"

मौलवी साहब भौचक्के हो, बोले—"यानी.....क्या.....गोया तुमने मैबुल से शादी नहीं की है!"

जमाल ने कहा—"जी नहीं ! वह मेरी बहन है। मैंने यह मज़ाक किया है ज़रा नजमा को बनाने और इरफान और तारा को नाराज़ करने के लिए। वर्ना ....."

मौलवी साहब ने प्रसन्नतावश बात काट कर कहा—"अरे मियाँ समझने तो दो ! अब तुम फिर से कहो कि क्या यह शादी की ख़बर.....गोया.....यानी मैबुल की शादी की ख़बर ग़लत है।"

जमाल ने कहा—"बिल्कुल ग़लत बड़े अब्बा ! महज़ मज़ाक।"

मौलवी साहब ने वृद्धावस्था में भी युवकों की नाईं उछल कर जमाल को अपने हृदय से लगाते हुये कहा—"तुम ने तो बेटा, अपने इस मसखरेपन से हम सब का ही दम निकाल दिया था। मगर मैं जानता था गोया.....यानी मेरा मतलब यह है कि मुझे यक़ीन था कि मेरा जमाल ऐसा हरगिज.....गोया बिल्कुल नहीं हो सकता।"

जमाल ने तत्पश्चात इस विषय से सम्बन्धित सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया कि उसे नजमा ने किस-किस तरह विवश किया, खुद किस तरह मैबुल को बाध्य किया। यहाँ तक कि मैबुल बिना किसी पूर्व सूचना के चुपचाप मसूरी चली गयी। नजमा ने उस का पता लगाया और मुझे वहाँ भेजा। वहाँ जा कर मैंने मैबुल को इस रंग में पाया और उसकी किताब जुस्तजू का मसौदा पढ़ने के बाद खुद मेरे सिद्धान्तों में परिवर्तन हुये और फिर हम दोनों ने मिल कर उस किताब को पूरा किया और साथ ही साथ नजमा के साथ यह मज़ाक किया गया।

मौलवी साहब इस विवरण को सुनते जाते थे और खुशी से फूले नहीं समाते थे। विशेषकर जब उन्हें यह मालूम हुआ कि केवल मैबुल ही इस्लाम की अनुयायिनी नहीं बनी, अपितु जमाल भी सही मायनों में मुसलमान बन चुका है तो एक बार झपट कर उसके भाल का बड़े मियाँ ने इस बुरी तरह चुम्बन लिया कि वह बेचारा सहम सा गया।

मौलवी साहब ने हर्ष-विह्वल हो कर कहा—"बेटे, तुम ने बहुत मुश्किल काम मुझे सौंपा है कि मैं ऐसी खुशी की ख़बर किस तरह छिपा लूँ। आखिर, अब इस मज़ाक को ख़त्म कर देने में क्या हर्ज है ?"

जमाल ने उत्तर दिया, "बड़े अब्बा ! मज़ाक का आनन्द तब आयेगा जब मेरी माँ मेरे बनावटी परिवर्तन को देख कर पछतायेगी और उस के दिमाग़ में ही यह ट्रेजेडी कामेडी में बदल जायेगी !"

मौलवी साहब ने कहा—"मगर.....यानी.....गोया.....अच्छा तो मियाँ अहद को इस सिलसिले में अपना राज़दार बना लूँ तो कोई हर्ज तो नहीं है ? बात यह है कि अब हम दोनों को नजमा की शादी के इन्तज़ाम.....गोया.....नजमा की शादी.....यानी मतलब यह है.....कि तुम्हारी शादी.....मुख़्तसर यह.....गोया शादी के इन्तज़ाम भी तो करने हैं।"

जमाल ने कहा—"लेकिन उन के जरिये से यह ख़बर फैल कर मेरा सारा ही खेल ख़राब कर दे तो ?"

मौलवी साहब ने कहा—"ना-ना-ना-ना.....मेरा मतलब है कि नहीं-नहीं-नहीं-नहीं ! ऐसा तो हो ही नहीं सकता ! उस ग़रीब की उदासी को भी ख़त्म करना है।"

नमाज़ का समय तो हो चुका था। अतः चचा-भतीजे ने साथ ही साथ नमाज़ पढ़ी और ठीक उस समय जब कि यह नमाज़ के निमग्न थे ; इरफान ने यह दृश्य आश्चर्य से देखा कि जमाल भी नमाज़ पढ़ रहा है।

नमाज़ से निवृत्त हो कर जब जमाल इरफान के साथ वापिस लौटा तो इरफान स्वयं बोला—"मेरा ख्याल है कि हालात ठीक हो गये हैं।"

जमाल ने कहा—"हाँ, सब ठीक है। मैंने बड़े अब्बा को समझा दिया है।"

जमाल ने कहा—"यह समाज गोया उसी समझाने की एक कड़ी थी!"

इरफान ने कहा—"मियाँ, सब ही कुछ करना पड़ता है। दुनिया में ज़िन्दा रहना आसान नहीं।"

इरफान को जमाल के इस परिवर्तन पर विस्मय था। परन्तु स्थिति सँवर जाने की प्रसन्नता में उसने परिवर्तन पर अधिक ध्यान न दिया।

तीस

*****

जमाल जिस समय से मौलवी अब्दुल समद साहब से भेंट कर वापिस लौटा था, घर का नक्शा ही कुछ और था। उदासी ताज़गी में, निराशा आशा में और मृत्यु का सा सन्नाटा चहल-पहल में परिवर्तित हो चुका था। मौलवी अब्दुल अहद साहब भी प्रसन्न दीख रहे थे और दोनों घरों में कुछ विचित्र सी प्रसन्नता की उथल-पुथल मची हुई थी और दोनों घरों में इरफान, तारा और नजमा सब को आश्चर्य था कि जमाल ने आखिर, ऐसा कौन सा जादू फूँक दिया। इसलिये नजमा ने स्वयं ही कहा—

"जमाल भाई के जादूगर होने में मुझे न तो पहले ही शक था और न ही अब है। चतुरता से बातें कर, परिस्थिति समझा कर सब को मोह लिया। आखिर, बैरिस्टर जो ठहरे! अपना मुकद्दमा जीत ही गये।"

इरफान ने कहा—"मगर मुझे जमाल से एक बात की उम्मीद बिल्कुल न थी। वह यह कि मैंने उस दिन इन्हें बड़े अब्बा के साथ नमाज़ पढ़ते देखा है।"

नजमा ने विस्मय से आँखे फाड़ कर कहा—"हैं.....नमाज पढ़ते!"

इरफान ने कहा—"मुझे खुद अपनी निगाहों पर विश्वास न था। जमाल से जो मैंने पूछा तो वह कहने लगे—इस दुनिया में रहना आसान नहीं है, सब कुछ करना पड़ता है।"

नजमा ने नैराश्यपूर्ण स्वर में कहा—"अफ़सोस, एक सच्चे बहादुर को हमारे रस्मो-रिवाज और ग़लत किस्म के नियमों ने कायर बना दिया ! जमाल इतने गिर जायेंगे ; ऐसा मैंने भूल कर भी न सोचा था।"

तारा ने कहा—"मुझे तो उन में बहुत से परिवर्तन नज़र आ रहे हैं। शादी करने के बाद कुछ बदल से गये हैं। मियाँ बीवी में भी कोई खास लगाव तो मुझे नहीं नज़र आता।"

नजमा कहने लगी—"लगाव तो ख़ैर, धीरे-धीरे पैदा हो जायेगा। मगर नमाज़ पर तो मुझे ऐसा ताज्जुब है कि मैं क्या कहूँ।"

इरफ़ान ने कहा—"इसी दुनियादारी का तो यह नतीजा है कि पहले तो यह दोनों बुजुर्ग इतने भड़के हुये थे और अब इस शादी के सिलसिले में शादी की दावत वग़ैरह का इन्तज़ाम हो रहा है।"

नजमा ने कहा—"खैर, यह तो खुशी की बात है कि इस शादी को सरकारी तौर पर स्वीकार करने के प्रबन्ध हो रहे हैं। हम लोगों को चाहिये कि चल कर जमाल भाई को बधाई दे आयें।"

इरफ़ान और तारा ने उसके प्रस्ताव का अनुमोदन किया, और यह पूरा काफिला मैबुल के यहाँ जा पहुँचा। नजमा ने कमरे में प्रवेश करते ही एक विचित्र दृश्य देखा कि जमाल के सिर पर रूमाल बँधा हुआ था और वह नमाज़ पढ़ रहा था। मैबुल वहाँ उपस्थित नहीं थी। नजमा को किसी तरह विश्वास नहीं होता था कि वह जो कुछ देख रही है, सच भी है और यह स्वप्न नहीं वरन् वास्तविकता है।

तारा, इरफ़ान ने भी आश्चर्य से इस दृश्य को देखा और सब ड्राइंग रूम में चले गये। वहाँ मैबुल नमाज़ पढ़ने के बाद सलाम फेर रही थी कि इन लोगों को देख कर एक हल्की सी चीख के साथ उछल पड़ी। नजमा को जमाल की नमाज़ से ज़्यादा मैबुल को इस रंग में देख कर आश्चर्य हुआ। किन्तु इससे पूर्व कि इन लोगों में से कोई कुछ कहे या मैबुल किसी से कुछ कहे ; जमाल का स्वर दूसरे कमरे से आया—"जुबैदा !"

मैबुल ने कहा—"जी।"

जमाल ने उस ओर आते हुये कहा—"इन लोगों से कह दो कि मेरी नमाज़ पर हैरान न हों। मैं मुसलमान हूँ और एक मुसलमान लड़की के साथ शादी की ख़बर पहले ही दे चुका हूँ।"

नजमा ने दौड़ कर मैबुल को गले से लगा लिया। तारा और इरफान की आँखें भी खिल उठीं।

इरफान ने कहा—"काफ़िर से काफ़िर मिल कर इस्लाम बनता है; यह नया फारमूला आज मिल गया। मगर यह जुबैदा के क्या माने ?"

मैबुल ने कहा—"जुबैदा के माने यह कि आप लोगों में से अब किसी ने मुझे मैबुल कहा, तो मैं हतक-इज्ज़त (मान-हानि)— का दावा कर दूँगी, क्यों कि यह मेरा इस्लामी नाम है।"

नजमा ने फिर उससे चिपटते हुये कहा—"मेरी जुबैदा ! मेरी भाभी जुबैदा !"

मैबुल ने जमाल की तरफ घूर कर देखा, जमाल ने आँख के इशारे से 'भाभी' के खेल को जारी रखने कहा। इसलिये वह चुप रह गयी। जमाल ने उठकर आलमारी से 'जुस्तजू' की पाण्डुलिपि नजमा के अंक में डालते हुये कहा—"इस किताब से इस काया-पलट का हाल मालूम होगा।"

इरफान कहने लगा—"गोया इसे आप की शादी का तोहफ़ा समझा जाय !"

तारा ने कहा—"जुस्तजू" यही हुआ न इस नाम का अनुवाद ?"

जमाल ने कहा—"बिल्कुल ठीक है। बल्कि इसके उर्दू एडीशन का नाम जुस्तजू ही होगा।"

नजमा, जो एक पृष्ठ इतनी देर में पलट कर किताब का विषय समझ चुकी थी ; कहने लगी—"इस का नाम होना चाहिये था बकवास !"

जमाल ने कहा—' 'बकवास न करो। मेरे जज़्बात को ठेस पहुँचती है।"

इरफ़ान ने कहा—"अच्छा, डेडिकेशन (समर्पण) पर ध्यान दीजिये! नजमा के नाम है!"

नजमा ने कहा—"शुक्रिया।"

तारा ने पुस्तक बंद करते हुए कहा—"खैर, किताब तो फ़ुरसत से पढ़ी जायेगी। मगर मैं मुबारकबाद की पहल करती हूँ कि भाभी जान के इस्लाम मज़हब को अपनाने का नतीज़ा यह हुआ है कि अब्बाजान और बड़े अब्बा दोनों इस शादी को सरकारी तौर पर तस्लीम करने के लिए दावत देने का इन्तज़ाम कर रहे हैं।"

जमाल, मैवुल और सब हँस रहे थे। हाँ, नजमा अवश्य कुछ खोयी हुयी सी थी। दृष्टि एक ओर टिका कर जैसे कोई मूछित हो जाता है।

यही दशा नजमा की थी। यहाँ तक कि उसकी गुमशुदगी को सबने एक साथ देखा और सबने अट्टहास किया तो वह भी चौंक पड़ी और कुछ झेंप कर हँसने लगी।

आपा ने इसी समय आकर सूचना दी की चाय तैयार है। अतएव सब उस ओर चल पड़े,अलबत्ता नजमा को उठने में देर हुई और जमाल भी जान बूझ कर ठिठक गया। क्यों कि उसे नजमा के इस तरह देर करने में कोई इरादा सा मालूम हो रहा था।

नजमा ने इधर-उधर देखकर कहा—"जमाल भाई! सिर्फ एक बात कहनी है। मगर खुदा के लिए जवाब न दीजियेगा।"

जमाल ने कहा—"कहो न!"

नजमा ने कहा—"बात नहीं बल्कि एक मिसरा सुनाना है—

"हाय इस ज़ौदे पशेमाँ का पशेमाँ होना"

जमाल ने अब धैर्य छोड़ कर नजमा का हाथ पकड़ लिया। वह हाथ छुड़ा भी न पायी थी कि जमाल ने उसे आलिंगन-बद्ध करते

हुये कहा—"ज़ौदे पशेमाँ मैं नहीं बल्कि दैरे आशना तुम हो। मगर तुम्हारा जमाल अब तक तुम्हारा है।"

नजमा ने अपनी ऊपर-नीचे होने वाली स्वासों से घबराकर कहा—"मुझको आप से इस ज़लील हरकत की कभी उम्मीद न थी ! आप अब सिर्फ मैबुल के हैं और मैं आपकी सिर्फ बहन हूँ।"

जमाल ने हँसते हुए कहा—"मैबुल सिर्फ मेरी बहन है और तुम मेरी सब कुछ !"

इरफान ने कमरे में आते हुए यह वाक्य सुन लिया। नजमा ने स्वयं को जमाल से मुक्त कर दिया, किन्तु मैबुल ने स्थिति को ताड़ कर एक गगनभेदी अट्टहास किया। तारा भी दौड़ आई और आखिर कहकहों की गूँज में वह आनन्ददायक वृत्तान्त इस प्रकार सुनाया गया कि सब हर्ष से झूम उठे। इरफान तो सोफे पर से कलाबाज़ी खाता हुआ सचमुच ही नजमा पर जा गिरा और उसका हाथ पकड़ कर जमाल के हाथ में देते हुये उसने कहा—

"आओ ! बाकी हम सब नाचें।" यह कह कह वाक़ई लगा तालियाँ बजा कर गाने—सड़कें छिड़का क्यों न रखें बन्ना मेरा आयेगा।"

सब हँसी से लोट-पोट हुये जा रहे थ। विशेषकर उस समय सब हँसते-हँसते गिर पड़े जब मैबुल की नौकरानी ने आकर अचानक इरफान को नाचते देखा और फिर झट से बाहर लौट गई। वह बेचारी यह समाचार देने आयी थी कि रज़िया बीबी के यहाँ से आदमी आया है।

मैबुल ने जाकर पूछताछ की तो मालूम हुआ कि इरफान और जमाल को बुलाया गया है। चिट्ठी रज़िया के वालिद की तरफ से थी। उस पर केवल इतना ही लिखा था—

प्रिय इरफान और जमाल,

आदाब अर्ज़ ।

आप के एक मामूली से दोस्त शरफ़ को मैं रोके हुए हूँ और उस वक्त तक पुलिस के सुपुर्द नहीं करता जब तक आप लोग न आ जायें ; अगर इस बदमाश की जमानत देने वाले आप लोग हों तो मैं अब भी इसे छोड़ने का तैयार हूँ, वर्ना यह है तो इस काबिल की जेल में सड़वाया जाय ।

फ़ज़ल अलरहमान ।"

इरफान और जमाल तत्क्षण ही मोटर पर उस ओर रवाना हो गय और दूसरे दिन जब जमाल और नजमा का विवाह था ; शरफ़ भी महफ़िल में नज़र आये । इनसे ज्ञात हुआ कि वह जेल से बच गए हैं। रज़िया ने हँस-हँस कर सब को घटना सुनाई कि बेचारे इश्क से मज़बूर हो बाग़ की दीवार फांद कर घर में आगये थे। और उसके निहायत डरावने कुत्ते ने उनकी खूब खबर ली । यहाँ तक कि वालिद ने शरफ़ को पकड़ लिया और फिर जमाल भाई और इरफान भाई के कहने से छोड़ा ।

नजमा भी आज वास्तविक हँसी के साथ दुल्हन बनी हुयी यह घटना सुन रही थी और मौलवी अब्दुल समद साहब की कोठी के बड़े द्वार पर इरफान ने जबरदस्ती जो शहनाई रखवा दी थी, उसके स्वर वातावरण में गूँज रहे थे ।